

एक इन्सान की मौत
एक इन्सान का जन्म



शुक्ल प्रकाशन

संस्करण प्रथम १९६१

प्रकाशक : लखनऊ प्रकाशन छाले की होली बीकानेर ।

मुद्रक हरि हर प्रेस, बाबड़ी बाजार, दिल्ली ।

मूल्य १ रुपये ।

EK INSAN KI MAUT EK INSAN KA JANM (Stories)

Rs. 5.00 np

CHANDRA™

घासकल' के कुतपूर्व व 'सारिका'
के वर्तमान सम्पादक श्री बन्टमुत्त
विद्यालकार श्री श्री साहू

हमारे अग्र्य प्रकाशित

चन्द्र जी के उपन्यास

(१) चाकिनी

(२) एक कमरे की कहानी

प्रकाशकीय

नवरत्न प्रकाशन का धायार एक दिन अचानक ही राजस्थान के मण्डवी साहित्यकार श्री यादवेंद्र सार्ना 'चन्द्र' के रूप में बन गया। श्री चन्द्र ने हिन्दी में अनेक साहित्य का सुजन करके राजस्थान का नाम बढ़ाया है और उनकी ठेकपु, बुकशोपी मराठी, सिन्धी तथा उर्दू में अनुबाहित प्रकाशित कृतियों ने राजस्थान का मस्तक बौरवान्धित किया है।

हमारी ओर से उनकी अधिका से अधिका पुस्तकें प्रकाशित करने की योजना रहेगी और अन्य प्रकाशकों से भी उनकी पुस्तकें भी धाय यहाँ से सहजता से प्राप्त कर सकेंगे।

इस प्रकाशन के अन्तर पर हम चन्द्र जी के बीकानेरवासी धारणीयजनों एवं अिबहार मामी (दिल्ली) अंति (बीकानेर) के भी धायारी हैं। अंति जी ने धायारों के मूलाधार रहे और मामी जी ने अनेक अिनिधिप टिपेड देकर रंग अरे।

एक बार मैं अपने अिनिधित रूप से उन उमान राजस्थान वासी तथा प्रवासी लोगों को अन्वधा देती हूँ जिन्होंने चन्द्र जी की पुस्तकें अधिका लीकर मुझे अन्व दिया।

धातिदेवी 'अन्वधा'
अन्वधिधा

अनुक्रम

१ कथा परिकथा	६
२ पत्थर में पानी	२०
३ मैं मर गई हूँ	३०
४ आँख का बिजोड़	४२
५ एक सीमा	६२
६ लमसोहिनी	६४
७ बिजों पर पनरामी दृष्टि	७०
८ एक भीमार धीर बी दृटे रिम	८२
९. दृटे हुए इम्तान	८६
१ एक इम्तान की मीत एक इम्तान का बरम	१०६
११ बोमली	१२३
१२ मित प्रभु धीर उनका फोड़ा	१३३
१३ मैं हूँ हाडस	१४७
१४ तस्बीर का हूँसल पहलू	१६७
१५. एक मुस्कान एक बिम्बनी	१७२
१६ कोई सम्बन्ध नहीं	१७६

मैं इतना ही कहूँगा

प्रस्तुत कहानी मजह मरा बीबा कहानी सघह है। इसमें मेरी सभी बिचारों की सिली कहानियाँ सघहीत हैं। मैं नयी-मुठनी कहानी की बिबेचना में न उतम कर मह कहना पार्हूँवा कि मैं सेचन का उद्दय केबल कोरा मनोबिरोपण एवं शरण की अनुभूति को नहीं मानता। सेचन की सार्पकता सभी सिठ होती है जब मह बिछी उद्दय बिरोप से सिधा पाय।

इसके प्रकाशन कर मैं मकरल प्रकाशन के सहयोगियो का धर्यन्त धामापी हूँ जिन्होंने मेरे बिचारों को मूल दिया। धापकी सम्मति की प्रतीक्षा रहेगी।

साने की होमी }
बीकानेर }

यादवेन्द्र धर्या बर

अनुक्रम

१ कथा बरि कथा	९
२ पत्थर में पत्नी	२०
३ मैं मर गई हूँ	३०
४ भाँखन का बिजोह	४२
५ एक सीमा	५२
६ उनसोहिनी	६४
७ बिर्से पर पनरायी इष्टि	८०
८ एक मीनार धीर को टूटे दिन	९१
९ टूटे हुए इम्तान	९९
१० एक इम्तान की मौत एक इम्तान का बगम १०९	
११ गोमती	१२३
१२ मित प्रभु धीर जनका छोड़ा	१३३
१३ मैं हूँ हाजत	१४०
१४ तस्वीर का बूझरा पहलू	१५०
१५ एक मुस्कान एक जिन्दगी	१७२
१६ कोई सम्बन्ध नहीं	१७९

मैं इतना ही कहूंगा

प्रस्तुत कहानी मंजूर करा बीना कहानी सपह है। इसमें मेरी सभी विचारों की लिखी कहानियाँ संग्रहीत हैं। मैं नयी-पुरानी कहानों की विशेषता में न उलझ कर यह कहना चाहूँगा कि मैं लेखन का उद्देश्य केवल बोरा मनोरंजन ही नहीं है। मैं अपने मन की प्रकृति को नहीं मानता। मेरा लेखन ही सार्वजनिक ही सिद्ध होती है जब यह किसी उद्देश्य विषय से लिखा जाय।

इसके प्रकाशन पर मैं अत्यन्त प्रकाशन के सहयोगियों का आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने मेरे विचारों को मूठ दिया। आपकी सम्मति की प्रतीक्षा रहेगी।

माने की होमी }
बीकानेर }

मानवेंद्र शर्मा 'बन्धु'

घर तुम्हारा स्तर नहीं है जो
 जीवन का है घर तुम्हारी कल्पना
 ऐसे मनुष्यों की रचना नहीं कर सकती
 जो जीवन में मौजूद न रहते हुए
 भी उसे सुधारने के लिए धाबधपक
 है वह तुम्हारा कृतित्व किंचित् मर्ज
 की बसा है और तुम्हारे बंधे की बसा
 शर्मकथा है ?

—बोकी

(एक पाठक से)

कथा-परिकथा

● क्या उन्हें सम्बोधन ? एक धनपिबिता को सम्बोधन भी बच्ची से नहीं किया जा सकता है लेकिन तीन पत्नों को धेरा कर मैं दुःख-मुय ऐसा लगाने लगा हूँ कि तुम मुझ और मेरी हारकतों में नापसन्द नहीं हो। तुम्हें मेरी बातों का सम्बोधन है।

मग जब से तुम इस महान में आई हो मैं निरन्तर इस बिटकी की तरह तुम्हारे भीमे मौख्य के मापुय को दृष्टि द्वारा समाखारण करता रहा हूँ और मुझे लगता है कि बच्चों की प्रतीला के बा- में त्रिय "ओगस" की खोज करता रहा हूँ वह स्वत ही मेरे पास आ गई है। इस सम्पना-मात्र से कि तुम मेरे पास हो मेरे प्रत्यक्ष की समस्त ध्वनि- ध्वने समस्वर में आ उठती है—तुम्हीं मेरी बचिता को लगीव प्ररणा हो मेरी बाधप्य और बच की पायेज हो।" तुम्हें एक बार फिर धार दिया रहा हूँ कि मैंने तुम्हें तीन पत्र दिए हैं। तुमने वे तीनों पत्र पाकर किसी तरह की ध्वने और मेरे पर बानों से पिना मउ नहीं की किनी तरह का विपौष-सहरोष भी नहीं किया तब मैंने समझा कि तुम भी मुझे उतका ही चाहती हो त्रियका मैं तुम्हें जानता हूँ बच्चों कि तुम्हारा मीन ही मेरे प्यार की स्वीकृति है।

तुम्हारा नाम क्या है मैं नहीं जानती। किन्तु मेरा ऐसा निरास दे, मेरी कल्पना का कहना है कि तुम्हारे माता-पिता के तुम्हारा नाम 'तुम्हारे' से कम क्या रखा होगा ? तुम्हें पाकर हर बुद्धिमान को क्या समझेगा ? तुम तुम्हें अपनी धीर से स्वीकृत निज हो। मैं सजाव धीर संसार से टकराकर भी तुम्हें प्राप्त करूँगा।

एक बात धीर बुझना चाहता हूँ—तुम तुम्हें क्या सामोरा धीर बुझी बुझी नजर से क्यों देखती हो ? तुम्हारे रथीले धरती पर सूखी बुझान क्यों रहती है ? कभी-कभी मैं इन सब बातों को लेकर बड़ा परे घाम हो जाता हूँ। तुम्हारे पाम घाने तक की सोच मेरा हूँ लेकिन धरतीपरिचित बबोली समझकर मेरा साहस टूट जाता है। फिर तुम लोप नसे हो। किसी से बोलते तक भी नहीं हो। तुम्हारे बरबालों का मीन मुझमें भव पैदा कर रहा है। लेकिन इस पत्र का उत्तर नहीं घामा तो याद रहता मैं बहर खाकर धारम-नरपा कर लूँगा। मोच लूँगा कि मैं किसी के लामक नहीं हूँ। मैं बजाबा हूँ। मैं तुम्हारे पत्र का पूरे चौबीस घंटे इन्तजार करूँगा। इस पर भी उत्तर नहीं घामा धीर तुमने कोई बड़बड़ी की तो मेरी लाम तुम्हारी इन लिङ्गों के तीर्थ मिलेगी। मेरी नीत का सारा पत्र धारी जिम्मेदारी तुम्हारी होगी। बस

तुम्हारे पत्र का व्याघ्र

—नरोत्तम उर्फ 'कवि कमल'

कवि कमल को इस उतावना व बमकी से बरे पत्र के उत्तर की घाधा नहीं थी। वह सुबह-सुबह ही घाने बरामदे में एक काफी धीर पैसिल सेकर बैठ गया। कभी धाराध की धोर देखता कभी बमीन की धोर धीर कभी बरामदे की निर्बीध दीवारों की धोर। कभी-कभी कुछ निजने का उपकरण भी करता मानो अपनी प्रेमती की प्रतीका में वह कोई प्रतीया नीत निज रहा हो।

जैसे ही बाघ बजे बैठे ही उमकी मई पड़ोसिन लसके सम्मुख ब्याध धाकर बैठ गई। धाम जतने उबकी धोर देखा भी नहीं। कवि महाराज

का दिल बक से रह गया। उसने सोचा कि आज इसने अचानक उसके बर्तों को धपने बाप को बता दिया है। इस विचारमात्र से उसके तनाट बर पसीना छूट गया। यह उद्विग्न हो गया। उसने झट से नीचे धांपन में जाकर देखा—उसका बाप बहियों में उलझा हुआ था। वह चुपचाप धाकर बैठ गया। उसने सोचा कि अगर वह उसके पिता को यह भी देपी तो उसका क्या परिणत होया? वह धपने पिता को साफ-साफ कह देना कि वह उससे विवाह करेगा ही उसमें बिना नहीं रह सकता अगर उसकी धारी नहीं हुई तो वह सबकुछ धारम हस्या कर लेगा। उसके बेहरे पर फिन्मी प्रेमी की तरह कुमिम हड़ता धाई धीर वह धकड़कर पुनाब को देखने गया। वह अत्यन्त भावनेध धीर उत्तेजना में था।

उसी एक कायब गोलाकार में धाकर उसके बरामद में पड़ा। उस के लपक कर उसे उठाया। मन की धाएँ लिस गईं। धरीर में जान पा गई। उसने पड़ा—

कमलबी,

मैं धारका नाम जानती हूँ। कैसे जानती हूँ यह नहीं बता पाऊँगी! मैं धारकी धमकी से डर गई हूँ मुझ लया टि धाप सच मुच धारम-हस्या कर लेंगे धीर धापकी साम मेरी लिङ्की के नीचे पड़ी विनेयी इस दुष्टजना मात्र ने मेरा झुन बरफ की तरह धमने सया धीर मैंने धारक पत्रों का उत्तर देना निश्चय किया।

मेरा यह पत्र धापकी मेरे धारे में सही जानकारी देगा धीर मैं मन लनी हूँ कि धार उमरु धार धारना इतना बढल लिये। मैं बहुत धमानी हूँ इनलिध मेरे बाप ने मेरा नाम बिता रखा है। बचपन म मे धानी मां को ला गई ऐसा लभी कहल हूँ। मेरी बानुनी लीपी वा बरुना है कि मेरे बरलु जही भी पड़ने है वही धनिट धकय होना है वही धापका वह परिधात मुन्यध की जगह धमारी की धलन न लेंना है यह दिधारणीय धन है। धन्यु।

ध धापकी धुरा बात बताना चाहती हूँ। पहली बात यह कि ह्वाते

कहते म मेरे लिए खचित बर नहीं मिले। तब मेरे पिताजी मुझे यहाँ ले आए। यहाँ मेरे साथ कोई न कोई मरदा मिल ही जाएगा ? यहाँ का एक पड़ोसी दूसरे पड़ोसी से एकदम अपरिचित है। उन्हें किसी भी कोई चिन्ता नहीं। भाव की ही बात है—दुबह-दुबह घर की सामग्री के बाह्र हजेरी की नीचरानी दमो घाई थी। दमो को उसके बाप ने बड़ी निर्ययता से पीटा था। उसके संभ-धन पर लकड़ियों के साथ बमक रखे थे। लेकिन हम लोगों को इस घटना का बरा भी पता नहीं लगा। ये बत्तके शायो को देखकर काँप उठी। मेरा मन कम्पना से भर गया। लेकिन पड़ोसियों की यह बहरी स्पष्टता मेरे लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होना क्योंकि मुझे अपनी सजायी मरदा को समी यहाँ पर बर मिल सकेगा और मेरे बाप के लिए भी चिन्ता ज़रम हो जाएगी। पर आपके पत्रों में एक नई समस्या की पैदा कर दिया है। मेरे आपके पहले पत्रों को एक कवि का प्रभाव ही समझा पर आपके पत्रों की बमकी मे मुझे विचलित कर दिया और मुझे आपके पत्रोत्तर देने के लिए बाध्य होना पड़ा। क्योंकि ऐसी बस्ती से बचने वाली घटनाएँ या तो हिस्सों में ही होती हैं या सस्ते उपभोगों में ही पर आपके देखकर मुझे कुछ मई अनुभूति हुई है कि ऐसी घटनाओं में सत्य खोज होता है। सब पत्र में आपके या बाऊँ तो मैं अपने आपको बन्ध समझूँगी। मैं जल से बहुत खुश हूँ। मुझे भी आपके पत्र हैं। दोनों को पसंद का परिणाम बना होना यह हमें पहले ही जान लेना चाहिये क्योंकि समाज बड़ा निरव्य होता है। नमाज हमारी ओर आँसु उठाए, उदनी दिखाये इसके पहले ही आपके साहस करके अपने पिताजी से हमारे विवाह के बारे में बात कीत तककी कर लेनी चाहिये। मैं आपको एक बात और कहती हूँ कि मेरा बाप इस रिस्ते के लिए कभी ना नहीं करेगा।

सब में आपको अपने बारे में कुछ कहना चाहती हूँ। ये ठीक बुद्धि की एक साधारण बड़ी मिथी लड़की हूँ। संदेशों में मैं केवल ही एक घाई एन टी ए” ही लिखना जानती हूँ। हाँ पर के प्रत्येक काम में आप

मुझे बी० ए० और एम० ए० तक की उपाधियाँ बिना किसी शिक्षिका
 हट से दे सकते हैं। मुझमें एक और विशेषता है वह धारको धाम
 लड़कियों में नहीं मिलती वह है पर का धाम के अनुसार ब्रह्म बनाना।
 उन ब्रह्म में धर्म ब्रह्म योजना भी शामिल है। धाम कवि हैं और मैंने
 मुना है कि कवियों को ब्रह्म-ब्रह्म करने की बहुत धारत होती है। वे
 बात-बात में धारनी धारतना उक्तियों कहते रहते हैं जो मुझे कतई पसंद
 नहीं हैं। मुझे बंधीर धारनी धारतें लपते हैं ब्रह्माटी और बागुनी नहीं।
 में बोलना चाहती ही नहीं। क्या धाम ऐसी गुण लड़की को धारने सपनों
 की धारनी बनाएँ ?

किसिये सब मुझे बीपहर तक मिल ही जाना चाहिये।

X

X

बिठा—

कलम ने उसी समय वन का बरतार मिल दिया।

X

मेरी प्यारी बिठा।

मुग्धाप वन पाकर मेरे वन मंदिर के मुझे हुए सहस्र दीप वन
 हटे। मुझे ऐसा लगा कि मेरा मन उन प्रसन्न लहरों पर पठनेमियाँ कर
 रहा है—बो झूल से प्रणय-स्पर्श करने के लिए धारुत रहनी है। म
 धारत-हृत्पा का बिहार भी धर धरने धन में नहीं भाईना। कौन ऐसा
 धारतनीर हस्तान होया जो मुग्धाप प्रणय पाकर धरना चाहिये ? बिठा
 मैंने मुग्धाप नाम धरनी से मुलाक रक्त दिया है धर धरनी झून मुपार
 करता है। तुम तो बहार हो बीराने की बहार क्योंकि तुमने मेरे बीरम
 जीवन में बहार ला दी है। मेरे धरतानों में उस धाम को जग्य के दिया
 है धिन धाम से दिस के झून मिलने है।

जो धारने धाम में धार ही धरने बिबाह के धारे में नहीं। उन्हें
 धरत बहना जानना ही पड़ेगा। मुझे नहीं मान्य कि मैं धरने धाम का
 धरतनीका धरत है और मेरी माँ का भी देहात हो चुका है ऐसी स्थिति
 में वे मेरी बात धरत नहीं लहते।

जैसे वही मिन्नी लड़की की बकरत ही नहीं है । प्रायः मेरे जैसे हृदय के युवक के लिए बहुत पढ़ी मिन्नी लड़की एक समस्या थीर मिर हरे बन कर रह जाती है क्योंकि प्रायः ही मिश्रित लड़कियों में ज्यादा थीर जिन की प्रगल्भ तर्क थीर विचार की शक्ति घटित होती है । तथा के जमियों के कामों में आदिमा निकाल कर बहु बताना चाहती है कि इस विद्याल है इस प्राय से द्वार नहीं का तकती बनेरह बपरह । यह होक अधिम्य में विपान्त बातावरण की सर्बता करती है थीर फिर तत्प्राय तक की नीवत घाती है । मैं तो इसे सिद्धांश रूप स्वीकार करता हूँ कि कम पढ़ी मिन्नी पत्नी पति के लिए बरदान सिद्ध होती है ।

थीर तुम्हारा निरन्तर मोन मेरे लिए महान बरदान ही समझो । तुम्हें यह बहते हुए मुझे संकोच हो रहा है (संकोच का कारण अपने यह धपमी तारीक) कि मैं एक विधिष्ट पीतवार हूँ हिन्दी में मेरा नामजों में हीरे खान रहता है । मैं बीतों की वेदता थीर मौसिबता पर विशेष ध्यान देता हूँ । थीर यह सब तमी संभव है जब मैं घंटों ही चित्तम-मनन के सावर में घोंटे लगाता रहूँ । तुम सावर नहीं जानती इस वाली परमरिधा में बड़े-बड़े आनोचको द्वारा प्रसंसा पत्र वा आना भी एक सत-तमी बेज घटना के बराबर की बात है । पर मेरी बहार, यह सब मेरी साबना मेरे चित्तम मनन के कारण ही है थीर चित्तम मनन बिना एकांत एकाग्रता के संभव नहीं । तथा एक बहस्थ के लिए यह तमी संभव हो तकते हैं जब उसकी पत्नी बातूनी न हो । जब मेरी बहार, तुम मेरे मनो-कूल निकलती का रही हो । पपर सारी दुनिया ही हमारा विरोध करेगी तो भी मैं तुम्हीं प्राप्त करूँगा ।

X

X

X

कवित्री

प्रायका जब मिला । प्रायने जित आत्मीयता थीर हृदय का परिचय दिया है उतते मुझे बन थीर सम्बन्ध दोनों मिल रहे हैं । मुझे पहले ऐसा महयुत होता वा कि मुझे कभी भी अपने लिए एक पच्छ

पति नहीं मिलेगा और मेरे बाप की यह चिंता तब तक उसके सिर पर
 तब तक रहेगी और एक दिन बिचल होकर वह इस घमांगी को किसी
 बूढ़े काले कसूटे और बीन-हीन के गले बाँध कर मुझ की साँस लेगा
 और मैं एक जानवर में प्रणत जीवन नहीं बिता पाऊँगी। पर जब मेरे
 मन के विरचान बहल रहे हैं। मैं घमांगी से मुगामी बन जाऊँगी। मझे
 एक घण्टा भर मुम्बर पति मिल जाणगा।

जब मैं घायम एक घामिरी सवाल पूछना चाहती हूँ। क्या
 घाय घारीरक सौन्दर्य को घामिक चाहते हैं या घारमा की? माग लीखिए
 कम मुझे घायमक केबर निकल घामे और मैं बरमूरत हो जाऊँ। मेघ
 यह पोरा रंग मुहीन-रपोस गहरे बायों से भर जायें या मुझे कोई ऐसी
 बीमारी मग जाव जिससे मेरा उपनता हृषा घौवन बायों में इण्ड और
 कुटिया की तरह घाँव व निर्वीज हो जाय तो भी क्या घाय मुझे इतना
 ही उत्तेजनापूर्ण प्यार करते? मुझे इन सवाल का जबाब पुरम
 दीखिए।

× × ×
 प्रिय बहारा × —चिठा—

मुम्हारा सवाल काटी विचारपूर्ण है। घारमी के प्रेम
 के घमली नकली रूप को प्रमट करने वाला है। घारमिक और कायिक
 प्रेम में मैं तो घारमिक प्यार को ही सर्वोपरि मानता हूँ। इन प्रेम में
 स्थाविर और स्थाय की भावना रहती है। कामना न परे इन प्यार में
 हीनक घिसल की प्रेरणा का काम रहना है। प्राणी का प्यार इस वकिन
 जब पर घयमर होकर घयमरत के साब-जाब प्रमी प्रविका को औधिक
 घायमाघों से ऊपर उअरकर उनमें देवत्व भरता है। जहाँ इन भावना ने
 प्रणि प्यार प्रगाढ होता है, वहाँ रूप-सौन्दर्य का महत्व शुन्य के बराबर
 हो जाता है। मैं मुम्हें चाहना हूँ तो हूँ ही पर इनमें भी घामिक काटूँका
 मुम्हारी चारमा को। जब मेरी घामिक बरीघा न लो। मैं जब वह नाम

बुका है—प्यार किया नहीं जाता हो जाता है । कम धर में धार्मिक धर तक इस मत्ती का कठता नहीं यह सपना तुम बोलती क्यों नहीं एक बार तो बुकाये—मेरे कमल—

तुम्हारे सपनों का राजा
कमल कवि

कमलजी

कमलजी पत्र बिना पत्र ही दिन के बार के रही हैं । यह रिश्ता ही इसके पहले में आपको एक कटु सत्य से परिचित कराना चाहती हूँ । आप जैसे प्रतिष्ठित मीठकार चित्त-मननकारी धार्मिक-सीमर्य प्रेमी को मुझ जैसी मामूली लड़की ज्ञान-दान के यह योग्य तो नहीं होता पर आप के ज्ञानों की मामूलीयत पर मुझे खूब धा रहा है । मैं चाहती हूँ कि हमारा यह धार्मिक प्यार सच्चाई से धीरे मुसर हो तथा उसे धीरे धीरे की धर लये । बलवस्थामी धन-कपट धीरे किसी खूब का खूबा प्यार के धर को कम कर देता है धीरे सेव जीवन में बहर धीरे धूरा भर देता है । मैं आप से ऐसी धारा रखती हूँ कि यह कटु सत्य आपके खूब प्यार में कमी नहीं जाने देना धीरे नहीं आप अपने धार्मिकों से हटके ।

मुझे धर पूरा विश्वास हो गया है कि मैं धीरे आप विवाह के गठ-बंधन में बंध ही जाऊँगे । इस मधुर कल्पना में मैं डूबी जा रही हूँ । धार्मिक के गुणधर सुख सपने मेरे कमल जैसे हैं । मधु से धार्मिक करती हूँ कि मेरे के सपने धार्मिक हो । हाँ मैं आपको एक बंधीर खूब से परिचित कराने की बात कह रही थी क्योंकि इस खूब के उद्घाटन में सहयोग के रहे हैं आपके सुखधर धार्मिक विचार धीरे आपके इस निरख ।

यह धर है कि मेरा मीठ आपके चित्त मन में देना धीरे सहयोग देना कि आपको कवितामें एक दिन विश्व-धारी स्वाधि धरित कर

×

×

कवि कमल अपने कमरे में गया। पत्र बढने लगा। उसमें एक कदम पत्रिका भी थी। उसमें पहले नीचे का पता पड़ा। सामने बायीं बिठा ही कदम पत्रिका थी। जिसका नाम—दर्शन शास्त्र के प्रचारक विज्ञान प्रोफेसर दयाशंकर जी गुप्तजी कमारी गरिता बी० ए० का विचार स्वामीय प्रोफेसर मधुनाथ क गुप्त भी विरचनाय से दिनांक २-५-२२ को सम्पन्न होने जा रहा है। घायल प्रार्थना है कि घायल पुत्र नाम से सपरिवार पचार कर कृतार्थ करें—

कमल को बचकर या गया। कुछ देर तक वह चुप की तरह बैठा रहा। अन्त में वह उठा और अपने पिता के पास गया। पिता से उसने पूछा "बया वह लड़की क्यों धीर बहरी थी?"

"कौन सी?"

"जिनका सामने बाये घर में विवाह हुआ था?"

"पता नहीं। मैंने उसे बोसते कभी नहीं देखा और कुछ से लोग किसी से बातचीत भी नहीं करते थे। पिता ने उस पर मरें बना कर कहा "पर तुम यह सब क्यों पूछ रहे हो?"

"यूँ ही।"

बड़ी बिचट स्थिति भी कवि कमल की। विरचनाय उतका निकट तप का तो नहीं बोसत धरमय था। वह साहस करके उसके यहाँ गया।

"बया उसे बोला दिया गया है उसने मन में सोचा। उसने बाहर में धाबाज मवाई। विरचनाय घाया। पूछा तुम घायल कैसे घाये?"

"बचाई देते। मैं किसी कवि सम्मेलन में घायल सेठे के लिये बाहर गया गया था।"

"घायल घायल तुम्हारी अपनी भाभी से मिलाने।"

कवि के पाँच बच्चे से बिचक बने। कमल लहजता-लहजता ला ऊपर गया। कमरे में बैठा गया। उसकी परलुप्ता बढ़ती गई।

"मैं अभी तुम्हारी भाभी को बुला कर जाता हूँ।" वह बाहर गया

×

×

कवि कमल अपने कमरे में गया। पत्र पहले मया। उसमें एक अंशम पत्रिका भी थी। उसने पहले नीचे का पता पढ़ा। सामने वाली पत्रिका की ही अंशम पत्रिका थी। लिखा था—दर्शन शास्त्र के प्रकाश विज्ञान प्रोफेसर स्वामीजी की सुपुत्री ज्योती मरिता श्री० ए० का विवाह स्वामीय प्रोफेसर यशुनाथ के सुपुत्र श्री विरजनाथ से दिनांक १-१-१९ को सम्पन्न होने जा रहा है। धायसे प्रार्थना है कि धाय इत सुम काम में सपरिवार पचार कर कृतार्थ करें—

कमल को बचकर था मया। कुछ देर तक वह बुल की तरह बैठा रहा। अंत में वह उठा और अपने पिता के पास गया। पिता ने उसने पूछा “मया वह लक्ष्मी मगी थीर बहुरी थी ?”

“कोन थी ?”

“जितका मामने बाने पर म विवाह हुमा था ?”

“मया नहीं। मैंने उसे बोलते कर्मी नहीं देखा थीर कुछ दे लोन किसी से बातचीत भी नहीं करते थे। पिता ने उस वर बहरें जमा कर कता “पर तुम यह सब क्यों पूछ रहे हो ?”

“बूँ ही।”

बड़ी विचित्र स्थिति थी कवि कमल की। विरजनाथ उसका निवृत्त रूप का तो नहीं दोस्त अवश्य था। वह ताइस करके उसके नहीं मया।

“मया उसे बोला दिया मया है” उसने मन में सोचा। उसने बाहर से धाबाज मयाई। विरजनाथ धाना। पूछा तुम धाय कैसे धाये ?

“बधाई देने। मैं किसी कवि सम्मेलन में धाय देने के लिये बाहर जाता मया था।”

“धायो धायो तुम्हारी धपनी भापी से पिकाई।”

कवि के पाँच बनीन से विपक बये। कमल धूमता-धूमता ला ऊपर जाता। कमरे में बैठ मया। उसकी उत्सुकता बढ़ती गई।

“मैं धनी तुम्हारी भापी को मुला कर लाता हूँ।” वह बाहर गया

धीर उसे बुला लाया ।

“भाह ! कार्तवीर्य की छाड़ी में यह अप्सरा से कम नहीं लपटी है कमल के मन ही मन में कहा यह पृथ्वी बहरी” ।”

“घात भीमती विरचनाच सरिता है धीर यह है मेरे दोस्त कवि कमल !

“नमस्ते ! धीर मुनिये इन्होंने हमें तोहफा तो नहीं दिया ?” सरिता बनाम चिता के कहा—

नहीं !” विरचनाच ने कहा । कमल स्तब्ध सा उसे देखने लगा ।

फिर इन्हें कहिये कि वे मेरे वे प्रेम पत्र मूढ लौटा दे जो मैंने इन्हें हान ही में लिखे हैं ? मैं उन्हें अपनी नई कहानी पृथ्वी सखी में प्रयोग करूँगी ।”

विरचनाच ने विस्मय होकर पूछा “कौन से प्रेम पत्र ?”

सरिता ने पुरा किष्का मुनापा कि इजरत किन तराह उसके पीछे बीबाबा हुए सं प्रीर मरने पा रहे थे । पुरा किष्का मुनकर विरचनाच चित्तचिन्ता कर हँस बड़ा । कमल का भारी मूत मूख गया । वह टूटते हुए स्वर में बोला “घात मूढ लपटा कर दीजिये ।”

विरचनाच ने गिरतचित्ताकर कहा “यह धुक से ही ऐसी गटबट धीर चीठान रही है । घात-कमल के मजनुषों चरहारों रोमियों को यह मूढ सबक देती है । मेरी तो इमने धमि बरीशायें -- ।”

बीच में सरिता ने कहा “मैं जात लेकर घबरी घायी ।”

“क्या यह सरिता मैगिका है ।” बनने मन ही मन कहा “विषयी कहानियाँ इतर मूढ घर रही हैं ।” धीर उसके बात पर पमीना कमल उठा ।

×

×

×

पत्थर में पानी

झाँके की सजा घरन हो गई। उसे मुक्त कर दिया गया। इस वर्ष के लम्बे कड़ी शीतल के बाद धारा बहा इस संसार में वापस आ रहा था जिससे वह एक दिन इत्या के अन्तर्गत में बंभित कर दिया गया था। उसने इत्या की भी एक छेठ की प्रसिद्ध गुठे के साथ। अन्तस्वरूप उसे इस वर्ष की छल्ल सजा मिली थी।

एत इस वर्षों में उसने बेत-जीवन के बहूँ-कड़वे अनुभव प्राप्त किए। उसने बसीचा बनाता सीमा। पहले-बहुत डंडे नी बाए, क्योंकि वह अपनी कठोर और अज्ञान मनुष्यता पर सहजता से अधिकार नहीं कर पाया था। बाद में उसकी प्रकृति और अज्ञान और प्रतिबन्धों के कारण अन्तर्मूख होती गई और वह एक घट व्यक्ति बनने लगा।

कई से बाहर निकलते ही उसने एक अज्ञान सी। अपने अमनुष्य वेहरे पर इत्य केत और कुम प्राप्तता की घोर टाका। उसकी इति अत्य भर के लिए नीले आकाश पर बन गई। कपास के बिबीने की टाक छोटे-छोटे मेव-अन्ध अतिव्र के पत्थरी किनारे पर रेंद रहे थे। उत्तरवात् उसने बेत के जाने से निकलती लम्बी लकड़ पर इति बना थी।

एक सुबती नयनो में अन्ध लिए उसके घनीप खड़ी थी। उसके साथ साठ-माठ साठ का बन्धा था। बन्धा रेंद और

बलता था। सैप बनम जहाँ घन्नेरा-ही-घन्नेरा घाया रहता था। उस घन्नेरे में एक स्मृति उभर आई। बहुत समय गुपनी बात है—

“माँ !”

“क्या है ?”

“बहू कहाँ है !”

“क्यों ?”

“मेँ पूछता हूँ बहू कहाँ है !”—बाँके घरार के नरें में बुल था। उनका मारा घरीर काँप रहा था। पाँव लडखडा रहे थे।

“क्यों ?”

“बबाम नहीं देती हो क्यों-नया लया रखी है। बताती है माँ !”
—घोर उसने भ्रोंपड़ी के मिट्टी बर्तनों को तोड़ना शुरू कर दिया था।

माँ बिह्वल हो जटी थी। लडपकर बोली थी—“घो त्रिपूते राम सा बीर ठैरी कुबुडि को टीक क्यों नहीं करता। तुने घर की एक-एक चीज बेच दी है। माँ के माक का काँटा भी नहीं रखा। बबारी बहू के हाथ की खुडिवाँ तो रहने दे ?”

बहू रामस की लख गयी—“बठा न कलमही ठैरी बहू कहाँ है ?”

“नहीं बतारूमी !”

“नहीं बतारूमी !”—उसने एक ठोकर से पानी का मटका फोड़ दिया था। माँ ओर में धर जटी थी। पर बहू घाबारा बेटे से बहुत घातंकिठ भी थी। इसलिये उसने अपने हाथों से अपने को पीटना शुरू कर दिया था घोर बहू ओर से थिहमाने लगी थी।

सारा हरिजन मोहस्ता इकट्ठा हो गया। बमारों के पंच घासू ने बाँके को समझना बाहा पर बाँके ने उठे ओर से बलका देकर कहा—
“बाम रे पच का बच्चा एक ही घूसे में पचै को पचर कर हुआ।”

घासू बेचार बिरता-गिरता बचा। फिर भी भ्रोंपड़ी के तिलके उस की बाईं बाँह में चुभ ही नए। बहू लडखडाता हुमा जटा था—“यह बमार बँस में रामस पैवा हो गया है।

वह हठ कर जाता ही था कि कपसी धा गई थी। कपसी ने धाते ही ज्यों ही विकलात-वृत्ति बाँके को देखा त्यों ही उसके प्राण मूल गए। वह पलट कर बापस भागी। बाँके ने उसे देख लिया और उड़ने उसका पीछा किया।

कपसी उसकी पकड़ में धा गई थी। उसने कपसी के बाल पकड़े और उसे बड़ी मानिमाँ निकालने लगा था।

“बूढ़ियाँ दे।”

“नहीं दूँगी। चार चाँदी की बूढ़ियाँ मेरे मुहाय की नितानी हैं।”

“मुहाय की बच्ची बेटी है या ?”

कपसी ने उसे बचका दिया और फिरा भागी थी। सब बाँके रोय ब गुना से भर उठा। उसने लपक कर कपसी बनिष्ठ बाँहों में कपसी को उगामा और पटक दिया। कपसी के मूँह से मून बह उठा। वह पचेत हो गई। चीख जोर से बिल्लाई, मर गई बेबारी मर गई।

और लक्ष्मण बाँके बचका उठा था। उसका नगा एकदम उतर गया था और वह वहाँ में भागा था। भागा सो कभी बापस गया ही नहीं। उसे यह तो बामूम पड़ गया था कि कपसी मरी नहीं है किन्तु वह बदमाशों के दल में शामिल हो गया फलस्वरूप एक हुरमा के धमि दोष में उसे दस वर्ष का कारावास हो गया था।

बाँके बड़ते धम्बरे को देग रहा था। उतकी धमिँ धाम बरगा में मरी थी। उसकी मर की मरें दुःख के कारण दूँ जाना चाहती थीं। लक्ष्मण उसने कपसी पत्नी को पत्नी नहीं समझा माँ का माँ और बाप को बाप नहीं समझा।

छिद्र धाम वह गया मुँह लेकर घर जाएगा ? जाएगा वह पर एक धम्बे इम्मान को ठरह शिष्या। वह यनीके बना-बना कर बैब बर नबको मुय देया। धमने दुष्कर्मों का प्रायश्चित्त करेगा।

धम्बेरा नहूँ होगा वा रहा था।

वह पाँच में गुना। भोयड़ों की जगह गए पर बब बए थे। मंरपी

से भरा-भूरा बोहस्ता साठ-मुबरा हो गया था। बच्चे एक नैस की मालटेन के नीचे पड़ रहे थे। बाँके ने उन्हें स्नेह की दृष्टि से देखा और धामे बढ़ गया।

“यही तो मेरा भ्रौंपड़ा था।”—उसने यकानों के बीच लाली बगल को देखकर मन-ही-मन कहा। वह विमुक्त-ता बहुत देर तक वहीं खड़ा रहा। वह धरमक धन्येरे में बच्चों का अस्तित्व बतलाने की पढ़ के बास-भूम को निहारता रहा। सोचता रहा—कपली उसे देखते ही उसके बसे से निपट बाएयी। उसकी बाँहें उसने गले में होंकी और पुचकार-पुचकार बहेना “अ तो पपमी धब में तुम्हे छोड़ कर कहीं भी नहीं बाँडेया। धब में बुराइयाँ छोड़कर घाया हूँ। वह रोना बन्द नहीं करेयी। तब वह प्यार से उसके धंय-धंय को धिनो देना।

वह धम्बेरे में जेठारमा-धा लना रहा। फिर वह बैठ गया और अमीन पर हाथ फेरने लगा। कुछ बिलरै हुए तिनकों को इकट्ठा किया। धम्बेरे में इनको देखने का अतकल प्रवास करने लगा। उसने सोचा—धावब के लगी नहीं बरती में बसे गए हैं। धरकार के हरिजनों को गए बर बना कर को दिए हैं।

वह वहाँ से जाता। गए बरों में हीपक बस उठे थे। एक कुटी ली धपने बच्चे को पढ़ने के लिए बाँट रही थी। बाँके को धपनी माँ मास हो गई। उसकी माँ उसे देखते ही चौंख पड़ेयी। कहेयी “मेरे सरलस मेरे राम तू मुझे निरमायी बना कर कहीं जाता गया था ?” बाँके की धाँखें भर गईं। उसने धपनी हनेली से धपने धाँधुधों को पोंछा। धम्बा हाँस खींच कर पुनः बिचारों में खो गया “पर मैं माँ के सामने धपने कपली को बाँहों में बँधे बहूँना।”

अचानक वह एक पुचक से का टकराया।

“कौन हो तुम ?” बाँके ने पूछा।

“माधव।”

“धरे

पूछ—“तुम्हे नहीं

में हैं बट्टि ।”

“घरे बाँके मुना पा तुम्हे तो जेन हो गई थी । तूने किसी की हत्या कर दी थी ?”

“हाँ मापक पर घब मैं एक बच्छा घादमा बन गया हूँ । घरने पाप का प्रायश्चित्त करने आया हूँ । मुन तो मेरा पर कहाँ है ? मेरी माँ मेरे बापु पीर मरी बहू कहाँ है ?”

मापक नहीं बोला ।

“तू कुन बनी ?”

मापक ने घबनी सर्वेण सुमापी । घबरे के कारण बहू उनके बहरे के मार नहीं पर पाया ।

“तू बोमना बनों नहीं ? मापक तुम्हे मेरी कथम है । बस्ती में बजा के मार कहाँ है ?” बाँके कापी उत्तरित हो गया था ।

“बाउ बहू है बाँके तेरे माँ-बाप बनी है की तरहू तेरा नाम रटते रटते बन बने । बाँकिरो नाम तर उनकी बबान पर तेरा ही नाम था ।”

“मापक !” घाबमार कर उठा बाक ।

“परी बबानी बहू पछा के पर बनी गई । बडे घाबन में है । पत्रा का पर घट्टर के बाहर जो गई बस्ती मो बट्टी है बही है मरी तीन बार पीन दूर ।”

मापक बला गया । बाँके निर्वाह मा हो गया । उसकी बाँकों के घासे बबेरा टा गया । उनको बबना कुन-की हो गई । बहू बही पर बँट गया बँटा रजा—घनेक हाग । बाउ में उठा पीर बाबाय की पीर देग कर उसने प्रणिजा की की—मैं उस बेवबा की बौटी-बौटी को बाउ कर बोलों को बान हूँगा ।

उसने बरी बबेनी में राज दुबारी । कमी-बसो हाग-बो-बाग के लिए हमारी बाँग मो लय आनी थी । पर बँके ही बहू बापका बँके ही उनके लिए, पर कुन बबार हो जाता था ।

बाँकिर मुबहू हुई ।

सूर्य देवता संवृति में पीयूषर्षिणी दरिबर्षी बितेरने लगे । बाँके हरिजनो की नई बस्ती की घोर जला मग में लुप्यन उठ रहा था घोर बूणा घोर हिंसा के भाव बहरे पर घटनाभियाँ कर रहे थे । वेन रक्तिम हो घटे, बुड के रक्त पिपासु भिपाही की गच्छ । नई बस्ती के बीराहे के पान बह लड़ा रहा । बहुत बयल पयो है उसके लोगो की बया ।

“पमा कहाँ रहता है ?”—उसने बाँके हुए एक ब्यक्ति से पूछा ।

“वह रहा बीया मकान मुकठे हुए मात लहमे बासा ?” ब्यक्ति नम्भीर हो बया “पमा बीसे बार है । तुम कीन से पमा को पूछते हो ?”

“पमा कपती !”

“सबभ्य कपती का नाबिब पमा बही है उसका बर । अभी वह बर में ही है ।”

वह उत्तेजित हो बठा । हिंस भाव उसके रक्त में लहरों की तरह बीड़ने लगे ।

—सब बीरत देवप्यई की नयी ठस्वीर होती है । किन्तु मैं उससे बरला लूँया । उसे अपनी करनी का बण्ड डूना ।

वह को ही कब्रम भागे बडा था कि उसे पमा घाता हुआ बिबाई पड़ गया । वह टिठक गया । यही है सासा बोडूा बिब ने मुक से मेरी कपती को खीन लिया । मैं कम्बळत का पता टीप लूँया ।

पमा के बीडे-बीडे समरपाचित कपती भापती हुई घाई । उसके हाव में कपड़ में बिपटी कुछ रोटियाँ थी ।

“बम्पू के बापू बलाबली मे रोटियाँ ही भूने का रहे हो । उसके स्वर में क्विम रोद था— मैं बेल न लेती तो बिब बर पूछो मरना पड़ता ।”

“बम्पू की माँ तेरे होते मुझे किसी की भी बिन्ता बहीं है । मैं बडा भाववान हूँ नहीं तो तु मुझे कैसे मिलती ?

“भाववान तो मैं हूँ बिसे तेरे बीसा सीबा-घाबा मर्ब मिल बया बहीं

तो वह निर्दयी बाँके मुझे मार ही डालता । धम्मा हुआ कि वह पत्थर
कहाँ बना गया ।”

“तुम्हें उसकी मार प्यारी है ?”

“नहीं । वह मार रखने प्यारा धारमी ही नहीं था । हाँ, उसकी
बातियाँ जरूर मार प्यारी हैं । उसको मार-पीट जरूर मार प्यारी है । राम
का पीर ने मुझ निरन्धरी को उससे छुड़ा कर मुसाफि बना दिया ।”

उसी बच्चे दोड़े-दोड़े घाय । सबसे बड़ा बच्चा बोला—“माँ-पाँ बच्चे
के तेल मिरा दिया ।”

“दूने नहीं बिछाया तेल बिछाया है मौजू ने ।”

“मूठ बोलता है !”

बच्चे आनन्द में मड़ पड़े ।

पीरकुल मच गया ।

पद्मा वहीं से बना गया ।

कपती सभी बच्चों को लेकर बनी ।

बाँके बम्बोहिड-ना वहीं लड़ा रहा । हिमा डेच घोर शत्रियोध वह
समी मुझ भून गया । केवल पत्थर की प्रतिमा की तरह निष्कारण पीर
मचल लड़ा रहा ।

बस कपती उसकी हृष्टि से घोरमन हो गई तब एक कौपरी के साथ
उसकी बेजना लोटी । शत्रियोध को विवास्त भावना दुःख-काण्ड हो उठी ।

वे इस दिवान का मँह मोह लूँगा ।—यह निश्चय कर वह एकदम
घाने बढ़ा । बीच पाथर का एक टुकड़ा बढ़ा था । बाँके घायल में उठी
वहीं देख लड़ा । होकर ना गया । बराम से मिर दगा । इधरकुल मँह
भून-भुनारिण हो गया । मिर ने भून की पत्ती लगीर सी बह बनी ।
घाँकों के घाये घँव-सी घाने लगी । मरगिणक पीर की एक लहर लपके
तब मैं दोह मँ । वह बराम ने पुनार उठा—माँ !

राफा भूना था । बोड़ी ही दूर पर जाती ने मन पर मुझ मुबडियाँ
बस कर रही थी ।

माँ की आवाज सुनकर उनका ध्यान बाँके की ओर गया ।
 एक ने कहा—“देख री स्वामी कोई बेचारा फिर बना है ।
 स्वामी ने धृष्टता से कहा—“हाँ-हाँ बस री ।”

कड़कर तीनों अनिर्वा जायीं । स्वामी ने धाये बढ़कर उसे उठाया ।
 बाड़ी से भाष्यप्र बेहरा भी उसकी नजर से छिपा नहीं रह सका । वह
 पड़पान गई । घलका लून बरक की तरह बन गया । शरीर पसीने से
 भीम गया । बबान से निकल पड़ा “हाय राम !”

बना करे ?”

“मेरे घर में जसो बेचारे को घाट पर सुला देंगे ।”

तद्वारा देकर उसे स्वामी अपने घर में घाई । बोड़ी देर में दूसरी
 घोरतें बनी गयी । बच्चे कौतूहल की भावना लिए धामुन्तक को देख
 रहे थे ।

स्वामी ने जम्हे डाट कर धवा दिया । बच्चे उदास से चल गये । स्वामी
 ने बाँके का धाव बोया । वह उसे पंखा मलन लगी । बीरे बीरे बाँके ने
 पाँखें खोली । स्वामी उसके सनाट पर अपना बुरबरा हाथ फेर रही थी ।

बाँके कुछ बोले, उसके पहले ही स्वामी ने कहा “मैं बहुत सुखी हूँ
 मेरे चार बच्चे हैं, मेरा अपना घर है पति है । तू तो बाँके मुझे मार कर
 ही जसा बना था पसा ने मुझे गया पीवन दिया है । उसने बनी-बनी की
 बूत कही बनने दिया मने-मने का द्वार नहीं बनने दिया धम्मथा मेरी
 क्या दुर्बधा होती ?” कड़कर उसने लम्बा माँठ लिया । उसकी दृष्टि
 लुण्ठ की ओर लगी हुई थी “घर बू फिर धा गया है । बकर तू मेरे जीवन
 में बहर बोलेना । पर तू इतना मार रहना कि मैं अपनी जान से दुँबी
 पर धान नहीं दुँबी । मैं पसा को नहीं छोड़ सकती । बाँके ! मैं हाथ
 जोड़ती हूँ, तू अपना गया घर बसा ले । मेरे हरे-भरे घर को मत सबाट ।”

बाँके के नेत्र नीच धाए । वह भटके लाल पठा । उसकी मूत्रा घर
 कठोरता-कोमलता का विचित्र सामंजस्य था । वह घर के द्वार की ओर
 बढ़ता हुआ बोला “शुभ गलठी पर हो । मैं बाँके नहीं हूँ । मैं तो एक

बठका यात्री हूँ । तुमने मुझ पर दया की इसके लिए मैं तुम्हारी धीर तुम्हारे बच्चों की मनीषियाँ मनाऊँगा । मयदान तुम्हें मुन्नी एन । तुम्हारे मृगी जीवन को बसाए रख ।”

धीर बकि बहुरा से मीया हुआ जब पहा रूपनी ने धीर से कहा—
“बकि बकि पीटी लो साते जाओ ।”

परन्तु बकि ने पीछे मुड़कर नहीं देखा । रूपनी की धारों भर आई ।

मैं मर गई हूँ

मैं ट्या-सा ज्येठे एकटक देखता रहा। वह सभी कबचरी घाँसों और कन्धों पर बैठरखीसी से नाचते हुए बाल। पहले की धपेया थोड़ा-सा मोटा घटौर। और सभी स्थितियों से विभक्त झुंझों को मटककर एवं धाकड़गामव प्रतीकित बाल से चलकर सभी को मोहना।

वह धण प्रति धण मेरे करीब घाती गयी।

धीरंभी कसकसा की रंपीन धीरंभी। बहल-बहल। कोनाहल। विनिध बेहरो की संवम-स्वली।

धब वह मेरे बहुत करीब धा गयी थी। लेकिन उसका ध्यान सर्वथा कहीं और था इसलिए वह मुझे नहीं देख पायी। उसकी मगर स्थिर थी—ठीक सामने। मैं बड़ी नाटकीयता से उसके सामने लड़ा हो गया। वह मुझे एक पल विमुह-सी देखती रही फिर होठों पर मुस्काव बिछेरती हुई बोली “धरे तुम ?” उसने मुझसे तपाक से हाथ मिलाया।

मैंने देखा कि वह स्तूम होने के साथ-साथ पीली भी पड़ रही है। उसकी घाँसों के बीच काली बरछाहवाँ पहरी हो गई है और जो मुगार उसके बेहरे पर घाँसों को टिकाए रखती थी वह दोप-पिन्ड के रूप में रह गई है।

वह एक तरह की मुस्काव बिछेर कर बोली “तुम मेरी झूठी देख रहे हो ? झूठी हूँ मैं नॉन।” उसके बेहरे पर

सहानी की काली बटार्ण पहरे रूप में झा गई । एक घसस्य संभ्रिता की उम पर ।

मिने कहा "बनो, चाय पी जाय ।

"चाय । वह चौक बड़ी । उसकी मजर भीड़ में खो गई । वह घपने घापने जैसे बोल रही हो इन तरह बोली "मैं चाय नहीं पीनी । चाय मुझे घच्छी नहीं लगती है ।"

मेरी धाँसे फिर उसके कर पर जम गई । वह बहुत ही बदल गई थी । उसका घनोदिक रूप बिहन हो गया था । धीरे मेरी दृष्टि ठरती हुई उसके पीर पर जम गई । उसका पेट छिक तीन बरत की तरह घाम भी फूना हुआ था ।

"क्या सोचने लगे ?" यह बरा ठेज स्वर में बोली । मैं चौक पड़ा । "तुमने चाय कर से छोड़ी ?"

"धमी से । नही बात यह है यतीन्द्र कि मैं कुछ ठिक करना चाहती हूँ । परि मुम पिताना चाहते हो तो" ।" वह एकदम चुप हो गई ।

"घाघो, किसी 'बार' में जलें ।"

"नहीं, हम घपने पर ही जलेंगे ।"

हम दोनों घराब लेहर घा गये ।

उी हड्डन हड्डन की एक छोटी-सी मर्ती में सीमिया का फनेट था । हम दोनों ने जैसे ही उसका फनेट में प्रवेघ दिया जैसे ही चार बन्ने चौय-चौय चौय-चौय करते हुए घा दण । पूरे चार बन्ने । घोर एह वेर में ? बाबा रे बाबा । एक दमन-मी दौड़ गई मेरे मन में ।

तभी उसकी जाती-जगूरी घाया घा गई । घाया के दौंग बहुत ही मरु घोर उजले थे । उनसे बन्नों को घपने बानू में दिया । सबसे छोटा बन्ना जो च ही माह का था, घरना संगुम बूध रखा था—घाया की दोर में ।

सीमिया ने बिना हिचक के कहा "दण दण दो यतीन्द्र ।" मिने

स्पष्ट हो लिए ।

सीतिया ने घाया को हुपम कर दिया "तुम बच्चों को बाहर ही खावा बिना घायो । मोड़वाला वह मुस्ता है न उसे कहती जाना कि वह यहाँ को घामसेट, पापड़ घीर कटा हुआ प्याज भेज है । वैसे उसे तुम्हीं दे देना ।"

वह बहुत ही ठीकी से यह सब कह रही थी । कहकर वह तुरन्त कमर बढ़ती हुई बोली "घाया ! ऊपर कोई न घाने पाए, इसका क्यास रहे । 'घायी बहीत्र ।

हम दोनों कमरे में घा गए । वह पीने की तैयारियाँ करने लगी ।

मैं एक लोके पर आराम से बैठ गया । कमरे में कोई भी परिवर्तन नहीं था । हाँ कुछ पुण्या पदमय लग रहा था । मेरी दृष्टि कमरे में चौकती रही । एकाएक दृष्टि नासिर की तस्वीर पर रुकी "नासिर कहाँ है ?"

उसके चेहरे पर एक धल धोर की हलचल हुई घीर वह संयत स्वर में बोली "वह बैल में है । उसे तीन बरस की सख्त सजा हो गई है ।

"क्यों ?"

'सोने का तस्कर । दरअसल वह बड़ा ही बदमसीब है । धन तुम्हीं लोको तस्करों लगी करते हैं, पर पकड़ा प्रायः बही जाता है ।

"वह मेरे सामने आकर बैठ गई । घायो को पिलास में डालने लगी । हलके नीले रंग के छोटे-छोटे कतारमक बिलाम । घामले" पापड़ घीर प्याज भी घा गए । उसने लठकर सख्त की जगह रंभीन हलका प्रकाश कर दिया ।

"यह लो तुम्हारे लिए बहुत बुरा हुआ । मैंने सहायुमूर्ति से कहा ।

"हाँ हुआ लो है ही ।" उसने बोड़ी सापरवाही से कहा घीर मुझसे धपना बिलाम टकटया । उसने एक बड़ा बूट लिया । बोली 'नासिर बैल में है । तीन माह पहले उसे सजा हो गई थी । इस बार वह बुरी "एह से दरबाब हो गया है । मैंने घाने घपनी बीबी का भी बर्ष धन

नहीं बटा सकता। इपर मेरी पीने की धारण भी बढनी बा रही है। क्या कहें यतोन्त्र जब तुम घोर जाबिल थी तब शराब में बह मजा नहीं आता था जो अब फाफामस्तो में आता है।" उमने हाथ के धर्जीब ऋटके के साथ एक चूट घीर लिया। धावा मिलान जाती हो गया "बाहे हम हम बूझ भी क्यों न कहें पर जो भोज हमें मुदिहल में मिलती है उमके प्रति हममें बहुत चाह पैदा हो जाती है। अब उमकी मजर मुझ पर कम गई। बह घामने के दुकड़े को घामने बाँतों के बाब दबा कर बचरना-ना करने लगी। मैं बूझ नमस्य नहीं पा रहा था कि मैं उसे क्या कहूँ ? तभी बट बोनी "तुम से बूझ नहीं दिलाऊँगे। दिलाऊँ क्या दिलाने को तबीदन भी नहीं हो रही है। इच्छा हो रही है कि सब बूझ रहूँ।" धाव पूरे शोक-गर्भीय दिग के बाह पीने को मिल रही है। एक कर पीऊँगी। तुम पीओ न ? मे लो बहा चूट। मैं तुम्हें बह रही थी इपर मुझ पर बहा कर्ज हो गया है। अब नागिर को खेत हुई थी तब के दिग बायी पड़े हैं। नागिर को मेरी हागत का बन्ना है पर बह मजदूर है। बर्ना उमने इतनी हिम्मत है कि बह मेरे दुःख को दूर करने के लिए मभी बूझ कर सकता है। तुम यह धकड़ी तरह जानते ही हो कि बह मुझे बेहद चाहता है। बह मेरे लिए सब बूझ कुर्बान कर सकता है। मकिन धर्मी बह खेन में है।" उमने फिर मिलान भर दिया घीर बरक के दुकड़े शराब में छोड़ने लदी। मैंने उसे टोका "शराब कम रिया करो। शराब सेहत पर भी घमर करनी है सीनिया। किनरी बेहदी दीर बेदोष हो गई है तुम्हारी देख। कभी धीरो में घमना बिहता देखतो हो ? गुनाही रंग पीता हो गया है।" मैंने मिगरेट जना भो। सोबावार बुर्दा छोड़ता हुआ मैं फिर बोला "घीर नागिर जैना पडा-मिना धारमी को मारने कमबर का हाथा है उन तरह बच्चा क्यों पैदा कर रहा है मैं नहीं नमस्य करणा। कम से कम उमे तो संतति नियमक बाभा धीररेगन बना ही बना चाहित।"

यह निष्कष हो गई। मजर उसकी बीजन पर थी। उदास-उदास

घौर कभी-कभी रेखाएँ बहती हो गईं। बीमे में बोनी 'बह नहीं कराण्णा।'¹²

'लेकिन क्यों?'

"इसलिए कि मैं बतके हाथ से ब निकल जाऊँ।" जब उसकी मजूर मासिर की तस्वीर पर थी। नसा बाबों में बतर-बतरकर सघनी पसनों को भारी करने लगा था।

मुझे भी घग्गाद-ता घाने लगा। किन्तु मैं निरन्तर अपने मस्तिष्क पर धोर देकर घानी बेचना को बायक्य किए हुए था। ललाट पर बल डाले हुए मैं बोसा "ललाटार बन्ने पैदा करने का हाथ से निकल जाने से क्या सम्बन्ध हो सकता है? क्या तुम ललाटार बन्ने पैदा करती रहोगी तो तुम उसे छोड़ कर नहीं आओगी? तुम घनी जा सकती हो।"

बह बीरे से हँस पड़ी "तुम मेरी बात का मतलब नहीं समझे। न ही मैं इसे छोड़कर जाना चाहती हूँ घौर न ही मैं बतके पास रहना चाहती हूँ। मेरी स्थिति अब पालतू जानवर की तरह है। जो मुझे हिफाजत से रखेगा उसे मैं मात नहीं मानूँगी। क्योंकि बीते दिनों मे मेरे भ्रुव के अस्तित्व को मिटा दिया है। घौर मैं अपने बारे में कुछ सोच भी नहीं सकती हूँ। जो ब्यादा ताकतवर है वह मुझे किसी से भी धीव कर ले जा सकता है। मुझे हिफाजत चाहिए, हिफाजत। ऐसी बातें मेरे अरिज को गिराती बकर हैं पर मेरी स्थिति ठीक बही है। इतर बरे अय से प्यामों ने इस तरह से जुबलना छोड़ दिया है, क्योंकि मैं अब बुधिया की तरह विस्मा पैदा करती हूँ। इस कूमे हुए पैट की देखकर घादमी के मन में एक विनीना ब्याज पैदा होता है घौर मोन की घभी। अघाएँ घाघ के महान की तरह टूट जाती हैं। इस कूमे पैट की बबह से कम्प्युटर अन्वुतपनी इस सहर को हमेघा के लिए छोड़कर जाना पया। बह दो लाल तक इसी पिछ में र्छा कि कब भीलिया खानी हो घौर कब मैं इसे लेकर पड़ूँ। जाहे यह बात कितनी कड़वी घौर बहरीनी क्यों न हो लेकिन हमारे संस्कार, समान घौर बबहब का हमारे अर

के यदि कोन छठ जाय तो सभी करं घोरत को एक क्षणमात्रक ही नजर से देखें घोर सम्बन्ध के पुनसे इम्तान पन भर में घटावकता ईना है । बहुत हो घबरीब स्थिति है घारनी के मन की । रजाक के ये दोस्त—घमनुन नागिर घौर यह इनीक —तब रजाक को इज्जत केबल मेरे लिए देते थे ।”

‘घौर वह इनीक मेरे का भा पसना पुजारी था । मुझे बहद चाहता था । जान देना था बेचारा । बेचारा ‘मनिन् क्रि उमकी मेरे पीछे नागिर ने बड़ी धुमंत की । नागिर दुनिया की हर तास्त में गब सफता है और साठिर । ‘यतीग्ट रजाक के बाद में ‘मै नहीं रही । मुझे लगता कि मैं मर चुकी हूँ । मेरी घारना हम घनुम घौर से निकल गई है घौर एक बीता जागता मोस का मैं पिड नाथ हूँ ।”

“रजाक ! वह हम नाम को लेकर घनीमून ध्यावा से बिर गई घौर घपनी नदीनी घानें घोड़े हाग के लिए बन्द हो गई घौर उमन विलान को एक घोर करके मैत्र पर बावें घाल क बल घपनी मईन को रख दिया । तब उमवा माघ घौरि डीना-डीना हो गया घौर उमव हौठ घम्बह के घमीम घबमाद से घमक में उडे । दो बूँद घानू भी उसक घमक-मुनिन को छोड़कर एक-दूसरे में मिलते हुए मैत्र पर गिर गए ।

मैंने घारिमक स्नेह में कहा “धीनिया तुम्हें हिम्मत से बाब लेना चाहिए । दुयोग हर एक के बीबन में पाते हैं ।

वह उठी घौर गद्-गद् घराब पीने लगी ।

‘वह गरारब बहुत घण्टी बीज है । मैं हमके ईमाद करने बामे को तहेरिन में घम्बहार देखी हूँ । यही एक ऐसी बीज है जो बची-बची मुझमें बेटी घारना को छोड़ी देर के लिए बागम जमा देखी है घौर मेरे नामने रजाक का बेहूत नाथ जाता है । ‘यतीग्ट ! रजाक को मैं जितना चाहती थी, उतना ही नागिर मुझे चाहता है । वह एक तख् से निहायत पिटा हुआ इम्तान है किन्तु वह मेरा कर्मा भी कुछ नहीं चाहता । जब रजाक के मेरा विवाह हुआ था घौर रजाक के माँ-बाप ने उडे करने कर

से यदि कोय छठ जाय तो नबी मर्यं घोरत को एक मातनात्मक ही महर से देखे घोर मम्यता के पुनने इस्मान बन-भर में घराबकता डंका हें । बहुत ही घबरीब स्थिति है घादबी के मन की । रजाक के ये शोम्त—
घम्तुन नाभिर घौर यह हनीक —तब रजाक को इज्जत केवन मेरे लिए देने से ।”

“घौर बड़ हनीक मेरे बन या पबका पुवाती या । मुझे बहर बाहना या । जान देना या बेचारा । बेचारा “नाभिर” कि उमरी मेरे पीछे नाभिर मे बड़ी दुगन की । नाभिर दुनिया की हर ताकत मे मड़ मकठा है मेर नाभिर ।” “यतीग” रजाक के बार में “मै मरी रही । मुझे मना कि मै कर चुकी हूँ । मेरी घामा इन घनुम घौर मे किमन गई है घौर एक मोठा जागठा मौस का मैं पिह पाब हूँ ।”

“रजाक !” यह इन नाम को मकर बनोभूत मया से बिर मड़ घौर घणकी मजीली घाँसे दोड़े छानु के लिए बन्द हो गई घौर उफन गितान को एक घोर करक मेज पर बाँसे नाम के बन घाबी मईब को रन दिया । तब उमका माघ घौर डीना-बीला हा मया घौर उमक होठ घम्तुन के घमीन घरमाद से बमक स उठे । दो बंद घाँसू भी उसक पनक-मुनिन को तोड़कर एक-दुमरे मे धिलत हुए मेज पर बिर पए ।

मैने घाभिर स्नेह म कहा “मीलिया मुम्हें हिम्पत स नाम मेना चाहिँ । दुनोंप हर एक के बीबन में घाँसे हैं ।

बह उमी घौर मद्-मद् घराब पीने लपी ।

“यह घराब बहुत घणकी बीब है । मैं इसके ईजाब करने बाने की लईरन मे बम्यबार देती हूँ । यही एक ऐसी बीब है जो बमी-बमी मुकमें मेरी घामा को घोड़ी हेर के लिए बागन बपा देती है घौर मेरे नाबने रजाक का बेहरा मच बना है । “यतीग” रजाक को मैं बिजना चाहती थी उमना ही नाभिर मुझे चाहता है । बह एक लख से निहायत पिया हुआ इस्मान है बिन्तु बह मेरा बमी भी मुच नहीं चाहता । अब रजाक के बेरा बिबाह हुआ या घौर रजाक के बी-बाब के उठे घरने घर

व सब के घनत्व बर दिया था सब नागिर में उसे बारी बरत ही थी । बरके लिए बौद्ध हूँ कर दिया था और मुझ नहीं जानते उनमें पानी का नापों की ताप जमा लिए रखा । बर मुझे चाहता था बर उभरा टोप रखा रग रग्य की बभी की मी जान रखा और न ही ही । रखा बर की मोन व बार फिर बेरी दिखाने बहारी मरी की बरत बही । देरी देरी और कई मुवावदार बरिदा से जान ।

ही ली मेरे बर के बरान रखा बर के बर-मालीर देने का र बरन में बिब बिब दण । मभी की बिब-रुति मुझ बर मनी की । मेरे का बार भी मुझे मुझ मनी व । के ? दिगुगामी दिगिबान नर पूरीर को बरनी बरनानि नरनन है और उनका बर बर ली के दिगुगाम के मुनी तर का भी बरने बरिबनन का है । मैं हिन्दी बरना और बरनी बोजी की और बेरी का बरनी की रि में केबल बरकी बोर्न को हबारी मागुमाग है । बुरत उनका बापर का रि में बरन है । रखा है घारी बर लू बर उन ईमा बरने में माग । बरन मैंने इन अनुपम बर-बीरन में बरने बरदर का एव नो इमान मरी बरना ली मैं प्रनु के प्रति बरदर मरी बरनारकी बरिबि बर का प्रनु का रिदा हुआ है और मुझे इन बर में उनके बरदर में एव बरे को बरना है बाठिन । दिगु रखा को बर बरूर मरी का । रखा में बरत मनी म बर का “मुझ बरने बर में मुझे मागबन बरों के लिए मरी रखा मरनी । मैं मुझे मुगबन बरर बरता हूँ पर मैंने उनके लिए बरना बरदर बरने की मुगारी बरने मरी मनी की ?”

“मैं बरा करती ? मैं भी बने बरनी की । बर एक बरबना बार बरनीग इमान था । मैंने उनमें बुरबाव घारी कर ली । बनीग बर दिवना कि उनके बरदरि बर-बार इलनिए उनमें बरान हो बने कि के उबरी घारी बरने बेलाबरी बानदान की रिमी बनी मरनी में बरना बाहरे के और मेरे बर-बार मुझे इलनिए मागबन हो बने कि मैंने रखा की ईमाई नहीं बरना । बर हने कोई दुग नहीं का । बरके

कई बोलत था मये—नासिर, यमुलपनी कट्टापट्ट, मुहम्मद हनीक ।
उसने बागों ही बागों डूमरा गिलास भी खाला कर दिया था और वह
थैस ही फिर रायब बालन को ठंमार हुई बैठे हो मने उसे रोक दिया ।

“यब घबिक मत दिया । इतना पीना बज्या नहीं ।

वह बसो । उसने मेरी घोर दखा घोर मूनी मुस्कात के साथ वह
बोपी “याफ़ा ना घौर । घमी मेरी बात साथ नहीं हुई है । घाय में
तुम्में घपनी बहानी मूलाझैगी । ऐमे ही सच्च बरिषों की तुम कया
निखा । यही मया मखेन होना मया क्रियेमन एकदम मया । घौरियनत
मौसिक घौर घनोया । उसने धाबा मिनाम बरा घौर वह घामसे का
दुपका खाने लगी । मैं उसे मकर घरने घाय से कई प्रत्य करता रहा ।
वह गिलास को इस तरह पूर रही जैसे वह उनम घरना प्रतिबिम्ब देयना
चाहती हो । बोपी “हनीक मुझ पर बुरी तरह घायिक हा मया । उष
की हबिय उनके मन में ही कंडली मारे साथ की तरह घुत्कारनी रही
घौर एक दिन उनने “भाभीजान की घाड़ में रजाक को पैरहाबिरी मे
मेरे साथ बनाकार करने की बेटी की । मैं तबप उठे पर मजबूर थी ।
ऐसी स्थिति थी कि मैं बुरा कर नहीं सकी । वह बना मया । मैं वंधीर
हनी बैठे रही । मुझे मया कि यह मेका मयमे बसवान है । घारमी को
दिन हू तक दिया देना है ? घारमी इमी की बजह मे बहुकिया बनता
है घनक कर्षों की रचना करता है । उनका बरिष घनिक-भैला के जाहू
भरे बमरकारों ना घनुम् घौर घज म हो जाता है । कब वह दिन रूप
में घोषा है जाय नहीं कहा-समय का मकता । मैंने लारी बहानी
रजाक के माथे पर दी । मैं नहीं जानती थी कि मेरे घांजूघों घौर इन
बहानी का इतना घयातक घंन होया । उमी रात रजाक ने घरी लटक
पर एक निवरी अस्नाद की तरह हनीक को कल्प कर दिया । हनीक
पर मया घौर रजाक को उष बैठ की मया हो मयी ।

“भाभी दोम मुझे मजामुक्ति प्रबट घाये । यह मुझे मानूस हया
दि मनी लदेव मुझे घरनी बांशों में नेने के लिए तरल रहे है घौर नासिर

बड़ी लड़ाई घोर लड़वाई में लुभे जाया जाता है। लुभे उन भीरी में बड़ी लुगा हुई। मकरन के बारे में उनमें कभी भीरे बूँट बोलना नहीं आती थी। मैक्सि एकादक बरबों के बाद लौटकर घोर एकादक क प्रमा वास लुभे आनी में बानी बरबादा जाते थे। एक ही बार उम्होंने लुभे ज्ञानों की बरबादी। तब लुभे बरबूर होकर मागिर के घर जाना बड़ा। मागिर लुभे भीरव देना था। छोरे की बरबाद देना था घोर घनेक एकादकों में मुझ बहाना बनना था कि वह घने बरबाद जाता है। इतर दनी की लुभे के बाद बाद बिननी बरबाद था कि मुझ केर बाब रही। मैक्सि लुभे मागिर का एकादक भवरा घण्टा लपना था। मागिर घाने घातकों बिरबनेनबने बनना था। कहुना था - "मै बिबाबन का बास बहू इगाद बरबाद है।" वह लुभे भा करना हो लुभे उनमें कोई लिखवाती नहीं थी। लुभे बिके दिग्गजन का बरबाद थी। एकादक के बंधावान नहीं आते कि मैं बिरा एहकर उनमें बोलना की दिग्गवार बरू। उम्होंने मेरे भीरी लुभे लवरावे पर मागिर मेरी बरबूर बास बना रहा। उतने लुभे बचावे रणा।"

मैक्सि लुभे ठेकेदार लुभे पर छोरे बाबने लगा वह बार-बार पर घाने लना। भीरे भीरे वह प्यार की बाब बरने लना। मैंने मागिर से कहा पर मागिर ने मेरे ब्यक्तिगत घातकों में बोलना बण्टा नहीं लपना। घोर मैं यभीग उमे लवना कोरा उतर नहीं दे लगी। मैं घने नहीं बर लगी कि वह लुभे ऐसी घानों न बरे। घावर कोई एकादक बिरे बण्टा घन में था कि बरि मागिर ने बोवा दे दिया तो मैं बनी।

मागिर ने बनी को लुभे भी नहीं बहू। लुभे वह लुभे लगा। घातकों में लुभे दिग्गजन में है। लुभे मागिर ने यनी को एक लुभे के बाबने में देना बँटाया कि बचावे को तीन बरन की लुभे लना हो लगी।"

"पर मागिर घनेना था। वह घाता था घोर मेरी बरबुरों के बारे में लुभे कर बजा जाता था। बिर भीर की लुभे बरबुर होती थी उमे हागिर

कर देता था। नये नये सँघन क बहने घोर कपड़े। मैं उसकी इस यत्न मगताहूँ के भी लंग घा गयी। उसके धूलतानों एवं सीचेपन ने मुझे पावस कर दिया। घोर एक बिल मैंने जलजित स्वर में पूछा 'तुम्हें मेरे लिए इतना पैसा नहीं लार्च करना चाहिए।

बह कुछ नहीं बोला।

मैं उसकी कुली के धरप हो उठी। चीप कर बोली 'तुम बोमते क्यों नहीं। तुम मुझसे क्या चाहते हो?' उस समय मैं पावस सी हो गयी थी।

'बह नीले घाहाघ की घोर नजर बीड़ाता हुमा बोला, ' मैं धरता कर पूरा कर रहा हूँ।'

'घोर मेरा कर ? मैंने उसकी घोर देखा। उसकी घाँसों में व्याम धाग के लंताब की तरह लामोय सोपी हुई थी। बह जता गया। उसरी मुझे कुली पीड़ा देने लगी। एक ऐसा बर्द मुझे सताने लगा जिसे मैं नहीं मग्नह सकी। घाघिर मैंने नासिर से कह दिया 'मैं तुमसे घादी करना चाहती हूँ।'

'नासिर ने बहने मेरी घोर देखा घोर बाद में उसने एकदम व्यपता मे मेरे हाथ मजबूती से पकड़ लिये।'

'नासिर ने मुझसे कानुनी बिबाह किया। बिबाह की रात मुझे बड़ा दुख हुआ। हय धपने समाज की पम्पनी को धिपाकर भसे ही धपनी नलाकों के सामने घादरु की बाँठें रछें पर जो घठनिपठ है वह कभी नहीं दित्त सजती। हय मैत।घों रहबरोँ घोर ज्ञान की पुस्तकों में राम ईना मुहम्मद के महान चरिचों को पढ़ते हैं पर कौन ऐना बना है ? जानो जमाना गुर हमसे धपनी बाँठें मनवा रहा है। रजाक के सभी शोसत मेरे कप के लोत्री। मुझे बाजी बहकर पुकारते ये घोर सभी मुझे धपनी बहबूबा लमजते ये। घादमी भीतर से बँगा ही घादिय बना हुआ है। पहले वह बपड़ों के बिना जमा या घोर सब वह बपड़ों में जँगा है।'

घराब उनकी धारतो को बूँदने लगी थी। बोजत में थी बहुत बच

कर देता था। नये नये वीरों के पहले घोर कपड़े। मैं उनकी इस मन
बनसाहत से भी लय धा मयी। उसके पहणानों एवं सीबेरन ने मुझे
पापन कर दिया। घोर एक दिन मैंने उत्तेजित स्वर में पूछा 'तुम्हें मेरे
लिए इतना पैसा नहीं खर्च करना चाहिए।

बहु कुछ नहीं बोला।

मैं उनकी चुप्पी से घबरा हो उठी। चीन कर बोली "तुम बोलने
वलों नहीं। तुम मुझसे क्या चाहते हो? अब समय मैं पापन ही हो
गयी थी।

'बहु नीले पाकाय की घोर नजर दीखाता हुआ बोला, मैं अपना
कर्म पूरा कर रहा हूँ।"

"घोर मेरा कर्म?" मैंने उनकी घोर देखा। उठती धाँसों में व्याप्त
पाग के संभाव की तरह धामोग सीपी हुई थी। बहु बना गया। उनकी
मुझे चुप्पी पीड़ा देने लगी। एक ऐसा दर्द मुझे सठाने सया जिसे मैं नहीं
ममक लगी। धाखिर मैंने नाधिर से कह दिया "मैं तुमसे घादी करना
चाहती हूँ।"

"नाधिर ने पहले मेरी घोर देखा घोर बार में उसने एकदम ध्यस्त
मे मेरे हाथ नरबूती से पकड़ लिये।"

"नाधिर ने मुझसे कानूनी विवाह किया। विवाह की रात मुझे बड़ा
दुःख हुआ। हम अपने मयाज की मम्मी को धिराकर मने ही अपनी
पत्नियों के सामने धादरों की बातें रभें पर भी धतलियत है बहु कभी
नहीं दिया लकड़ी। हम नेताओं चहरों घोर जान की पुस्तकों में राम
ना सुहम्बर के महान खदियों को बड़ते हैं पर कौन ऐसा बना है? जानी
बसाना गुरु हलसे अपनी बातें बनना रहा है। रजाक के सभी दोस्त
मेरे कन के लोभी। मुझे जानी बहकर बुझाते थे घोर लगी मुझे अपनी
नरबूती लमकते थे। धादमी भीतर से बैसा ही धादिस बना हुआ है।
रहने बहु बचकों के बिना गया था घोर धर बहु बचकों में गया है।"

धरधर उनकी धाँसों को मुँदने लगी थी। बोसल में भी बहूत बच

घायब रह गयी थी। वह दर्शन हिनाकर बोली "उन दिन मानिए बड़ा गुप्त था। वह कम उठा। क्योंकि मैंने उगमै कहा कि मैं माँ बननेवाली हूँ। उगमने एक माँत्वता की छान ली जालो उम कोई प्रभाव्य चीज मिल गयी हो। धीरे इकट्ठा बाद लयागार बन्धे। गनी घायब था। मैं माँ बनने वाली थी मेरे बूम हुम् पेट को देग कर बहु जमा गया। एक बार बहु फिर घायब। जब मेरी मोद का बन्धा बड़ा हाँ धीरे बहु मुझे लकर भाव। लेकिन मेरा पेट?" उसकी घाँस भर घायी। बहु भरविये स्वर में बोली "मेरा बन यही प्रयोग-उपयोग हुआ। लयागार बन्धे रँदा करते-करते मैं भर गयी। मेरा कर मेरी कबानी धीरे मेरा घाकपण सब भर गया। पर मानिए गुप्त है। बहुत ही गुप्त रहना है उन दिनों। क्योंकि ब्रह्मा विश्वास है कि जब मुझे कोई भी लकर नहीं जायेगा। गनी यह शहर छोड़ कर जमा गया। राजाक जब तक लीटेया सब तक मेरे घाये छोटे-मोटे बन्धों की एक शीज होगी। मैं बकी-जाये बूझी बेरमा की तरह रिग लायी बर्दगी-त्रिसके बेहरे कर कुटियाँ कीड़ों की तरह बूमबुनाठी होंगी। मूँह भी घायर बाँधों के बिना बहुत ही मूँह लयेगा।" उनमें घपना मूँह मेर पर रख दिया। घायू बनकी घायों में से बहने लये। एक बार मुब दियो मे भी ओर भाग। दिनदिन स्वर में बोली "घायर सब भी मेरा यह पेट बूना हुआ होया।" उनमें रोते हुए घपना मूँह घपने हाथों में घुरा लिया।

मैं कसरा से घाय्ताबित्त हो गया। बहु निर्जीव-नी पसी मुद्रा में पड़ी रही। गदा सब हो रहा था। नीचे बन्धे घा गये थे। उनकी पीकी थीमी घायज भा रही थी। मैंने नीचे जाकर घायब से कहा कि बहु जाना मे घाये। बहु बोझी देर में जाना से घायी। मैंने उससे घाये का प्रतुपेक किया। बहु जाना खाठी रही। बड़बड़ाती रही। रोती रही। मैं उसे निरन्तर बाँधस बंधाता रहा। हाथ थोड़े हुए उसने कहा "मैं बहुत दुखी हूँ यतीन बहुत दुखी। यह घायब न हो तो मेरे दिल का घायली दर्द भी न घाये धीरे न मैं घपने घायकी सही हालत को बहचानूँ।

जब मैं यह घराब पीती हूँ तब मेरा जी मिथमाने लगता है। कुछ बाहर घामि की बेचैन लगता है कि मैं कै कर दूँ। कं नहीं होती है धीर मेरे दिम की घुटन बढ़ जाती है। मुझे यह स्थिति पसन्द है। उस घुटन धीर उस दुःख को मैं धारण करना चाहती हूँ इसलिये मैं घराब पीती हूँ।

यतीन्द्र तुम्हें क्या बतायें " बह अपने पसंय पर धर्मपायित हो गयी। उसके फूले हुए पेट पर मेरी हृष्टि पयी। मन में धरुधि-सी जग गयी। तब मैंने अपनी हृष्टि उसके मुँह पर जमा दी। बह बाह्यनिक सी बोली "मौत को तरह की होती है। एक घाम मौत—जिसके होते ही मोय हब देह को बना पाते हैं गाड़ पाते हैं। धीर दूगयी मन की मौत—जिसे कोई नहीं जानता। बस्तुतः मैं एक तरह से मर गयी हूँ धीर जियेगी के धर्मीय सम्मोह से पार्श्वकित इस देह को समाप्त हुए हूँ। पापद हस्तान क धर्मेतन मन में अपनी दुर्दशा धीर परबारी के प्रथिम बिन्दु को देखने की भी एक तीव्रतम इच्छा होती हो। मुझमें यह इच्छा बकर है, बर्न मैं जिन्दा नहीं रहती। धाम बाधिर जेस में है। मुझे दिन प्रति दिन घनाब घेरते जा रहे हैं। जानती हूँ एक दिन देव पूंजी भी बिक बादगी ये धर्मीयर भी बिक जायेगा ये बज्जन मीठे भी बिक जायेंगे तब मैं घराब नहीं से पिछेगी इन बर्षों को रोती नहीं से साकर धूमा ? बढ़ी पीड़ादायक स्थिति होगी ! फिर भी मैं जिदा हूँ जो घराब तानिक मुझे धरने नहीं देती। यही धिरे प्रान का उत्तर है कि इन्नाम अपनी बरबारी के बरमबिन्दु को भी देखना चाहता है। ठीकै सुयी क बरम बिन्दु की तरह ! सब यह एक लगका भवानक पीड़ादायक सम्मोह है !"

बह निराम हो गयी। धरने को संभालती हूँ स्विस ध्यया धीर बिधित मुखान से हरागन मा बरती हुई बह उठी धीर बोली 'बुढ़ नाण्ट। कन कियेने धियर यतीन्द्र ! धीर बह पमग बर पड़ गयो। बड़बड़ाती रही। मैं उसे बरग्यापगी हृष्टि में देगना हुआ बाहर निराम गया यह भोजना हुआ कि मपमुख यह दुग जगल होजा या रहा है।

ऑचल का विद्रोह

सूर्य मकान के सबसे ऊपरी कमरे को जूमता हुआ गिर
 क्रियों से किमल गया था। धमिता ने बगुनई के साथ बेंगदाई
 भी धीरे धीरे ऑचल को व्यवस्थित करके पिड़की लोन दी।
 उसकी पलकें रात भर न सो सकने के कारण भापी थीं। धीरे
 धीरे आवा में बड़कती हुई ब्याया स्पष्ट ललित हो रही थी।
 गिड़की के गुनने ही पवन का झोंका आया और उसकी एक
 धलक को दिगंत गया। धलक कन्धे पर सह्य रही थी। उस
 ने धम्यमनस्क भाव से उभे ठीक किया फिर वह मुठमगाने में
 लगी लगी। वहाँ बघ धीरे मंजन पड़े थे। उन्हें देखते ही उस
 के तन-मन में कपकपी-सी छूट गयी। वह हाण भर के लिए
 मुठमगाने से बाहर लगी धापी। भय थी हलकी रेखा उसके
 लयनों में लिख लगी।

इसी बघ धीरे मंजन को लेकर उसका अपने पति से
 झगडा हो गया था। कम ही की बात है कि लुबह-लुबह धमिता
 उठी थी। प्राची में आवा बकर फूट चुकी थी पर सूर्य नहीं
 निकला था। उसने सीधे बाकर धनजाने में पति के लय को
 हस्तेमान कर लिया था। उसी उसका पति लुबेध था गया।
 लुबेध पाते ही उस पर बरस पड़ा "तुम रही पची-की-गधी।
 हजार बार कह दिया है कि लुबेध का लय कभी भी काम में

“ही साता चाहिए, पर तुम्हारी मोटी बुद्धि में यह बात नहीं बम सजती।”

धर्मिता ने उसे सबभरी दृष्टि से देखा। वह दृष्टि उड़ती हुई गुमनाम बाने के पम्बारे को खूबती हुई लल के चारों घोर छिन्ने छीटों पर धरु भर रही घोर बम बज पर बाकर रुक गयी। बर धरु वह उसे देखती रही बाव में वह बिना कोई उत्तर दिये बग धोने लयी। बग को साक दिया और यथास्थान रस दिया।

बग का रचना या क्रि सुधेय सपका। मटके के बारणु उनके बास का धमका पुष्पा समाट पर धा गया। बेहूण धारक हो उठा। मरीर में हस्का-मा कर्म भी धा गया। उनसे बग को हाथ में लेकर उसे इस तरह देखा जिस तरह निगाही हत्यारे के घून भरे बाहू को देखता है। वह बोला “इसे बाहर क्यों नहीं चेंकती? क्या हमने सारे पर को मारेगी? हजार बार कह दिया है कि तुम्हें पायरिया है।

धीरे उसने बग को बाहर चेंक दिया। भयका यही पर सारम नहीं हुआ। बग को लेकर जो भयका धारंभ हुआ या उसने उनके समाम बीचम के प्रदम पृष्ठों को खोप डाना। माँ-बाप चिन्ता-अचिन्ता रूप विषय मन्म धमन्म कोई भी पहुँचू ऐसा नहीं बचा जिसको लकर एक दूमे को खनीय न किया हो। उन विस्मृत बटनाओं का भी उल्लेख विस्तेरण दिया गया जिनकी उन प्रसंग में कोई धाबदयलता नहीं थी।

जैने-गुरेन ने धर्मिता से कहा जब मैं लिन्नी गया या तब तुम्हारे माई ने मुझ से तमीत्र स बालबोध भी नहीं की थी और मुझे धरेता छोड़कर बलर बना गया या मुझ हो तो उमी को बहिन! तमीत्र मुझ में धायेगी कहीं में?”

धर्मिता यह सुनकर लज उठी। धपने हाथों का मटका देनी हुई वह बोली “धीरे मैं तो सातवीं रात को जा धायेने हाउ धपमानित हुई थी। मैं पूरानी हूँ कि धप्य उम रात देर में क्यों धाये व। धरगब में खूबने हुए धायेने दिग्ने धर्मिबान ने कहा था कि दानिध मैं धिन योगानन के साथ पाटी में बना गया या। मिठ योगानन बहो खूबटा

की इगना ही बना मैं जहर गाहर मर जाऊँगा। तेरी बहू चायन है वह मेरे रण की बूँद-बूँद की चायनी। क्या तुम्हें संसार में दूनरी लड़की नहीं मिली थी जो इन हठी घोर वीरता की सोचकर सायी। तुम क्यों है ? बोलती क्यों नहीं ? तुमन बेगी जिन्दगी को तबाह कर दिया।”

“घाविर बात क्या है उसने धनवान बनते हुए कहा। इस समय उसकी मुद्रा निरालम सहज भी घोर निरमय में भोहूँ टैरी हो गयी थी।

“बात क्या हो सकती है। यह राह है न मुझे जिन्दा नहीं रहने देनी। पुसा पुसाकर मारोनी। पर मैं अब जहर दूसरी छादी करूँगा।”

जो तुरन्त भाँप गयी कि मामला गरीब है। घत उमने अपने घाप को बिसकुम धनवान घोर निर्दोष बना लिया। उसने यह भी स्वीकार किया कि अगर उसके बाप की अठिम इच्छा का ध्यान में होता तो वह यह रिश्ता कभी नहीं करती। ममा चायस्यों में सहशियों का कौन-सा अभाव है ? यह तो ठहरी मेंट्रिफ़। एम ए भी ए पास भी एक हजार सड़कियाँ मिल जाती हैं। और उसने धमिता को भी भर कर नागियाँ की। चायियों के कारण वह अपने बेटे की बोड़ी तानुमुति प्राप्त कर रही थी। उसका दुस्सा घोड़ा ठंडा पड़ गया और उसने उदात्त स्वर में कहा “मैं उसके रहते घर नहीं जाऊँगा।”

“अब क्यों नहीं धायेगा। पर उस भगवानु का नहीं मेरे पति का है। हूँ, तुम उसने बातचीत मत करना।

साथ में कहा से लौटकर धमिता का लुब अभी-जरी मुनायी। घाब धमिता भी बड़क छटी। बभी बुरा पूट पड़ी और जब साथ में उसे भगवानु कहा तब धमिता अपने हाथ का विमास अभीन पर पटककर बोली “भगवानु मैं नहीं भगवानु है घापका साहना।

मेरे तो साथ पीड़ी में भी कोई भगवानु नहीं था।”

“और मेरी जोरहू पीड़ी में भी कोई लीचे बोल बोलने वाला नहीं आया।”

“रहने दे रहने दे। क्या तेरे बाप में तेरे बाबा को मरान के भजके

के लिए नहीं पीटा था ?"—मीया धीरे सख्त धायेप था । तीर की तरह धमिता के रूप पर सन गया । उसके अन्त में सुधन उठ गया हो । पीड़ाप कोष था । वह फुटकारती हुई बोली—मेरे बाप व माता मेरे पापा को पीटा हो पर तुम्हारे पति ने तो अपने भाई को जहर देकर माता ताकि वह सम्पत्ति का बँटवारा न करा सके ।"

तीर ने भी मयानक ये बात धमि-बाप सम थे । नाम धारती थीन उठी—“तुप रह मुँहछटी । धीरे धीन निरवम-भी गही हो गई । उसका स्वर धमक्य हो गया । पाप की छाया से नूननिर्वा मयानक मयने मयी ।

धमिता दीवार पर नजरें जमाए सड़ी थी । सात की मुझा बितनी बंधकर थी । यह उसने नहीं देखा । वह सिर्फ इतना जानती थी कि उसकी बात ने मास को परास्त कर दिया । सास की बोमनी बन्द कर दी है । उसने पहलू से धरनी सास की धीरे देखा । उमके धपरो पर धमापाष ही बुटिम मुस्कात बिगार गई । उस मुग्धान के धातुति में धी का नाम कर दिया । नाम की मन-स्थिति डाँवाडोम हो चुकी । वह धपना पाँव पटककर बिस्मा पड़ी—“दाँत निभानती है बेरजा की तरह ! बेराम बदतमीज !"

‘सधी बात कहधी सगनी है ।’

वह हवा की तरह अपने कमरे में धा गई ।

उसकी मास धारती पत्थर की तरह गही रही । वह धरने मन की निरुष्ट मानियों की जवान तक नही ला मयी । समकी पेशमा को, उसक ही धपार की धतियों के दबा दिया । वह पागल-सी मुँही-भी बड़ब उठी ।

थोड़ी देर के पार वह धमिता व कमरे में गई । धमिता पट्टी भीर में लोयी हुँ को । उसे लगा कि यह एवदम होगी है । इतना धपदमे के बाद ऐसी गही मो । धान्नी बेबनो के मारे लो भी नहीं मरता । वह बीचे धनर गई ।

गौतम का बटवैला घाँबल चँल गया । अमिता धात्र अपने कमरे के नीचे नहीं उतरी । वह अभी तक छोई हुई भी रँग धात्र उसके मन का विपुल मध्य धाम हो गया है । पूरे युगान्त के बाद धात्र वह मुख की नीचे सोई है । क्यों से उसके बँके तब-यन को सख्या सिधाम मिला हो । कौमाहम भरी भीतरी तु सति की नीरबता प्राप्त हुई हो ।

भारती बड़ी देर तक उसकी प्रतीक्षा करती रही । मौकराभी ने साँक के कार्यक्रम की प्रारम्भिक तैयारी कर दी थी । प्रारम्भिक तैयारियों के परचात् अमिता महाराजिन के साथ रसोई में प्रवेय कर जाती थी । साय राता बनाती थी । पति को बर्ष कुलका शिलाना उतवा बम या चाहे बति राय को बाराह बने ही क्यों न लीये । इसके विपरीत धारती लाना याकर सो जाती थी । क्यों से उसने दूहकार्य में तनिक भी लह्योब नहीं दिया था । धात्र अब अमिता को नीचे उतरते नहीं देया तो वह कुछ बबरार्ड, क्योंकि महाराजिन भी नहीं धारि थी । एक बार वह फिर ऊपर कई पर अमिता की बहरी नीर से सोया हुआ गया । उसका मन घायबह से मर गया । कहीं अमिता ने कुञ्ज का तो नहीं मिया । उसने सहमते सहमते अपने दाएँ हाथ को धाँबे बड़ाया धीर उसकी नाक के धाँबे रोक दिया—। नाक से धर्म नाँन धा रही थी । उसने इतमिनाम की साँब ली । नीचे धाकर वह बैठ गई । जैसा कि हुनेचा भयडा होता वा धीर साँक के धायमन के साथ ही वह अगडा समाप्त हो जाता था पर धात्र स्थिति भिन्न थी । अमिता नीचे उतरने का नाम भी नहीं ले रही थी । साँक का घाँबल धीर गहरा हो गया । क्यों के ऊपरी हिस्से पु बमक में जो-से गए । तब धारती का रूडा-सहा धर्म जाता रहा । वह बूल्हे का साथ बरा भी नहीं सह सही । मन्ना पडी । क्वाला की कीपती बर धाइवों में उसकी धाकुलता स्पष्ट भनक रही थी । धासिर वह बाहर निकली धीर उसन कीच के मिलाठ को धोर से पटनकर मिया दिया । मिलाठ के टूटने की धाबाज से धाँबन गूँज घटा । हुकने छोटे-छोटे रूप में बिकार गए । किन्तु अमिता नीचे नहीं उतरती । वह धाँबे बनाती हुई

बाहर धाई। लपरबाही से उसने नीचे की घोर देखा घोर फिर इत-
 बिनाम से कमरे में घाकर बापस सेट गई।

घारठी का धन नई भावना से सज्जित हो गया।

“घात्र रंग बदला हुआ है।” “उसने मन-ही-मन कहा ‘हां तो
 होता रहे। मैं इसका माया ठीक किए बिना थोड़े ही रुंघी। घात्र
 कमला होकर रहेगा। जकर होकर रहेगा।”

बहु नाम बरती रही। सुमेग घाया। तब तक इसका सारा शरीर
 बसीने में भीम गया था। घात्र के निरन्तर ताप के कारण उसके मुख
 का रंग ठंडि की तरह हो रहा था।

“मां घमिठा कहाँ है? सदा की तरह उसने पूछा। शान-भर के
 लिए बहु घम्यरत प्राणी की तरह भुन गया था कि घात्र का भयङ्गा
 सदा भी घपेसा बहुत घम्पीर है। फिर शगका मस्तक संशोध से भुन
 गया। जमन घपने घापको बचाने के हेतु कहा ‘जल से महापत्रिम से
 घाना परबा सिवा करो। मैं जमने हाप का सा सूंघा।”

बहु घात्र घपने कमरे में नहीं गया। नीच ही कपड़े बदलने लगा।
 घाना जमने निर्रं मां के मन को कष्ट न बर्हुने इसलिये घोड़ा-सा साया।
 बाद में बहु मोने के लिए घनय कमरे में बसा गया। बहु घत्री बिस्तरे
 पर लेटा ही था कि बहु सोचने गया कि उने घमिठा को मताने में क्या
 घानन्द घिमता है? हर रोज मड़ता है हर रोज उसे प्रेम करता है।
 बकर उसके मन में कुछ बिह्वनि है किनी को मताने में उसे घानन्द की
 परमणि होती है? बेबापी घमिठा! मय जमने बिना मैं रङ्ग भी
 नहीं बरता।

घत्री घमिठा के जमने कमरे में प्रवेग घिया घमिठा के मदन
 घर्षान से घौर जमने बेहरे पर महा की घपेसा घात्र घनूब बर्य व
 बंधीरता बिराज रही थी। एक देमा घभोगा घानोक को मनुष्य के
 घान्तरिक घानन्द का प्रतीक हो मरता है। बहु गुरबाप बंट गई। जमने
 घाहिने-घाहिने कहा—मैं घात्र तुम्हें सपट का है बरूबे घाई हूँ

एक बात ।

मुझे मे प्रश्न मरी दृष्टि से धमिता भी घोर होगा ।

—मैं यहाँ से जाना चाहती हूँ । मैंने भरपूर प्रयाग किया थापर वह प्रयास आपकी घोर से भी हुआ तो विन्तु एक युग के बाद परिणाम यह निकला है कि हम आपन में एक भुती दम्पति नहीं बन सके । मुझे तुम पगल नहीं हो घोर नून्हें मैं । कारण है मन की दूरी । मन की दूरी मन से ही भरी जा सकती है । पर हमारे मन की स्थितियाँ ऐसी रही कि वे दोनों दिल की बहारसीतारी में बन्द हैं घोर मजबूती के कारण हैं।ते रोने हैं दुनियादारी निभाते हैं । घत धम मैं सदा-महा के लिए आपकी छोड़कर जा रही हूँ । बुद्ध और ब्रह्म के दर से मैं ऐसा बरवध जीवन आपन नहीं कर सकती । इनमे यथा है कि मैं किसी तरह उन एक छात्र को भी प्राप्त करूँ जो मेरे गमस्त गरीब सतीस को गुल-मनोप पहुँचा सके । जीवन बहुत बड़ा है और जीने के बावरे भी घनेक हैं । पता नहीं हम बन्धन-मुक्ति की भावना और यह धरम्य साहम मुझमें घात्र से क्यों पहले मुहागरात के दिन क्यों नहीं आगा ? "मुझे चाहिए या कि मैं आपसे घाना सम्बन्ध-विच्छेद धमि के महामर्जों की सारी में सम्पन्न अनुष्ठान के गुरन्त बाद ही कर सैनी ताकि मेरे जीवन का एक युग ध्वंस नहीं होता । तैर बरगे जाने सभी सचेत । हूँ मैं आपकी विरबाध विभाती हूँ कि मैं आपकी प्रतिष्ठा पर कोई भीबड नहीं उठानूँगी ।

मुझे बँठ गया । सतका सताट पतीनों की बूँदों से बमक उठा ।

उसने इतना ही कहा "तुम" तुम यह

—मैं ठीक कहती हूँ । यह बन्धन यह पतीस-नारीस का गारा ध्वंस है । ध्वंस है अरिबान बनकर आत्मा की सभी घागाधों व तुष्णाधों को धारना । घाबिर यह सब क्यों टिल लिए ? घाबिर हर कोई सुख चाहता है और सुख दोनों के सम्भव्य बिना नहीं । मुझे बाबू ! तब्यों मर्जों के बन्धनों की सार्थकता ही सभी है जब हमारी आत्माएँ तृप्त हों । मैं सभी का रही हूँ । घाप मुझे सहजता से भुला सकते हैं । सारी भी कर सकते

हैं क्योंकि मैं भी ऐसा ही निश्चित कदम उठाऊँगी। नमस्त !”

एक मून्केम के माथ घमिना धीरे धीरे नीचिनी उतर गई। मुझे जो समा पूरे एक मुन के घस्याचारों का दवसा घमिना न उससे ले लिया है। उसे पराजय दे दी है। वह दीड़कर बोला 'नहीं घमिना नहीं तुम मठ जाओ।’

पर घमिना नहीं स्वी। मैं जाऊँगी घात्र में तुम्हारा पैरा रिपता सरम।

पागल न बनो। घमिना। मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकता देखो पति-शरित का भगड़ा बनना ही रहता है। गुम तिन का ताड़ न बनाओ।”

“मैं इस जीवन से ऊब चुकी हूँ। मैं यहाँ से जाना चाहती हूँ।

पर मैं तुम्हें जाने नहीं दूँगा। घमिना घमिना लोम बना कहूँगे तुम्हारी बीबी तुम्हें दीरपर बनी गई। धाग गई। मैं तिमि को घपना मूँह दिगाने मायक नहीं रहूँगा।

धीर मैं भी इस तरह का पीडामय जीवन नहीं जी सकती।”

वह बोले बामरु की तरह धपना घपनाच स्त्रीशार करके बोला—
‘पता नहीं मैं तुमने भ्याड़ा क्यों करता? दरममन मैं तिमि हूँ। मुझे एक बार गिऊँक बार। घात्र मैं दर गया हूँ। घमिना।—
वह मुझ टाटर बीना—ये भगड़े हमारे जीवन से घररपुण नहीं है। निराट जीवन क मे धपने-पुरे बिगु है जो हग हस्के मोरों में भी मूण जाते है मिट जाने है।”

धीर मुझे में घमिना के हाथ को मरकुनी मैं पकड़ लिया।

मुझा मुरकग पड़ी। जमकी तामरु में नहीं घाया कि वह घात्रमी तिम तरह का है? वट पर की नीचिनी बचम बरनी हूँ मोच रही की ति देपता के बान इतनी दीनता क्यों? क्यों? एत बमता प्रम उनके मर में तुम्हारे की तरह घटपने मगा।

भाभी ने विनीत स्वर में कहा 'बाप भीतर बनिए, यहाँ क्यों बैठे हैं ?'

मैंने साहबिन को लाना लमाया घीर भाभी के पीछे हो लिया । इतनी देर के उपरान्त भाभी पर मेरी पहली बार नजर पयी । मोटी घीर मेंसी छाड़ी पर मने तरह-तरह के छीटे एक हाथ में मासटेन घीर एक हाथ में सातवां बच्चा । सूसा-भूसा घरीर घीर मदे बाँध । वह मेरे धाँसे-धाँसे पाँवों को नाप-नाप कर बस रही थी घीर मैं कुछ लोया-सा कम जटा रहा था । भाभी का वह रंग घीर रूप घरीर धाँसों के धाँसे सहसा नाच जटा । चिबचकर की छावी में मैं भी लम्बित हुया था । बड़ी घूम घाम म बरतत पयी थी । पानी की तरह रुपया टर्ब हुया था । तब मैं घीर चिबचकर सहपाटी बे । बाँधकी बलास में पड़ते थे । उन्न होयी यही तरह चौरह बरें ।

चार बरें के बाद उसका 'टीका' हुया था । हम दोनों ने लूब मौज मजे किये थे । दुहहन को घर से धाँसे थे । दुहहन घीर चिबचकर की उन्न बरबर ही थी ।

तब भाभी मारतण्णी के घम-घम से चौंरम टपकता था । मोहसे की सिबसा उन्नका रूप-रचन करने के लिए ममा रहती थी । हर कुँबारा पणबीर माता से यही प्रार्थना करता था कि ऐसी ही सोबली-मोबली बहू उन्हें मिले ।

घीर चिबचकर भी उस समय धाकास में जड़ता था । बाप की कमाई बहुत ही मुकिलत से रहती है । चिबचकर पढ़ाई लिखाई छोड़कर भाभी के रंग-रूप में रम गया । परिणाम यह निकला कि बाप ने उसे एक पंखारी को दुकान में काम-बन्धा सीखने के लिए लगा दिया घीर उसे धारवासन दिया कि वह बँन ही इस पजे में निपुण होया बँसे ही उसे पंखारी की एक दुकान जुनबा भी धायेयी ।

पर बिबि की चिड़म्बना कुछ घीर ही थी । छान भीठते-भीठते चिबचकर के पिता भी का हँसे से देहान्त हो गया घीर वह पहली लड़की

का बाप बना ।

तक़दीर का नामा पलट गया ।

इस दिवस मृत्युभोज करने के बाद निश्चयकर को यासूम हुआ कि उसकी बहू के सारे खेबर बिट नये हैं और वह किताबत परीब हो गया है । पर उसने हिम्मत नहीं हापी । उसने अपने मेठ से साफ़-साफ़ कह दिया कि वह सब उसका रोज़गार खोज हें । रोज़गार खुसा तीस रुपये । वह उम्हें लाया भी पर बीया बनन है उसके अनुसार वह पइस रोज़गार बहिनों इत्यादि में बाँट दिया गया ।

बाप की बरसी के बाद उसकी माँ और बहू में झगड़ा होने लगा । बात-बात पर तू-तू और मैं-मैं । तब पास-बहीसियों ने उन्हें अलग घर में बसवा दिया ।

मुझे एकदम नील देखकर भाभी ने पूछा 'क्या सोचने लगे ? भीतर घाबर चुपचाप ही बैठ गये ।

मैंने चौक कर कहा, 'तुम सोचने लय गया या भोजाई ! और मैंने बाप के प्रसंग को बयलते हुए कहा 'आपको येँ सीपय है । सब-सब बहिणका कि निश्चयकर घर में है या नहीं ?

है । भाभी ने टुटते स्वर में कहा । मेरी हट्टि भाभी के बेहूरे पर बन गयी । भाभी की धोनें पेंस पयी थीं । बेहूरे की हट्टियाँ उमर कर उमरे पुग के प्रति धरबि उतरम कर रही थीं । गोरे बालों पर बुनाई की पपलू पहरे-पहरे दान बनने लगे ब । एक बार मैं फिर सोच बँटा यही वह सुरती है जिसे मैं अपनी पदिनी कहूँ या । मेरा मन बेचना में भर माना ।

'उमे मेरे नाम दिजो ।

भाभी बीपूर पयी । पहले उनने एक दिया जलाया । सामर वह भीतर जाता बना रही थी । बाँ में वह लालटेन को एक पीले पर रखा पयी । उभरा बहा लरवा घा बना । बार बच्चे बकिहान मने हुए थे । बोरी देर में निश्चयकर और की तरह दरब दिजे हुए घन में नीले

पतरा । उसके निर पर छोटे-छोटे केच के बर जोटी नी-पर खिलनी नी ।
गरीर दुबला-पत्रना या धौर भूँले घनी छोटी-छोटी ही धी बनी वह
घपने घोर के अनुमार मूर्खों के 'कट' को प्राप्त बरसता ही रता है ।

वह मेरे पाह धा कर बठ गया ।

मैंने उसके बहरे बर तैज निगाह जमा कर बुझ क्यों है तेरी
जीवन इतनी गरारब क्यों हो गयी ?

वह चुप रहा ।

चुप क्यों है ? बोसता क्यों नहीं ?

जमा करके टीसू हाथ बहुत तंग है ।

फिर जपार नहीं सेना था । बेमेवाला तो घपने रुपये लेकर गिया ।
गायद तुम नहीं जानते घादमी एक बल्ल तो कमाता है बर ध्याज घाटी
पहर ।

मैं जानता हूँ पर क्या करे भाई ! तुमसे कुछ धिया हुआ तो नहीं
है । यहाँ हम सबको पूरा घाटा भी नहीं पड़ता । पबहतर रुपये मिलते
हैं । जो प्राणी ! तुम्हीं बताओ मैं क्या करूँ ? मैं राम के मार बाहर
भी नहीं निकलता । तुम्हारे सामने भी नहीं जाता । बड़ी राम धौर
झिझक-सी मवती है ।

इसलिए ही तो बड़े-बुजुगों ने कहा है कि मूरखोर बनने के पहले
घपने किस को परबर का कर जो नाते-रिस्तों को भून जाओ धौर
बमूनी के समय सिर्फ बमूनी करो चाहे कर्मचार के मुल से निवाला ही
बनी न छीनना पड़े । मैंने एक लम्बो साँस नी धौर बक बक करती
हुई साइटेज की बती पर घपनी इटि जमा कर मैं फिर बोगा मैं सम्भूसं
रूप से ये नीतिवा नहीं घपना पाया । फलस्वरूप मैं एक सज्जल मूर
नार नहीं बन सका । जब बात यह है कि मैं निरट मविष्य में इस बंधे
को छोड़ ही रहा ।

सिबसंकर ने कोई जतर नहीं दिया । वह नीनी परेन किये हुए
बीठा रहा । एकदम मौन धौर निरबल । वही की अपेक्षा जसकी परेन

बहुत पठनी हो गयी थी ।

‘तुम कोई दूकान नौकरी क्यों नहीं करते ? मैंने फिर कहा ।

‘बहुत बेचारा की पर कोई जुगाड़ नहीं बँटा । पिता जी के मरने के बाद मेरी एक इच्छा थी कि मैं घरती कोई दूकान खोलूँगी । मैं इस व्यापार की रम-रम पहचानने लगा हूँ । बड़ा ही सामग्री व्यापार है । चाकरी छात्राणी स चार-पाँच ही रुपये कमा सनता है ।

‘फिर तुम दूकान खोलत क्यों नहीं ? मैंने चष्मों पर टबाब किया ।

‘दूकान खोलना हँसी-ठेका नहीं । कम से कम एक हजार रुपये चाहिए । मेरे पास एक दूकान का पूरा प्लान है ।

बहुत मरी बात मून दिना ही उठ कर भीतर गया । मेरा मन उसकी दयनीयता के कारण कुछ उदास हो गया था । लानटेन की भक भक बंद हो चुकी थी । बाहर धँबेय घोर गहरा हो गया था । यमी में कुत्तों के जग मे बड़ा हो-जन्मा मचाया । मोम उर्ध्व पाम्थ करने के लिए घोर भी जोर से ‘डिरे डिरे’ कर रह थे । घोड़ा दैर में कुत्तों का जग समाप्त हो गया । मरी हृष्टि समके पर की शीशारों पर बयी । बन्धी घोर बमह बगह पनदा उगरी हुई । मेरा दम पुग्ने लगा । इच्छा हुई कि यहाँ से जना जाऊँ ।

तभी उनक दो बच्चे मेरे पास आकर गड़े हो गये ।

देहूँग रग ! पनने-दुबने ! गदि ! मैंने !

जगहों पर अबहू जगह पारिदाँ दी गई । घाकर हीने मुगो मे मुझ निहारन लगे । मोप जाने हूँ कि बापक देवता का जग होते हैं पर मेरा मन उन्हें देखकर पल्ला मे कर पाया । मैंने चाँगे लगे कर उन्हें भीतर घाने का घारेय गिया । घाबाब मँह म हमनिए मड़ी निजानी कि का एक-य घागिठना जानी जालेयी । बापक उगाज-उगाज से नग्ने-तहूमे मे भीतर बने गये । उनही घाँगों मे घाना की जग पररजता घोर दीनता थी ।

बड़ी घमण लकाँउ !

भीतर से सखी छोड़ने की धापाज घायी । सपा कि याभी रबोई बनाने में व्यस्त है । अभी विरगकर हाथ में कुछ कागज लिये हुए था गया । वह मेरे सम्मुख इनमिमान ने बैठ गया और उसने सामटन नीचे ऊपर पर रखा ही ।

बोसा यह मेरी योजना है । एक-एक चीज मिगी हुई है । सब टीडू मेरा एक बड़ा सपना था कि मैं पंगालियने का काम शीघ्र कर पानी एक दुकान लोभूया । बाबा (विता) ने यह धारवागन भी दिया था । उन्होंने कुछ पू भी भी बसा की भी पर सतरी एवाएक शीत ने मेरे इरासों पर पानी कर दिया । फिर भी मेने हिम्मत नहीं हाथी । सोचा बोड़े शिनों में कुछ पैसा इकट्ठा करके दुकान खोल लूँगा । देखो उसने एक कागज पागा । कागज पुराने बहीपागों का था । कागज बुकनों की कोर्न पुरानी बही पकी होमी । उनमें यह कागज रियाया । उसमें शिदिमा की टीकों की तरह टेढ़-मेढ़े पत्रों में लिखा था—संकर मंडार !

यह मेरी दुकान का नाम रहेगा ! नीचे लिखा था—किराने का सारा सामान सस्ता और बढ़िया टीक मूल्य पर यहाँ मिलता है ।

दुकान में कोटपेट पर ही लूँगा बमोकि पहुर का पुराना बाजार एक तरह से उठ-गा ही गया है । चिकी-बट्टा बंद-गा ही है । माहक सब गीबा यहाँ माने सबा है । इसका एक कारण यह भी है कि परणाबियों ने जाने-अनजाने सबी को उबार देना शुरू कर दिया है । ये लोग बड़े सिस्वाली और धारवागन हैं । कमेजा भी बहुत बड़ा रगटे है । लोग देते हैं मास । और धारवागन को बात यह है कि लोग देर-मदेर उनकी रकम पणूँबा भी देते हैं । सब टीडू यह सब बहुत रुपया कमाते हैं । मैं तुमसे अपने बच्चों को सीगब धाकर कहता हूँ कि तुम मेरी सपना-सी मचर कर दो तो हम बानीबारी में सख्या पैसा कमा सकते हैं ।

और सब उसने अपनी संपूर्ण योजना मेरे सखस प्रस्तुत कर दी । कितनी बोरियाँ मेने की कितनी बोरियाँ बीनी की और कितनी तरह

थी घोर बस्तुनै ! मैं उसरी माकूस यात्रा दागकर बिन्दित रह गया ।
 बीजना वास्तव में घण्टी थी ।

'कहो तुम्हारी क्या राय है ? उमने मेरी राय जानने के लिये पूछा ।
 मैं इस पर बकर सोचूँगा ।

'हाँ-हाँ बकर लोचना । तुम मेरे बहुत पुरान घोर वक्के दोस्त हो ।
 मेरी घोर तुम्हारी दाँत बटी रोटी है ।

म बुद्ध नहीं बोना । मेरी घड़ीब स्थिति हो गयी । घाये प नमाड
 बड़ने घोर रोना मसे पड़ गये । मैं उठने को घानुर हुआ तभी उठने
 मुझ रोठ लिया घब भूने क्यों जात हो ? गाना तुम्हारी मौजारी के
 बना लिया है ।

'अभी मैं अभी गाना नहीं गा करता ।

तभी अभी घा गयी । घाने हा वह बुद्ध उठाने भर ध्यर में बोनी
 हम बरीबों का गाना उन्हें घण्टा नहीं सगेगा ?

मने ध्यरना मे विनमर स्तर में कहा नहीं नहीं मोरार लेना मत
 बहो मुझ मऊ-यो जयह बगुनी करने बागा है । व्यापार म देर नहीं
 बननी । बुद्ध कि मये फिर घागामी हो मने तब नहीं मिलता । म
 घगण मुझमें बहो की बन्नी मे उन मबदे मति एक घण्टि-भी मलम
 कर पी थी । मदगी घोर घुमन । लिना गरी बना गाना इनका गाना ।
 म बापकेगर क्या र होये घोर म बिन्दित देनी थी । म दून वरान मया ।

भाभी मे हान ओढ़कर बड़ी म मया मे बना घाय मन्नी घर्ष
 पर बकर घगण रोमे । यह देना-बना मे ध्यरान मोगाने । घाके गामर
 में मे दून बूँदे निजम भी बायेगी ना रोई हर्ष नहीं गाना पर उन बूँदों
 में हमारा बेट उका भर आयेगा ।

'घात प्रयोग लों म म छोटी मोगी दुवान दगा दूगा । मेरे मुझ
 मे उनही सिरी हुई दगा मे प्रभावित म बाउने दून भी यह बाव निजम
 बना । म मेरी घारणा के बिन्दित उसरी गरीबी म विजय थी । मैं बनी
 म बाउर निजमा मया ।

एकाएक भाभी को उल्टी हुई। वह मामी के पास बैठ कर कैं करने लगी। मैं पूछे सोसकर उसके पास सड़ा हो गया। जबकि मैं उसे बड़े भयानक रूप से घा रही थी। लगता था कि उसका बसना बाहर या बायेंगा। त्रिभंगकर उसकी पीठ पर हाथ फेर रहा था।

मैंने पूछा 'क्या हुआ भाभी को एकाएक ?'

भाम्मी जल्दी जल्दी बुस्ते बरक भीतर भाग गयी। बाँटे-जाते उसके पोटिठ बेहरे पर मैंने लज्जा के भाव देगे।

'क्या बात है त्रिभंगकर ? मैंने उससे दुबारा पूछा।

वह संकोच से बबुता हुआ सोसा 'जब इसके पैठ में बच्चा होता है तो यह बैबारी घण्टी तरह गा भी नहीं मरती। इसी तरह की बकिटियाँ हरे होंती रहती हैं।

'भेकिन ? मैं बिसमय से स्थिर का स्थिर रह गया।

'क्या कर्क ? ईस्वर की मारी मेहरबानी मुझ पर ही है।

'किर तुम्हें धीपरेसन करवा मैना चाहिए।

'हर बार माबता है पर भंडों के मारे बम मारने की भी कुरलत नहीं मिलती है। तुम कुछ बर का बंधा करवा सो तो बीबन को भी ब्यबकिबन बरक ? अभी तो बिनाग भी छरी डग से काम मरी करटा। बस तुमसे हाथ जोड़कर बिनती करटा है कि मरा सपना पूछ कर दो। तुम्हारे मतीनों की सोबय है कि मैं तुम्हें हर महीने घण्टी रजम साथ की हूँगा। मैंने देखा कि उसकी घाँवें बीबी हो गयी हैं। कब्र्या के उसकी घाँवटि को अपने म घानुठ कर लिया है।

इसके बाद वह हर दूसरे-तीसरे दिन मेरे पास घाने सगा। मैं उसे टामता रहा। कभी मैं कहता कि बिचार कर रहा हूँ कभी कहता कि फिटा बी से पूछा या घोर कमी कुछ। बस्तुतः उसकी बरीबी के कारख मुझ उसकी इमानशाघे पर बरक हो गया था और मैं बार-बार इसी हट्टि में सोबता था कि कपूर पाटा हो गया तो मैं किससे हूँगा ? घोर मैंने घंत में बससे साथ इम्कार कर देने का निश्चय कर लिया।

यह घटना दो माह बाद की है।

बहु रात को अपनी बचुटी से सीटा था। मैं जाता था कर रैडियो सुन रहा था। बड़ा पका-सा था। धनि मारी भापी थीं। अभी गिब संवर से प्रवेश किया। उसका घाममन मुझे घबड़ा गयी लगा। मैंने उसे बैठने तक को सो नहीं कहा फिर भी वह बैठ गया और कुछ देर तक चुपचाप रहा। यह मेरे समर्पण की प्रतीका में था पर मैं घनिष्टता की सीमा को ही लाँच गया। कुछ भी नहीं बोला। मेरा मदि पडा रहा। सोचता रहा कंसा भूत मैंने अपने पीछे लगा लिया है।

बहु ठिठकता हुआ बोला 'क्या तबीयत कुछ सटा है।

मैंने दृष्टते हुए स्वर में कहा हाँ फिर मैं दरं है। हार्मोनिक मय यह था कि हन्नी-हल्की बचान थी।

'आमार से एनालिसिस सा हूँ ?

कोई जम्पन नहीं। मुझ माराम की जम्पन है।

'फिर मैं क्या माऊँ ?

'गुबह !

बहु बसा मया और मुबह फिर आया। मैं पूजा कर रहा था। किन्तो पंरिड मे मुझने गिब जी के पूजन के बारे में कहा था। सो मैं निरपिठ रूप मे उनका पूजन करता था। मुबह-मुबह उम दरिड को बैलकर मेरा मन घन्सा पडा पर मैं अपने घन्म के घारेण-घारेण का दबा कर बोला मैंने गिताजी से बातचीत कर सी है। यह कुछ माराम होने हुए बोये कि उम घान्सी के माऊँ में काम करके क्या घदना दिवाना' निकामना है। पाटा लय क्या तो कौन करेगा ? पचाम मे क्या था बहु तो घमके देने को नहीं है। अब मुझी बहो संवर मैं क्या कर मरना है ? ब्यापार के रग को हम्पा नहीं पान गचना। बड़ी पाटा लय मया तो ह्बारी बोन काम तक भी बंद हो जायेगी। फिर मैं गिता जी के गितानक कोई काम नहीं करना चाहता।

मेरी बानें मुनते ही उमका बंध तापद हो गया और उमकी घाँवों

में निराला भी बहुत पहरी बरसाइयाँ लँर उठीं । उसके झोंठ भी एक झबीब-पी जमर में हील हो नय । बहु धरल बर मुझ दुरा से जलती हुई लीखी नजर में देगता रहा और घल में बिना कुछ बोम ही चुपचाप जमा जया । उतः पेहरे का निवार घसल और लीजतम बा ।

लोक हाते ही बहु मरे पर आया । उनक हाथ में पचास रुपय थे । मुझ उन रुपों को रते हुए बहु एकरम हरिम हूँती के लाय बोला 'आज मेरा सेठ बहुत गुण है । उनमें मुझ पचास रुपय माँपने के गाथ दे दिये । मैं चारूँबा लि इन्हें तुम जाना को बेकर मेरी इमानदारी बर हुए एक को दूर कर दो ।

मुझ इन प्रतिक्रिया की आता ही नहीं थी । डूबी हुई रुपय के मिलने की प्रमप्रता एक मूरसारे को नितनी हो सकती है बहु बात फिरी से फिरी हुई नहीं है । मरी घाणों में जमक आ जयी । मैंने सफक के घन रुपों को से लिया और दिवने लया ।

'टीरू एक सिपी की बूजान बिक रही है । बड़ी मौके की बुराम है । आज जलकर लीदा लय कर लो ।

'मैं तीन बजे के करीब घाऊँगा ।

'मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करूँबा बहु धरसाह से बागा ।

'मैं परका घाऊँगा । तुम बिता न करो । मैंने उस्ताल के लाय कहा । पर मैं उपर नहीं जबा । इन घाज्मिक उपलब्धि के बाब मैंने लय कर लिया कि घब मैं जमे एक पैसा भी नहीं बूँबा । मही कारण बा कि मैं फिर उल्लमे नजरें बचागा रजा । इन तरह कई दिन बीत गये । दिवसंकर ने घब मेरे बहूँ आना-जाना भी छोड दिया बा ।

किन्तु एक दिन अकस्मात् मेंने मइक पर हजबदियों में बकरे हुए दिवसंकर को देखा । मेरी मनःस्थिति बिचलित हो गयी । मैंने उलकी और लाका नहीं और लीबा गलेस के पास जबा । गलेस मेरा और लसका बोनों का मित्र बा ।

मैंने उलसे पूछा 'अरे जलेस दिवसंकर को हजबदियों क्यों जाली

बपी है ?

‘बोरी व घबराव में

‘बिमर्के यहाँ बोरी बी ?

‘घबने मेर के यही : पूर पीब हजार बी । घबरन बी बाठ यह है
कि कुी ठरठ स मार सान के बाद भी रकम नहीं दे रहा है । कहता
है कि मैंने रकम लख कर दी । दगरे, हातात् इमान को कितना बख
दिये है ? मुझ नामूम है कि यह शक्य इतना ईमानदार या कि घर के
बचन बेरकर घबन घामामी को पुन दिन पहले पचाम रपदा पुनकर
घाया या पीर घात्र ? गले पचानाप में दूब मया । बर बिबनित
स्वर में बोला ‘इपर बट बहून दुगी या । घातिर ईमान नर भी ली
क्या ? पुन बी ली एक सीमा होनी है । घादमी हार जाता है परमान
हो जाता है ।

मैंने खाना होन का उपक्रम करन हुए बटा ‘मा’ बिनी को यह
पना नहीं है कि बल क्या होनेवाला है ? ईबर जो पुनारे वही
उत्तम है ।

मैं घबने मकरो बावत ठरठ बनाने की बेटा करजा हुया छाडिप
वर बट मया ।



सनसोहनी

७

द्विपाद ११ १० ११ को रात्रि के ठीक ११ बज कर ११ मिनटों पर मित का बिर-सम्बोधन लिए मिनेज तबाकमित्त घालोचिका सनसोहिनी का देहान्त हा मया था । ठहरिए, देहान्त धर्म का प्रयोग यत्न कर लिया है । मुपायता हूँ—घारमहाया कर ली थी । कारण यत्नात क्योंकि उसने अपने पीछे किसी तरह का कोई त्त नहीं छोड़ा था । सिर्फ मुबह हाट्टा होने पर परोमी सोर्को ने जानर देखा तो उसकी लाघ एक सगूक से सटी पयो थी । नपदे अस्त-व्यस्त ने उससे ऐसा लपटा था कि जान भिजलने के पहुँसे वह बहुत तड़पी थी । अतका हम बड़ी मुश्किल से निकला था । पड़ोसियों के हाथ पुनिस को पकर कर दी कई थी । पुनिस ने लाघ को पोस्टमार्टम के लिए अस्पताल भेज दिया । पुनिस ने उसके कमरे को भी अपने कम्बे में कर लिया था । उसके तीसरे दिन ही उसकी एक चाच भायनी (सखी) का मेरे पास आया । तब तत में उसने कुछ खूबियों का सद्बचान करते हुए मुझे लिखा था— 'वह सनसोहिनी के रात्र की बातें मैं तुम्हें बता रही हूँ । तुम उसे एक बर्ष के बाद प्रकट करना यह उघकी अन्तिम आहिण थी ।'

उसकी घन्टिम ब्याहिन को धब पूरा किया जा रहा है ।

मृगच्छ की घन्टिम इच्छा को पूरा करने का इमार्थ एक तरह का मानवीय बर्तव्य हो जाता है । क्योंकि लुनी व बरवारों की घन्टिम इच्छा का पूरा किया जाता है । फिर इमारी घामोचिरा न किसी का गून नहीं किया ऐसा धरा ब्याम है । पर उसकी धाग मायसी मुझसे गदमन नहीं है । उमदा बहनः है 'उमने एक परिवार का गून किया है वह भी नये तरह का गून कि घादमी मर भी जाए और बमता फिरता रहे । तुम नहीं जानते कि उमकी मीन का कागग उन नम्ह-नम्हे मामूम बच्चों की बद्दुमार्त है । उम मोमी पत्नी के दू का धमर है जो धूपट मं धरने धामुधों को घुता कर धवन पति क कुम्म को सनमोहिनी के धारग गदती रही थी ।' बुध भी हो उमरी बद्दाता मैं धात्र धावक ममन वेग कर रहा हूँ ।

मरा बिरगन है कि धाव मर उम तमाकपिन बिरकुमारी क हिस्से में फिरबरी उमर मने । क्योंकि हम धिनने धारद की मारें मने ही करे पर घुन घुन कर तोडा-मैना के हिस्से बकर पड़ते हैं और उनमे बड़ी मरती तते । इमारी निर्बगठ घामोचिरा भी तोडा-मैना क हिस्से और फिरमी बाते गूब मुनामा करती थी । तीबिए बास्तान म मुहम्बत धाफ नममोहिनी का पदमा शेर धस्तुन है ।

बकान का हिस्सा मैं नहीं जानता और न ही धने जानने की कीमिध की । मिफ नामोहिनी धकमर उदाठ और ममगीन मूट में रहा कग्नी थी कि येर बाव को निमी ब्याहिन थी कि मैं पद-निनकर एक सद्दुग्ध पत्नी बनू । धाने और धरन पाते के कुम के नाम को रोगन बर्हे और उमकी इग्गन धावक को मदाठे । पर धैमे ही वह बी० ए में गृही बीमे हो उमने धाने धाग की तमघा का गून कर दिया । बागग उवाकी नामक घोड़ी को बद्द मगाम मही लगा मरी । और उनमे एक परबून के ध्यागारी के बेटे को धपना निन दे दिया । 'गायर धावक नामिक गद्द के टोच बहा है 'रक पर और नहीं मर है वह धागिता धानिक

भारतान-ए-मुहम्मद चाँक समोहिनी का दूसरा दौर शुरू—

सोहिनी ने इस बार एक भाग्य कवि को दिस दिया। यह कवि वास्तव में उसे सच्चे दिस में प्यार करता था। उसके आवा-मोह में इस बन्धुवत दौर बुधनी-पत्नी सुबती के लिए 'देसन' में बस बहुत नहीं था। कवि उसे अपनी पलकों में बना कर स्वप्नों के समार में रोया रहता था। वह उसे अपने लम्बुग बिठा कर कबिता करता था। दूर दूर फँसी प्रकृति की नुरम्य बहाली पाटियों में वे दोनों किसकारियाँ मारते हुए भावते थे और घाफा के पार एक नये समार को बनाने की योजना बनाते थे।

कवि परब प्रसन्न था। उस बेचारे के जीवन में पहली सुबती आई थी जिसने उसे प्यार किया था। हार्नाकि वह कई बार मुहम्मद के दौर में हार गया चुका था पर इस बार उम्मीद से अधिक उस मफयना मिल रही थी। वह अपने जीवन के साए में अपनी कबिता-कामिनी को गठ पठ संभवाइयाँ दिमाता था और उसकी आनंदपूर्ण धर्मियों में प्यार का सापर लहरता हुआ देखता था।

वह सोहिनी को प्रसन्न करने के लिए अपनी पुस्तकें तक बेच कर उसे सिनेमा दिखलाता था। उसे तकरीह कराना था। उसे और उसकी सखियों को पिक्निकें देता था। लेकिन सोहिनी के नसरे के उरमाइयों वह अधिक दिन तक पूरी नहीं कर सका। नाचारी में कवि इससे बहाने बनाने लगा और सोहिनी को उस पर कुछ ममाहट घाने लगी। उसका दिस उसके झूठे बहानों से ढकने लगा।

“यह कैसा प्रेमी है! न वह सच्चे होटम में चाय पिता करना और न यह बॉक्स में मित्रिया दिखा सकता?” वह उससे नाचक रहने लगी।

कवि उसकी नाराजगी पर पित्रम के हुँतोड़े की तरह हुँम देता था और एक दिन—

“मिस्टर एक्स” पित्रम लगा हुआ था। सोहिनी कवि के पास आई।

कवि किसी बूट के नीचे बैठा हुआ कविता की साधना में निमग्न था।
 लक्ष्मी सोहिनी ने उसके ध्यान को भंग किया। कवि चौंक कर बोला 'हे
 मेरी शालुघ्वारी दाँवों की कुमारी जग से न्यारी मैं तेरी ही प्रतीक्षा में
 व्याकुल था। सुनो—ध्यान बेकर सुनो—मैंने कितना उषकोटि का पीठ
 मिमा है।

सोहिनी कुछ बोले इसके पहले कवि ने पीठ मुनाना शुरू कर दिया—

हे सुमुखि तेरा रूप धनोषा
 बहु बन्दा-मुरज से जोषा
 तेरा मोहन सागर का बजार
 नहर-नहर में मजले मम प्यार
 तू बिहूँये ली मज बहना है
 बहने मगे बामिनी का मोषा
 हे सुमुखि तेरा रूप धनोषा।

सोहिनी पीठ मुन कर बिड़ परई, बहु धामोचना करती हुई बोली,
 "ज छन्द पीर न भाना। मैं पूछनी हूँ कि योगा (नापा) को हिन्दी में
 बताने से क्या लाभ? ऐसी कवि मैं तुम्हारे विरोध में कभी सेग निरा
 हूँ।" यही से उनका नया रूप प्रकट हुआ धामोषिका का।

कवि उद्वेग पड़ा 'धरे बामिम। तू मेरी कविता क्या मेरे रूप
 की बाननापों की धामोचना करे तो भी मैं कुछ नहीं बौखूँगा। तू अपने
 पीर तो बना।

"बकवान बन्द करो।" बहु भड़क उठी। कवि महसूस गया। दुकुर
 द्वार धरन भरी निगाह से बहु सोहिनी को देखने लगा।

सोहिनी लीओ घण्टर की तरह दबदबे क नाप बोली 'तुम्हें धान
 मेरी धामा माननी हो बड़ेपी।

उनका हावा बहना था कि कवि ने उमरा हाप अपने हाप में ले
 लिया। सोहिनी का हाप धरना था। धानक नममें नारी खेती जोय
 ना नहीं की। फिर भी कवि ने उन पर धाना हाप केर कर कष्ट

भारतान—ए—मुहम्मद चाफ सतमीहिनी का डुमरा शीर घुस—

सोहिनी ने इस बार एक माझुक कवि को दिला दिया। यह कवि वास्तव में उसे सच्चे दिल से प्यार करता था। उसके धारमा-भोके में इस बन्सुरत शीर दुपती-पतली मुचली के लिए 'देमन' से बम महत्व नहीं था। कवि उसे अपनी पलकों में बना कर स्वप्नों के मसार में लोभा खड़ा था। वह उसे अपने गम्बुज बिठा कर कबिता करता था। दूर दूर फेमी प्रकृति की नुरम्य पहाड़ी पाटियों में वे दोनों कितकारियाँ मारते हुए भागते थे और पाकाम के पार एक नये मसार को बसाने की योजना बनाते थे।

कवि परम प्रसन्न था। उस बेचारे के जीवन में पहली मुचली पाई थी जिसने उसे प्यार किया था। हालाँकि वह कई बार मुहम्मद के शीर में हार गा चुका था पर इस बार जम्मीर से अधिक उसे सफलता मिल रही थी। वह अपने घोषण के लिए से अपनी कबिता-कामिनी को गत गत प्रपञ्चाहवाँ दिखाता था और उसकी आकर्षणहीन धँसियों में प्यार का तामर महुपता हुआ देखता था।

वह सोहिनी को प्रसन्न रखने के लिए अपनी पुस्तकें तक बेच कर उसे सिनेमा दिखलाता था। उसे तफरीह कराता था। उसे शीर उसकी सन्धियों को विकनिकें देता था। लेकिन सोहिनी के नबरे व परमाइशें वह अधिक दिन तक पूरी नहीं कर सका। सायापी में कवि इससे बहाने बनाने रागा शीर सोहिनी को उस पर भु मसाइट घाने लदी। उसका दिल समझे झूठे बहानों से ढकने लगा।

'यह कौता प्रेमी है। न यह सच्चे होटम में चाय पिना सकता शीर न वह बॉक्स में सिनेमा दिखा सकता?' वह उससे नाउज खूमे सही।

कवि उसकी नाराजगी पर फिल्म के हँसोड़े की तरह हँस देता था और एक दिन—

'मिस्टर एक्स' फिल्म लगा हुआ था। सोहिनी कवि के पाद माई।

कवि किसी वृत्त के नीचे बैठे हुए कविता की साधना में लिप्त था।
तभी सोहिनी ने उसका ध्यान को भंग दिया। कवि चौंक कर बोला, 'हे
मेरी प्राणप्यारी सोहिनी की दुनारी बदन सन्तरी मैं ठेके ही स्त्रीणा में
ध्यातुम था। मुनो—ध्यान दखर मुनो—नि किन्ता उबकालि का लीउ
निगा है।

सोहिनी कुछ बोप इसके पहले कवि ने दीउ मुनना मुक कर दिना—
है मुमुनि ठेरा क्य धनोवा
बह बला-मुरज से बोवा
ठेरा यौवन मगर का बहार
सहर-महर में मचने मन पार
तु बिहोस ता मच कइता है
बहने लये धामिनी का मोवा
है मुमुनि ठेरा क्य धनोवा।

सोहिनी दीउ मुन कर किा दर्ई। बह धानाचना कइती हूँ बाणी
'न धन धीर न दाता। मैं पूषणी हूँ कि मोना (नाना) को हिम्दी में
बनाने से बना ताव ? देखो कवि मैं तुम्हारे विराज में कन्य का लिख
हूँ ही।' दर्ई से उनका लया न्य प्रकट हुआ धानाचिका का।

कवि उद्यत पड़ा 'धरे जानिम ! तू मेरी कविता बना देर हृण्य
की धाननाओं की धानाचना कर तो भी मैं मुद नहीं बाधूँगा। तू धरने
दीर हो बना।

"रुद्रबास बन करो।" बह मइक उगी। कवि सहन गया। ठुठुर
ठुठुर बन मठी निबह से बह सोहिनी की वेगन मदा।

सोहिनी बोली धरमर की तरह दरदरे के माप बोली 'तुम्हें धान
मेरी धाना धाननी ही पड़ेगी।'

उपहा राना बहना था कि कवि ने उसका हाथ धरने हाथ में ले
लिया। सोहिनी का हाथ धरना था। मानव उसमें मारी जैसी कोम
लगा रही थी। फिर भी कवि ने हय कर धना हाथ धेर कर कहा

तुम्हारे ह्रास बिकने मजबूरमर की तरह है। जो चाहता है कि तुम्हारे संन-संन पर एक 'घरीर वालीसा' लिता हू। यह रंग यह रूप सबसे सतत सबसे शिष्ट।"

सोहिनी चर्मा पई। बंठे घाम तीर से जब कोई मुसती मजारी है तो वह घीर तुम्हारे लपटी है लेकिन सोहिनी का बेहरा समानि पर घीर भी कुछ समता है। उनके फंसे हुए मोटे-मोटे होठ जब मूरझान के कारण फंसे तो अपना ये परे हो नए। कोई मासूम अपना उनके सिये नहीं थी।

कहि ने बाबुछता से कहा "एक दिन मेरे एक दोस्त ने कहा कि ऐसी सुबनी छोरी ये क्यों प्यार करते हो? यह छोरी तो उसर लिये है जिसको कोई बुराई छोरी न सिये। तुमने सोहिनी में क्या पाया?" जानती हा सोहिनी मैंने उसे क्या पचाव दिया! वही अपना दिया जो मजनु मे संला न बासो सिया बा। मैंने उसे कहा बरगुरदार उमै तु मेरी धायों व हैस। बस यह चुप हो गया। नजानत घीर नजानत के परे तुममें जो प्यार है वह बहुत कम मुसठिया में पाया जाता है।

रवि घीर बाबुछ हो गया। मनम घावाय को मान गरी इष्टि हैस कर वह बोसा मैं रूप से अपिक पुग को महत्व देता हूँ। तुम्हारी धारमा बहुत खरनी है। सफेद पंतों बात बबुठर से एक रम मोरी। घीर तुम जानती ही हो कि मुझे कविता लिखन की प्ररणा देने वाला दिन चाहिए। मेरी मही इच्छा रहती है कि चाय की प्याली साब में हो तुम मेरे धाय हो। मैं तुम्हें अपनी गोर में बिठाए 'उंवाम' की तरह बचाइयां लिनु।

मजमुब सोहिनी कहि की घर-घायिनी हो गई। थोड़ी देर कहि की बरंन गड़ी के वैठुलम की तरह हिमती रही। बार में बस घायें भी बन्द कर लीं। तब सोहिनी उसको प्यार करती हुई बोसी "मैं यह मती भांति जानती हूँ कि तुम मुझे दिन से प्यार करते हो। लेकिन बियर केबन प्यार में मजा नहीं। प्यार के साथ रंसा भी जरूरी है।"

जया कहती हो सोहिनी ? प्यार के शीप वंसों को मत तापो ।
 प्यार वंसों में डूबित हो जाता है ।" करि ने सम्झीरता से कहा ।

"अच्छा अच्छा" उमर अपनी बाँहें उमर वसे म हास पर कहा
 "घात्र मुझे मेरा कहना मानना ही पड़ेगा । देखो दन्तार न करना ।
 बापरा करो ।

जया ?

"घात्र मुझ धोर मेरी एक गहमी को मिनेमा बिद्या ही ।"

दोह-मा ?

"विस्टर गवत ।"

"यह तो बहुत ही रही पित है । एकरम बंदस ।" करि ने माक
 की निद्रोड़ कर पुन कहा — "झिना घरनीस गीत है—पोरे-पोरे
 गानों मे ।

"यह गाना हममें नहीं है । हमम तो एक बहुत ही उमर राँठ एन
 रोच का माना है—गान गान मान । मोहिनी म बड़ी दिसपत्नी के
 माप मटर कर कहा ऐगी महेदार टिप्प की देणने से गिर जा बर्द
 मिट जाता है । मैं तो तेमे ही पित्र देणना पमन्द करती हूँ ।"

करि इफार नहीं कर सवा गाहिनी की कोर बात्रों के बगुन मं
 करि बँप गया । योहे नी गनी गकर पीं रि घरपर यः जिगी जवसी
 पमु को भी उमर जीप रोनी तो यह भी मन्द नहीं हो गता था । यह
 भी सब हुआ रि बात मिनेमा घाम म देवा जायदा ठाकि कभी-नभार
 गोहिनी करि का हाप प्यार में ददा सके ।

बेदिन दूसरे नि करि घरीन्व बेगा का प्रहम्य नहीं कर सके ।
 बर्द दोहजों के पाम गए । दोहजों म भीका उत्तर दे दिया । बहु घबने एक
 मगम्यो क मती भी गया उनने भी वँसा ही उत्तर दे दिया रि घाम
 का बहु बड़ी लंगी मे है ।

दिर क्या करे ? भाया माग एक बबाड़ी के पात गया । उने घरना
 भेव-भंग देवा । मेदिन एर शायों के देवम-मग्य के तीव राय विने ।

सोहिनी का र्थ सतर गया । उसके हृदय के मर्म को उसका बाप
तकम्य गया और उसकी धार्मिक भी बर धार्य ।

इसके बाद सोहिनी ने मन-ही-मन नु बारी रहने का तय कर लिया ।
जानने सोचा—“बह दुष्ट बरों के बरुषों की घोर दैरेपी तक नहीं । बह
पुस्कों को ठोकर धारेपी ।” तब उसने एक स्तुस में नौकरी कर सी ।
बह स्तुस में नियमित का री जाती थी । बहीं धर्म्य मास्टरनियों के
बवियों और प्र मियों को दैसकर उसका मन ह्राहाकार कर उठवा या ।
बह सगमारित-सी होकर रात-रात भर सत पर घुमा करती थी । न चाहते
हुए भी बरबस उसका ध्यान राहपीरों बर भसा जाता था और बह राह
पीर की उपेक्षित नजर नहीं सह सकती थी । बह भीतर भीतर जल
जाती थी । और बब उसकी सहेनी उठे धपनी बाहों में धिक्कर बहरी
“मेरा महबुब मुझे दय तरह चुनता है मुहम्मद करता है कहता है
बध्दत है तो मुहम्मद में तो बेचापी सोहिनी का मुख कल्पना से भर घाटा
बा । स्वप्न में बह चीक-चीक जाती थी । बह करे तो क्या ? करबटों
पर करबटें । रात नुबर जाती थी और दिन निकल घाटा बा ।

धासिर उसने धपनी प्रविज्ञा में संशोधन किया । उसने यह सोचा
मेने बिबाह न करने की प्रतिज्ञा की थी पर म प्यार तो कर जाती हूँ ।
लेकिन मुझे प्यार कीन करेना ।

तब बह प्र मी की टोह में निकसती घोर निराध होकर बापघ घा
जाती । बह धपनी सहेनियों के मिर्षों में घाटी-जाती पर बहीं ती सते
निराजा ही निमती । बब किती के नजरकीक घाटी तो बदकिरमती उसके
धामने नकी होकर पड़ी हो जाती और उसके शमन में नाकाम मुहम्मद
के दाय भनक उठते और सोन सतसे दूर हो जाते । कभी-कभी बल-
बेबल उसकी पुधनी हास्तान-ए-मुहम्मद उसके कानों में पड़ती थी तब
बह केवल रो पड़ती थी और हीनता से बह उस रास्ते से कई दिन तक
नहीं नुबरती थी ।

धुना है कोशिस करने पर बुरा भी मिस जाता है । तब सोहिनी

को प्रमी न पिन यह कसे हो सकता है। अब भी बार मोहिनी को एक प्रमी मिले पत्रकार माने प्रयत्नरतगौर। पत्रकार एक सामाजिक पत्र निरालये व धीर गादी गुदा भी ये—प्रखरे घरने। सरकारी विचारनों व धनसमेतियों से जैसे-जैसे उनका प्रयत्न निरालता था। उस समती की इच्छाएँ अबान मोहिनी को पाकर बन्द प्रम्य हो उठे। पहले-पहले व कुप्त रूप व भिन्नते थे। लेकिन प्यार कमी दिवता नहीं। वह प्रबट हो गया। सब मोहिनी ने घरने बाप व परिवारों स साठ कह दिया 'मे मेरे एक घरने दोस्त हैं। मैं उनसे ज्ञान-दान लेती हूँ।'

अब कोई उसका प्रमी कुटिल की की धातोरना करते तो वह बिपड़ कर बहती थी 'घाय साप बोगिन करे लेकिन घाय मुझ व धीर कुटिल की के बीच कमी भी रहार नहीं थाप सकते। हम एक-दूसरे को शूब समझते हैं।'

प्यार बड़ता हो गया।

पहले बाबिक धीर बाप में बाबिक।

एक दिन मोहिनी ने पत्रकार बजा 'मैं माँ ?'

कुटिल की के बीच की जमीन गिनक गई। पत्रकार बोले 'क्या बहती हो ?'

'स्ट्रीक बहती हूँ। ह्जार बार बहा धातोरना का प्यार रगो।'

लेकिन मैं यह समझता था कि जिन तरी में पुनरापन घटिक होना है उसे हमारा गनरा कम ही रगता है।'

मोहिनी बोले पती 'अन करो धानी बरगाम को। मैं बहती हूँ कि कोई हलाक करो को उगाव करो को गीटमेंट करो।'

कुटिल की को एक बगिन हीन मन प्रादपी थी। उसमें प्रभुभोप तिया रग धीर बरबा दिना भी दिना रग।

प्यार बरगम गई बगार की ठरठ धंरगाँ मे बंत्र। बरबासी के बरगल मोहिनी को भीरती के निराल गिन रग। मैं ठरठ मोहिनी का तिम्यन को भी देना हूँ—अब वह गुम्पद-गुम्पद कुटिल की की प्रेमिका

बन गई। बाहू रे कुठिल की उम्मीदों भी इतक निभाया तो ठहरे दिन से। उम्मीदों से संपादिका बना दिया। लोहिनी का मुमय काम या बच व्यवहार करना। पुस्तकों की समालोचनाएँ करना। समालोचना के विद्यमान सैल निम्नता।

कुठिल जी उनमें सबकीन होते गए। वे उनके प्यार में इतने सम्मय हुए कि वे सारी की सारी इन्कम लोहिनी की करमाइतों को पूरा करने में लगा देते थे। धीरे धीरे उनका परिवार भ्रमण-वस्तु होता गया। जब भ्रमण की एक सीमा आई तब उनकी बीबी अपना एक माँग बठी। धर्मिकार को लेकर कुठिल की व उनसे बीबी में भ्रमण होने लगा और मुझे मैं कुठिल की तीन-तीन दिन पर नहीं जाते थे। इस बीच मानवता पर निष्ठा सिद्धने वाली लोहिनी कुठिल की के साथ मुसफ़रें चढ़ाती थी। तब उनकी बीबी उनके जिधों से कहती पर कुठिल की की बीबानपी पर किसी की बात का कोई असर नहीं हुआ। वे लोहिनी की घोर बढ़ते ही गए।

कई बार उनकी बीबी लोहिनी के पास आई। इससे अपने बच्चों के भविष्य और अपने सुहाय के सुख की भीख मांगी पर लोहिनी ने परवर की तरह कह दिया "मेरा उनसे कोई सम्बन्ध नहीं है। हम दोनों मित्र हैं। पत्र को बख़्ख बलाने में सके हैं।

कुठिल जी को लोहिनी से बड़े फायदे रहे। वह धरदार की इन्कम बढ़ाने के लिए नुब प्रयास करती थी। लोहिनी बड़े प्यार से परिचितों को लिखती व्यवहार की हासत करारा है। आप इनके बीच चाहक बना दीजिए। आपकी कहानी इस धंके में छपा रही है। धार्मिक हासत बहुत करारा होने की बजह से मैं आपको प्रस्तुत धंके की बी पी पी भेज रही हूँ। यदि साहित्य मुझे उम्मीद है कि आप इसे पुका कर अनुपदीत करेंगे।

इसके साथ ही साथ बड़े-बड़े पीठकार—कलाकार साहित्यकार की बहु उन और मन से प्राबलवत करती थी और इनसे वापसी 'बन' के रूप

में सेती थी । 'मत्तमब यह है कि सोहिनी के प्रायमन पर कृटि
 की को लाम-ही लाम बीये ।

सैकिन कृटि की के एक बबेरा भाई था । वह बड़े गहर में रहता
 था । घोर बहुत ही उच्छकोटि का साहित्यकार था । जब उसे इस
 घस्वरप प्रेम का पत्रा बना तथा अपने मतीनों की दुखता का हाल
 बामूम हुआ तो वह धामा घोर उसने सोहिनी को समझया । उसकी
 सन्धी व ठीकी बातों से उच्छकोटि की सीबानी सोहिनी का सीया-ए-दिल
 पबमी हो गया और उसने मुसे में उसका प्रपमान भी कर दिया । इससे
 उसके बबेरे भाई ने उसे कुछ बड़बी बातें सुना थी । सोहिनी की घांतों
 में बदले की भावना बमन उठी और प्रथम रूपबाप उनके बबेरे भाई
 की पुस्तकों की रूपटॉम घासोचना निरती और कृटि की को बिना
 बड़े उनके ही घसवार में घाप बी ।

फिर बना था ? इस बीमानी दिवानिण्णन से कृटि-बीबी का दिमाय
 मम हो गया । वह नीधी दल्लर घाई । साहिनी मिगरेट का बोमावार
 बुपा घादवी दुई कुछ तिग रही थी । उसने रोट रूप घारिणी कृटि
 बीबी को जैसे ही देसा जैसे ही सिगरेट बुजाकर यह सापबाग हो गई ।

कृटि-बीबी ने उसके गमल घगवार फेंक कर कहा तुम अपने
 घागको बना घपमनी हो ? यह बरबात मेरे देबर का कुछ नहीं बिपाइ
 गवती । पर तुमने उसके बरिषों को घरनाभासिक बताया व उसके बारे
 में मुझे कुछ बहना चाहती हूँ । पहले मुझे तुम दतना बताया तुमने
 त्रिगदी घोर उसके सोसों का दिवता घनुमब दिया है ? उनमें कितनी
 मद्घाई से बर् हो ? घोर तुम जंगी बन्धी व सोगनी कुडि बानी
 घामाबिबाघों के लिए हर बर् बाग घरनाभासिक घोर हर बया इटि
 कोउ इतिब होता है । घोर दूसरे भापाघों बाल को भी निग दें
 वह तुम्हारे निग घादग बन पाता है । तुम घरनी हीनता को छोड़कर
 रसम घासोचना बरना सीयो ।"

सोहिनी बिबूरनी कृटि-बीबी का बेदुख देखती रही । वह पुनः

मड़क कर बोली "तुम समझती हो कि मैं केवल बच्चे पैदा करती हूँ ? चापल तुम्हें पता नहीं कि मैं मैट्रिक व साहित्यपालन पाम हूँ तथा मुझे साहित्य के अध्ययन का बड़ा शौक है। मैं यह धरती तरल जानती हूँ कि यह सब रूप के कारण हुआ है और तुम्हें हिम्मत बंधाने वालों को भी मैं जानती हूँ। एक है बिबली कहानियों को बुराकर पाठकों पर शीघ्र पामिब करने वाला है मूरसंग और बुरा लेखक व पत्रकार जो प्रतिमा पर नहीं जातीपना व व्यापारिक व्यापारों पर साहित्यिक बना हुआ है। क्या घामोचना की है ! प्रक की पत्तियाँ भी भाया की पत्तियाँ बताना ! अरिब अस्वाभाविक है ! जरा बेटी बात का जबाब हो ! क्या यह अरिब अस्वाभाविक है ? तुम भी ए पाम सड़की हो अम्पादिफा हो मानवता पर लेख मिछने वाली हो तुम अपनी घातमाओचना क्यों नहीं करती ! तुम अपने गिरेबान में क्यों नहीं देखती ? तुम्हारी बेटी घातर्पमबी मारी एक धोरत की जिन्दगी में घाम लकाकट, साठ-साठ कामूम बच्चों के पेट पर साठ मार कर एक प्रोड व्यक्ति से प्यार करे। मैं समझती हूँ कि ऐसा बबार्बबाबी अरिब प्रस्तुत करने काम को कोई भी स्वाभाविक नहीं बताएगा पर है तो सही ही ? क्यों ? तुम्हारी बेटी अनुर और प्रबुड स्त्री साठ बच्चों के बाप को प्यार करती है कि नहीं ? पर इस प्यार की उम्र बहुत कम है। स्वाब और पूंजी के आचार पर टिका प्यार चार दिन की बीरमी की तरह होता है। कभी न कभी मैरी सदृश्युता कभी न कभी इन बच्चों का स्नेह अपने बाप को पराजित करके ही छोड़या ! फिर तुम्हारा क्या होना ?

बहु अच्छी घाई !

समाप्त ॥

सोहिनी को काटो तो मृत नहीं। वह निर्बीज-सी कुर्सी पर मुड़क गई। उसके मन में तुफान खड़ा हो गया। उसे लगा कि वह जो कुछ कर रही है वह जलत कर रही है। उसे अपनी नतिक्रमा का यह अचलन नहीं बताना चाहिए। बाकिर उसके इस जीवन का अन्तम

बेया होया ?

घोर उसके समस्त सम्बन्ध ध्वंसेरा छा गया। ऐसा घग्घेरा जिसमें रोगनी की सकीर की तरह उसको धपना बिना मजिब का रास्ता दिख रहा था।

तब रात को उसे सपने में उन सात बच्चों के उदास मुग दिखते घोर कीदह पाँपों की पूणा उसे सपने में हुबोना बाहणी।

घोर भूषसके में भूपट में निपटी एक बुबसी नारी का सीमा बेहरा दितता जिसकी मोन का सिन्दूर सहु बनकर उसके बेहरे को बीमस्त कर रहा था घोर पाममें बहु कलम लिए सड़ी होती थी। घोरे घीरे बहकी धात्मा में उसके सपने ही पाप भूजने समे। घोर एक नि समने उम्माबित होकर धात्म-हरया कर सी।

पोस्टमार्टम के बाद मामूम हुआ कि उसने पहर भाया था।

उसकी धर्मी में कोई भी बिरोध ब्यक्ति सम्मिलित नहीं हुआ क्योंकि के उसे एक समभदार-मुसिहित प्रिलास करते थे।

मुझे उसकी पम घरी दास्तान-ए-मुहप्यत का धन्तिय घोर सत्य करते हुए बड़ा ही दुग हो रहा है। सहानुभूति है उन प्यार की प्यागी पमनरुपी की बेकम मोलिनी के प्रति। धनबिदा। ☉ ●

सेवा का मीमांस्य मिना हुआ है।

बुद्धा निरालस रहा। वह जैसे सो गया।

‘घाय चाय पीजिये न ? रंजिन के स्वर में घायहू वा।

‘नहीं। पता नहीं क्यों मन हर बीज के प्रति उदासीन हो रहा है।

‘हीही ! उसने अपने बाग के मन में बाहें डाल दी। उसके बेहुर पर बचपन की योगी थी। बुद्धा ईन बढ़ा। वह पुन चाय पीने गया। वह कुछ देर तक गिड़गी के पत्र परों को देखता रहा जो निरुगठे मृग की किरणों को रोहने वा प्रगल्भ प्रबान कर रहा था। ह्या वा धोर का भोंका घाया। परा बीज में से धीर छट गया।

‘वह परा बिसपुन फट गया है बैटी।

‘घाय चिता न करे, मैरी रेंदगी माड़ी भी फट पयी है। न उसका गया परा बना हुंगी। संयोग भी तो एक बीज होता है।’

‘धीर ही बैगी कम राकिन घाया वा।

क्यों ?’

‘बस इतना ही कहकर बना गया कि रंजिन घाजकल मुझने बोड़ी मारत है।’

‘वह फूट बोल रहा वा।

‘घायहू।’

‘घायहू नहीं सचमुच। वह चाहता है रंजिन उसके लिए अपने व्यक्तित्व को खरम कर दे। घाने घायको मार दे। अपने स्वयं धीर घपनी इम्मानिबत को छोड़ दे यह मेरे लिए संभव नहीं।’

‘वह घसकी ग्यारती है।’

‘कमजोर पर सभी ग्यारती करते हैं। राकिन न करे यह कैसे हो सकता है ?’ कह कर वह बाब के बर्तन लेकर बापस रसोईघर में बसी घायी। वह रसोई की छद्मई करने लगी। लभी बाहर लारकिन का पन्दी बज लडी। बन्दी की टन-टन गुनठे ही रंजिन के घारे लन में

मर्दान स्फूर्ति पाय गयी । बड़े हृद्यत् द्वार की घोर बड़ी । उसकी क
 पर रॉबिन एव भी घाया पर घाव उमने उमे प्रबट नहीं हाने दि
 बह फिर सज्जई में तन्मय हो गयी । उसका मन बाहर पहुँच गया
 पर उमने अपने घायल को अत्यन्त व्यस्त बनाए रखा ।

घन्टी एक बार फिर बजी ।

देवता की मर्दान रॉबिन के अन्तम को चीर कर गाँठ हो म
 उमने स्वयं पर संघम रखा । बहु रूपों में बर्तनों को निष्प्रयोजन
 झाड़ने लगी ।

रॉबिन रंगीरे के दीवार के बीचो बीच आकर गड़ा हो गया । उ
 घाया का आनास रॉबिन को हो गया था किन्तु वह निश्चल बंसी ए
 अपने को जल किये ।

“रॉबिन !” उमने पुकारा ।

रॉबिन ने अपनी पलकें बटायीं । घनमरु घर्षभरी हृष्टि में उमे के
 रही । उमने चाहा कि वह सदा की तरह घाव भी रॉबिन को घ
 बाहों में भर कर उमके पुग पर सहस्र बुम्बनों की वर्षा कर दे
 उमने अपने मन की घपीरता को जम्ह किये रखा ।

“रॉबिन तुम्हाए माराज होना ठीक नहीं है । तुम्हें मेरी घायों
 मन्धीरता से निवारना चाहिये । आगिर यह सब संभव हुआ है कि
 भने-भूरे परिवार का जिम्मेदार एन्म घायली पत्नी के बहने पर उ
 पर धार कर रहे । जय सोचो न मेरे रिज के दिल पर विजना ।
 आशात लयेदा ?

रॉबिन ने उसकी बात का कोई उत्तर न देकर देवता ही कहा ।
 सोचोने ?

“जहाँ घायी ही पीकर घाया है ।” बन्दर बहु दारान में बड़ी ।
 को उग लाग घोर जम पर बँट गया ।

“दिल भी एक बज सो ही लो ।”

“रॉबि तुम्हाए बर्तों ।”

उसका बाप तुम कमाता है और मेरे बाप की हर चीज को मेरे पहारे की चीज रखता है ।

बहु बड़ी देर तक बिचारों में लोपी रही ।

गिरजाधर के पीछे रंजित का मगान या और उसके काटी दूर तर काटी हस्तगत के पीछे रंजित का । रंजित का बाप कम्पाउण्डर या त्रिपुत्री एक दाय और एक हाथ सझवा हो जाने से बेचाम हो गया । भा बचपन में मर गयी थी घट परिचितिबग रंजित को तुम्ह भौदरी करती पड़ी । उमने केवल मंडिर ही पास किया था ।

बहु प्रारम्भ से तेज बुद्धि की थी । रंजित के साथ उसका बचपना बीता था । दोनों साथ-साथ पढ़े थे । जीवन की दहमीत्र पर रोमांच से बरपूर धल भी बिताये थे । बिबेक के साथ उनके बिचारों में हड़ता धाने सदी । दोनों ने निश्चय किया कि वे छाती करके चिन्तु गत हो बप पुर्व रंजित के पिता के साथ यह बुर्घटना घट गयी । वे लाचार और घस हाय हो गये । घट बहु धनेसे पितामी को नहीं छोड सकती थी । घस रंजित छाती के लिए बझी करता और रंजित बहती कि नहीं धभी नहीं । बीरे-बीरे धनका बाडाबरण बिगड गया । रंजित कभी-कभी उस पर कोषित हो उठता था । रंजित क बाप को भी इम उनाव का बीरे-बीरे घामास हो गया और उसने रंजित को कभी बार समझवा भी पर रंजित का संवेदनभरा मन धाने लाचार बाप को छोडने को संवार नहीं हुआ ।

×

×

×

रंजित का ईसाई बाप प्यारेसात धाममन बिस्तरे पर भेटा हुआ बाईबिल पढ़ रहा था । उसके बेडूरे पर लिग्गता और प्रभाइ धाति थी । तभी रंजित ने प्रवेस किया ।

"बैबी !" बुड मॉनिव ।

घामो रंजित घामो घाब कसिज नहीं बये ?"

"नहीं ।"

“क्यों ?

‘छुटी सी है।’

‘कोई लाख काम का ?

‘हाँ वह भी घायले ही।

‘बँठो हूँ नही।’

रविन इतमिमान से बँठ गया। उसने सिगरेट जला सी। उसका कल पीकटा हुआ वह बोला “बेटी ! घायले एक प्रायना है घाय रविन को गमम्य सीजिये। वह घपना हूठ नहीं छोड़ रही है। मैंने उरो लाख बार समझा दिया कि तुम बेटी को दिन में कई बार समझ सेना पर वह घपने हूठ पर क्यों की क्यों है। बहती है—तुम यहाँ घाकर क्यों नहीं रहते ? मला यह कैसे मभव हो सक्ता है ?”

बामसन ने मुसी मुस्कान फ लाव कहा “भव तुम दोनों को बिदाह कर हो सेना चाहिये। अधिक देर किमी घनिष्ट का कारण भी बन सकती है।”

“यही तो मैं भी कहता हूँ। बगिन न मेरे हटी भी मुझ बिदाह के निने बार-बार कह रह है।

“कैसे नहीं कहेये। तुम्हारा छोटा भाई पीटर भी तो जवान हो रहा है। मीर बेरी भी वह दम्पदा है कि घपन का प्यार घव छट्ट बगपनों में बँव जाय।”

“बँव जाने पर घान।” उसने जगनी मरी हूँ टॉप घोर हाप की घोर मदेत दिया।

“मैं ही घभापा हूँ।” बाकसन ने भीसे नेत्रो से उसकी घोर देगकर बाव “तुम दम्पान बड़े बदनमीब हाने है। दगो न मेरे बारग बेरि बगपी को घाने नित्री जावन का पोड़ा भी तुम मही निव पा रहा है। बेकारी राज-रदन मेरे जीवन को मँधारने में लदा रहती है। मैं घव उग मजदूर बरँवा।”

नेविन हटी घार मेरा बाव मठ तीजियेगा। घान घने किमो भी

उसका बाप खुद कमाता है और मेरे बाप की हर पाँच को मेरे गहारे की की बरकर है ।

बहु बड़ी बेर तक विचारों में घोसी रही ।

विर्जापर के पीछे रैजिन का मरान या और उसके काफ़ी दूर तर काफ़ी हस्पताल के पीछे रैजिन का । रैजिन का बाप कण्यावन्दर का जिगाकी एक दाँव और एक हाथ लकवा हो जाने से बैराम हो गया । माँ बचपन में भर गयी थी घट-परिचितिका रैजिन को तुल्य नोकी करनी पड़ी । उसने केवल मेट्रिक ही पास किया था ।

बहु पारम्भ से तेज बुद्धि की थी । रैजिन के साथ उसका बचपना बीता था । दोनों साथ-साथ बड़े थे । मौजब की बहुमीज पर रोमांच से भरपूर शाय भी बिताये थे । विवेक के साथ उनके विचारों में हड़ता घाने लगी । दोनों ने निश्चय किया कि वे छात्री करने किन्तु पठ दो बरस पूर्व रैजिन के पिता के साथ यह दुर्घटना घट गयी । वे लाचार और घस-हाव हो गये । घट-बहु घकेसे पिताजी को नहीं छोड़ सग्यी थी । घब रैजिन छात्री के लिए बस्ती करता और रैजिन कहती कि नहीं घभी नहीं । पीरे-पीरे घनना बाठाबरागु बिपड गया । रैजिन कमी-कमी उठ पर घोबिठ हो उठता था । रैजिन के बाप को भी दूरा तनाव का पीरे पीरे घामाघ हो गया और उसने रैजिन को कई बार समझाया भी पर रैजिन का एबेबनबरा मन घाने लाचार बाप को छोड़ने को तैबार नहीं हुपा ।

×

×

×

रैजिन का ईर्माँ बाप प्यारेकामत घामसन बिस्तर पर रोटा हुघा बाईबिन पड रहा था । उसके बेहरे पर स्लिग्घता और भगाड गांति थी । तमी रैजिन ने घनेय किया ।

"बैबी ! बुड मॉनिग ।

'घाघो रैजिन घाघो घाज कनिब नहीं गये ?

'नहीं ।

“क्यों ?”

“छुट्टी भी है।”

“बोर्ड पास काम था ?”

“हाँ वह भी आपसे ही।”

“बंटे हुए कहे।”

रविन इतमिमान से बैठ गया। उसने सिगरेट जला ली। पत्रका बज थीबता हुआ वह बोला “डकी ! आपसे एक प्रश्न है बार रविन को सम्मान दीजिये। वह अपना हठ नहीं छोड़ रही है। मैंने उस नाम बार सम्मान दिया कि तुम डकी को दिन में कई बार सम्मान देना पर वह अपने हठ पर क्यों की क्यों है। बहती है—तुम यहाँ घाबर क्यों नहीं रहते ? जसा यह कस सम्भव हो सकता है ?”

पामसन के मुँहो मुस्कान के साथ कहा “घब तुम दोनों को रिवाज कर ही लेना चाहिये। अधिक देर तिमि धनिए का कारण भी बन सकती है।”

यही तो मैं भी करता हूँ। बेगिन न मेरे डकी भी मुझे रिवाज के विषे बार-बार कह रह है।

“कैसे नहीं करते। मुझारा छोटा भाई पीटर भी ता पबान हो रहा है। मर, मेरी भी यह दृष्टि है कि पबान का प्यार धन घट्ट बनने के बँध जाय।

“बँध जाने पर घाब।” उसने उगरी मरी हुई टॉप पीर हान की पीर मदन दिया।

मैं ही पबाना हूँ।” पाबान के भीय नेत्रो से उतरी पीर देगडर बना “तुम इमान बड़े बदनमोब होते हैं। बेगिन न मेरे कारण केरि बरबी को घाने निरी जावन का घाटा भी तुम नहीं मिल पा रहा है। बेकारी राज-निदन केरे जीवन का नैबाने में लगी रहता है। मैं अब मजदूर बहँदा।”

नेकिन डकी आप घरा नाब बन लीजियेदा।

उस घाटी के लिए राजी कर मीजने ।

“कर हुआ ।”

“तब !”

“यकीन रगो ।”

राजिन बसा गया । शामसन बड़ी देर तक विभूषण सा बैठा रहा । वह अपनी बदलसीबी के बारे में न चाहे क्या-क्या सोचता रहा जिसके बावजूद उसे दूसरे पल याद नहीं रहे । हाँ वह सही था कि उसने अपने मन में यह निर्णय लेकर कर लिया था कि उसकी बदलसीबी अब उसकी बेटी के जीवन को भी नियतने मयी है ।

×

×

×

पर मैं प्रवेश करते ही राजिन ने मुझारा “डेही मुड ईबनिग ।” और अपने धाकर डेही को अपना पुम्बव दिया ।

“आज बड़ी देर कर ही ?”

“डेही मैंने एक दृष्टान कर लिया है । सेठ बनारसी बास है न उसकी लड़की को पढ़ाऊँगी । तीन रुपये एक पन्टे के देने । है न गुणवत्तरी ?”

“नहीं पत्नी क्यों अपने भाग पर अत्याचार कर रही है ?” उसने बोझा बककर कहा “मेरी एक बात मायेकी ?”

एक नहीं घनेक कडो डेही ।

“फिर तु विवाह कर ले । बेचारा राजिन तेरे प्यार में पागल बना फिरता है । और मेरी भी चाहें बन्द होने क पहले तुझे बुझन के रूप में देखना चाहती है । बूढ़े बाप की सबसे बड़ी लासला यही तो होती है कि उसकी सन्तान को सारे सुख उसकी माँबों के सामने दिस जायें ।

राजिन का स्वर एकदम बदल कर तीव्र हो गया “मासूम होता है राजिन धाया था ।”

शामसन बबरा गया परसने अपने धाएकी सँभाल लिया । अपनी रूप को डेही में मुझाकर बोला, “नहीं नहीं तुम्हें तो धाकरत इस विषय

में रोजिन ही नजर आता है। वह यहाँ क्यों आने लगा? वह तो इन समय कसिब बना आता है।”

“फिर आप मुझे कभी भी घायी के लिए न बता करे। मैंने प्रतिज्ञा कर ली है कि आपके जीते जी आपकी धरने से बिसप नहीं कहेगी। रोजिन में धरत इच्छानियत हैं और वह मुझसे मरणा प्यार करता है तो वह यहाँ रहने की धरत के साथ मुझसे विवाह कर सकता है। रोजिन के बड़ी हड़ता से कहा। उसकी धरने स्थिर हो सटा। उसका बदन झोपने लगा जैसे वह अपनी सभी भावनाओं को मार कर रह रही है।

धामनन कुछ बोस इसके पहले ही रोजिन बाहर बनी गयी। वह धरने काम में व्यस्त हो गयी। बाप-बेटी ने माप-याप आना आया पर हीनों में से कोई नहीं बोला। उनकी माव-मदिया से सगता या जैसे ब दोनों बाप-बेटी नहीं धरतिबिध हैं। धामनन ने सोने व पूर पुत्र 'मुझसे तुम नाउत्र हो रोजिन धरने इन नामायक बाप को धमा कर रना। धम में मुझे कभी भी विवाह व लिए मत्रभूर नही कटेगा।” धामनन की धरने धर धरनी। रोजिन भी धर धरने को नहीं रोष मारी। नन्ही धानिवा की ठरह पिता की गोद में धुरान धिमक परी।

राठ बानी धीर बानी हो रही थी।

×

<

रोजिन प्रगाढ़ निरा में निबलन हो गयी। गोया धारणा। धामनन ने गिहरी की राह तावा—धाधान—मवा बबानी के जोत व मरहोग धीर ताबोग है।

धान विरुधिर। मग्राटा।

बद मोच रहा था—“मेरे धीधन का क्या मरमद है? मैं पधार है मार है बेटी की जिन्दगी का धुरमन है क्यों है? रोचन जीवन व इन बिबीने धिनरने-नइपने धर मास धीर मने के निरा। नि नि नि धि धिनना स्वाधी धीर नीच है? उसने बानी तावा सो मोयी धरनी बेटी की देगा। उसका धन उसके धीरिधा जीवन की धरति म धर धर धीर

बहु न जाने क्यों विचरने लगा । उसकी सिसकी उठे ही मुन्नाया पड़ती थी घोर घंत में बहु विचरता हुआ रेडिन के पास पहुँचा । उसके बिरतरे को खुसा घोर धपने मन में बहा "ओढ़े की टोक टूट जाने पर सबभार मासिक उगे पीड़ा से बचान के लिए भोमी मार देता है फिर क्यों नहीं ईश्वर एक ऐसा कानून बनाता जिसमे प्रयोजनहीन इन्सानों को भी छाँस लेने का हक न हो ।" उसके मन में ध्यानक घाम्बोसन होने रहे ।

बहु पु बसके के सहारे बढ़ा । कुरदरे पत्र पर पिन-पिन कर बतने ले उठे बढ़ी तकसीक हो रही थी । पीरे-पीरे बड़ कमरे के बाहर हो गया । उसने चारों घोर देखा—स्थब्ध घोर पूर्वा बाताबरण । बहु घाम्बाघ को निहारता रहा । पित्रों के ठगरी मुम्बद को घाबर भरी हट्टि ने देखता रहा "ईश्वर ! मुझे धमा करना ।" बहु पीरे पीरे बचरी के पास गया । बकरी जैसे उसने मन के कुर इरादों से परिचित हो गयी हो बहु विचिबा उठी । बामसन काँप गया । सममें शणिक जड़ता घा यकी घोर घाँसे घनामघ दित्रों की घोर घठ गयी ।

उसने बढ़ी सपजई से रस्ता खोसा । बहु सारा कार्य इस तरह कर रहा था जैसे उसने सारी योजना बहूँ ही बना रखी हो । बहु रस्ता निकर फिर बसा । विचरकते-विचरकते उसका बुटना पाजामा भी पट गया । बहु घत की छीदियों के पास जाकर मुस्ताने गया । उसने गुरस्त उस रस्ते को धपने पले के चारों घोर लपेटा तभी फिरने की पड़ी से तीन बजाये । उसे लगा कि तीन टंकारों हूँकि की तरह उसके दिम पर पड़ रहे हैं । बहु विचिचित हो उठा घोर उतका सारा बचन भीष गया क्योंकि उसने उसी धमप सोचा था "कहीं रेडिन जान गयी तो ? उसने सीदियों की घोर धपनी भीठ कर बी घोर भीठ के बल बहु छीदियाँ बगुने सना । पीरे-पीर बहु सारी छीदियाँ बड़ गया । बहु छत पर जाकर मुड़क ता गया । उसका सरीर टूटने गया उसने प्रभु से प्रार्थना की घोर रस्ते का एक तिरा मोरी के गल में बाँध दिया घोर दूसरा पले में डाल कर बाँध लयाली । धपने एक हाथ से बड़ी दर में बहु बाँध सना पाया ।

जब यह यह काम पूरा कर चुका तब उसने ईस्कर को पम्पबाद दिया
 कि हमने एक परसतू घादमी के दुसों क घत करन में जो महवाग दिया
 है उसके निचे यह उमका परवस्त कृतम है । उमका रिस घपनी साइतो
 से रोना चाहता या पर यह ऐमा महीं कर सका । घीरे घीर उमका मन
 फिर बेटी क प्यार में उलझकर कमबोर होता गया । उम महगूम हुमा
 कि यह घपनी बेटी के बीबन को घपन प्राणों के मोह म सुगी नहीं कर
 सकेया । इसलिये यह तुरन्त मन के पीछे की घोर सटक गया । कुछ ही
 देर तड़पता रहा—कब उसके प्राणु निक्से यह कोई नहीं जानता । हाँ
 मरने के पूव उमने घपनी प्यारी बेटी के मुन्द बीबन की कामता की
 है ईस्कर । उसे रीबिल की दुहून बनाकर उमके प्यार को घपुष्ण बना
 है । यह एक घन्दी बीबी की तरह घपनी उम पुकारे, घीर उसकी पप
 घपी हट्टि निरें पर उम घपी ।

एक मीनार और दो टूटे दिल



मीनार की मीढ़ियों के दरवाज के धामे पहरेदार के नामदार बूतों की अग्रिम आवाज पूंज रही थी—घट-घट-घट । कभी-कभी यह अपने मन्त्र स्वर में कोई छिन्मी पीठ पुमपुना उठता था । प्रोफ़ासस्वा में उस पहरेदार के मुंह से यह बटिया छिन्मी पीठ बड़ा विधिब लन रहा था । लेकिन उसकी मुहा से बसकी सम्मयता का प्रत्याजा सहजता से समायो जा सकता था । समका हिनता हुपा गिर उसके पीठ में जो जाने का प्रमाशु था ।

मीनार के चारों घोर मोलाकार बगीचा था । उस एक विद्याल इमली के पेड़ के तने का महाप मिष्ट हुए एक बुकक बँटा था । उसके मुख पर बिन्ता घोर व्यसता के भाव स्पष्ट बीज रहे थे । उसका कुर्ता घोर पावजामा फटा घोर मैला था । हाँ उसके पार्श्वों में जो बूटे थे वे बिल्कुल नए घोर कमकवार से जिससे बेलने वाले सहजता से यह अनुमान लगा सकते थे कि यह बूटे कुटए हुए हैं—किमी मन्विर के धाम से या किसी हुकान से । बुकक के बेहरे की उमरी हृदियों में उस की बड़ी-बड़ी धाँसों की लुम्बरता को नियलकर उन्हें जमानक बना दिया था और जब उसकी धाँसें स्थिर होतीं तब ऐसा प्रतीत होता था कि इन धाँसों में बिनमारिवाँ बल रही हों

घौर के विनो को भ्रम करने को बाधुर हों । उसकी बार-बार बन्द होनी मुट्टियाँ उसके घन्टन के कारणों घौर रोप की प्रतीक थी । वेद के टकरावों निर से सपत्ता था कि उसके मस्तिष्क का विपुल विद्वान् चमत्कर्म हो गया है घौर बहु कुछ पढ़बढ़ कर देना चाहता है । पहरेदार उस मुबक पर बार-बार तेज निगाह डाल देता था । बहु तेज निगाह प्रसन्न भरी होती थी जिसे वह मुबक सहन नहीं कर पाता था । घौर जब कभी पहरेदार घूमता हुआ उसके पास आकर भीटी बजाने लगता तब उस मुबक के बेहूष पर घृणाभरी रेखाएँ ब खँकनाइँ नाच उठती थी । घन्ट में बहु बीड़ी पीता हुआ उसके पास आया घौर बोला "बीड़ी विनोये दार ?"

मुबक ने मौन रहकर अपना हाथ बढ़ाया घौर पहरेदार से भीटी लेकर पीने लगा । उसके बेहूष पर "बुध घाकेय घौर घाकेय था ।

पहरेदार ने उस मुबक पर उदती नजर डालकर अपने घात्र ही कहा "अच्छा क्या करता है ?"

"क्या करता क्या ?" चौक परा मुबक । न जाने हुए भी उसने पहरेदार को उत्तर दिया । उसकी पहरी पनी घाँगों में बिम्बप ठर पडा ।

कि धकेने घास्पी को भीनार पर बजने नहीं देती बनी घाँ हमसा एक न एक घास्पी जहर करता ।"

क्यों ?"

"माया प्रमाना ही कुछ ऐसा था क्या है ।" जिसे देखी लोटी-लोटी बाउ पर वहाँ के नरने की बीड़ा बना घाँता है बु !" घौर उसने दूसा ने बुन दिया ।

मुबक पर हो गया । पहरेदार मम्मा बघ घीबहर पुन-बोग— "बुके लो मुगारे पर ली एक दूसा था कि मुन जकर कोई दरबज करने माने हो ।

मुबक का बुन बिहूत हो गया । घाने बीनों हीटों के पङ्कमाने की घाने बीनों के बीच बीच पर उसने अल्प अल्पतरी दृष्टि के डम

पहरेदार को देना । पहरेदार निश्चिन्ता कर हँस पड़ा और बोला "ऐसी ठीक दिवाहें में बहुत देग चुका है । इराक के दिल की बातों को धीरों में जीप जाता है । यहाँ का बहुत पुराना शीकर है । राखी तर्जुबा हो चुका है ।" वारा भर रुककर बोला "तुनो जब तुम मरी मजर बजाकर मीनार पर जाये तमी मंने समझ लिया था कि तुम कुछ बखब करने आए हो । बोल मी नहीं रहे हो । मज बोसो पर यह बड़ी देर की सम्बी चुप्पी तुम्हारे दिल के बुरे इरासों को नहीं दिया सक्ती ?" और वह मीन झोकर फिर बीड़ी पीने लगा । वह पुर्वा संभ के पास घातमान की धोर छोड़ रहा था । कभी-कभी वह सोलाकार पुर्वा छोड़ने की भी घतकल बेवटा करता था ।

युवक अपने हाथ की कुम्भी बीड़ी को तोड़ते हुए बड़बड़ाया 'तब बकबास है, जाओ अपना काम करो ।'

'मे बकबास करता हूँ ?' वह बिस्वस से उसके सम्भिकट धाकर बोला 'क्या फिर तुम यहाँ क्यों आए थे ?'

युवक इन समय सुसी धीरे ध्वंन मरी हुई-हूँस पड़ा । बार्थनिक की जाति मारी स्वर में बोला 'मीनार पर बड़कर तुम्हारी इस दुनिया को देखने । यह पता मवाने कि इन बिराट दुनिया में मेरा अपना क्या अस्तित्व है । येर इस छोटे से बीवन का क्या मुस्व है ?'

पहरेदार उस युवक की भारी बातें न समझा । अपनी मूर्खता को फिलाने के लिए वह अपने होंडो पर कुम्भी-कुम्भी मुस्कान लिए अपनी नियत बमह भर धा गया । युवक दूब को तोड़ रहा था और पहरेदार को प्रसन्न मरी हट्टि से देख रहा था । कभी-कभी वह दूब के दो-बार टिकके मुँह में बजाकर खाने भी समता था ।

बीड़ी देर बाद उस युवक ने मीनार की धोर छोटी हुए एक अन्ध युवक को देखा । पहले युवक की नसों में बर्मी बीड़ गई । वह धीमता से सट्टा और पहरेदार के पास जाता था । अन्धनिश्चित स्वर में बीरे बीरे बोला 'क्यों पहरेदार साहब में इस घादमी के साथ ठगर था

सबका हूँ ? सब तो हम को गए हैं न ?

‘सगळ ! एक साथ को धारमी इस मीनार पर बिना किसी रोक-टोक के वा सबने हूँ ।’ पहरदार ने दूधरी बीड़ी मुमदाई मुना भाई एक साता हणमी ‘अनोने’ वा । मुस बरमाग दिनाम छोररियो के पीछे भागडा वा पर जब उनकी बीड़ी न एक नो हण खदान न नजर नहाई तब साता घाँख बचाकर ऊपर मु दूध पडा । मद जात मी बड़ी घबोह होती है । बिना मी धानी घोर पर मी धानी रसना चाहती है ।”

दुमरे मुसक की माहति सब दिगाई पढ़न लगी थी । वा बहुत घोर धीरे वा रहा वा । धन्य बपुओं एव बिगरे बालों में बह जापुनिक मखनूँ सा मपता वा । उनके ऊँचे हुए रूँ रूँकर बदन उमक टूटे दिन की बालों मुना रहे व ।

पहना मुसक प्रदन मी हृष्टि से सब मी पहरदार की तरफ देख रहा वा मुसकरा रहा वा । धन्य में बह मुसक बोमा ‘ऊपर बहकर देखना मुस्यारी इतनी बड़ी दुनिया में क्या-क्या है ?’

‘क्या तुम धनी पदा हुए हो ?’ पहरदार ने जिज्ञासा से पूछा ।
‘जब किसी धानी के मन में एक नया बुना दिवार घाता है तब उसे ऐसा मान्य माना है कि उसन नया उम्य पाता है । उसके लिए उसकी प्रत्येक बित्त-विबित्त बन्धु परतिबन्ध घोर धनागा बन जाती है ।’
पहरदार इन बात मी उमक मारी मरकम बिबागों को मही ममम मवा । वह सबवा मौन रहा ।

दुमरा मुसक मीनार की मीडिलों के दरवाजे पर हलकाना हुपा घाना । पहरदार की घोर बिना देखे ही ऊपर जान मना कि पहरदार ने दुमर मुसक को घाना मर नजर में बरहा ‘दररो’ । घरेन घरेन जाना मीर जानसी है । मुम इन मुसक के साथ वा मरने हो । देखा को मरबडा मर करता । धनी तब बने पहर में दो धानी हो धानराना मर बाप है बाकी किसी को मी बावपाओ मही मिसी । देव पहरदारों का रिवाज

पहरेदार को देना । पहरेदार गिनगिना कर हँस पड़ा और बोला "देसी तेज निभाई में बहुत देर चुका हूँ । हराण के दिन की बातों को आँसों से भाँप जाता हूँ । यहाँ का बहुत पुराना नौकर हूँ । बायीं तरुं बा हो चुका है ।" धरा-भर दफ़्कर बोला "मुझे जब तुम मरी नजर बचाकर मीनार पर जाये तब मैंने समझ लिया था कि तुम कुछ नजर करके घाय हो । बोल भी नहीं रहे हो । मठ बोलो पर वह बड़ी देर की लम्बी चुन्नी तुम्हारे दिन के बुरे इरादों को नहीं दिया सकती ?" और वह मीनार छोड़ फिर बीड़ी पीने लगा । वह चुपचाँप के साथ आसमान की ओर छोड़ रहा था । कभी-कभी वह बीसाकार चुपचाँप छोड़ने की भी असफल कैप्टा करता था ।

मुबक अपने हाथ की बुन्नी बीड़ी को छोड़ते हुए बड़बड़ाया 'सब बकवास है पाओ अपना नाम करो ।'

'मैं बकवास करता हूँ ?' वह विस्मय से उसके सम्भ्रित भाँकर बोला "क्या फिर तुम यहाँ क्यों आए थे ?"

मुबक इस समय सूखी और ख्यंभ मरी हँसी-हँस पड़ा । वार्षिक की भाँति तारी स्वर में बोला "मीनार पर चढ़कर तुम्हारी इस दुनिया को देखने । यह पता लगाने कि इस विराट दुनिया में मेरा अपना क्या अस्तित्व है । मेरे इस छोटे से जीवन का क्या मूल्य है ?

पहरेदार उस मुबक की तारी बातों न समझा । अपनी मुर्छा को क्षिपाने के लिए वह अपने होंठों पर बुन्नी-बुन्नी मुस्कान लिए अपनी नियत जगह पर आ गया । मुबक दूब को छोड़ रहा था और पहरेदार को प्रसन्न मरी इटि से देख रहा था । कभी-कभी वह दूब के दो-चार तिनके मुँह में दबाकर चबाने भी समझता था ।

बीड़ी देर बाद उस मुबक ने मीनार की ओर धाँसे हुए एक अन्य मुबक को देखा । पहले मुबक की गर्तों में पानी कीड़ पई । वह पीछता से उठ्य और पहरेदार के पास चला आया । ख्यंभमिथित स्वर में बीरे बीरे बोला 'क्यों पहरेदार साहब मैं इस आदमी के साथ उमर का

करता है ? अब तो हम बो गए हैं न ?”

‘बचक ! एक साथ बो आरपी इस चीनार पर बिना किसी रोक-टोक के जा सकते हैं ।’ पहरदार ने झुंझी बीड़ी मुकपाई ‘मुना भाई एक आत्मा हूयमी ‘अनोणे’ वा । गुरु बहमाग दिनाम घोबरिदों के पाछे भागता था पर अब उमकी बीबी में एक नौ हरप बवान म नजर लड़ाई तब माना चीज बचाकर आर म बूट पया । मर वाम मी बड़ी घबराह हाती है । बिज मी घनरी घोर पर मी घनरी रचना चाहती है ।”

दुना मुकक की मातृत्रि पर दिगार्न पवन लगी दी । बह बगुन घोर घीरे घा रहा था । घन्ने बरहों एन बिगरे बानों में बह पापुनिब मखरूं वा लपता था । उमरु उगते हुए एह एहर बरम उमके दूटे दिन की बाज्रां मुना रहे प ।

पहला मुकक प्रसन मरी हृष्टि में अब मी पहरदार की तरफ देख रहा था मुककच रहा था । घन्ने में बह मुकक बाणा ‘अर बाबर देनना तुम्हारी इतनी बड़ी दुनिपा में बया-बया है ?’

‘अब किसी आरपी के मन में एक मया बुपन्ध निबर घाना है एव उमे लया मानूम होना है कि उमने मया उम्य पाया है । उमरु निज उमकी प्रलेख बिबरदिबिबन बगु घरिदिबिब घोर घनोगी बन जानी है ।’

पहलेदार इस बार भा उमरु भागी मरबम बिबानों वा मरी मयम मया । बह मबपा मौन रहा ।

दुना मुकक चीनार की मातृत्रि व दबकते पर हउरदगग हुपा बाया । पहरदार को घोर बिना देन ही आर बाबर मया कि पहरदार ने दुनरे मुकक को घन्ने मय एवर से बहा ‘अनोणे’ । घन्ने घनम बाणा वीर बगुनरी है । मुन इन मुकक व माब वा गवने हो । देखो, बनें दरबती कय करता । घन्ने तब मय पहर में दो घान्नी ही घान्नागग कर बह है बाबा किसी को मी बबबबबो मी किसी । देन एहोदलों वा रिबिब

बहुत गराज है। किन्ती के पाँच घीर किन्ती के बस। पहरेदार ने अपनी बुद्धों पर ताब दिया।

दूधरे मुक्क ने उसे एक पल के लिए देखा घीर बिना कुछ बड़े वह नींदियों की घोर बड़ गया। पहरेदार ने बड़ बिचकाकर कहा "घाज किन्ती भी जाने बासे का मूड अच्छा नहीं है। भापो मुम भी उसके साथ बैन घामो कि यह बुनिया किन्ती बटी है?"

गहसा मुक्क भी लपक कर सीढ़ियों पर बड़ गया।

नींदियों पर घोर अन्धेरा था। पर हूर बुमाब पर एक छोटी-नी निदरी थी। पहल मुक्क ने तिमके मुस की ब्यपता घीर अंतोप कुछ कम हो गया था एक बुमाब की निदरी के प्रकाश में दूधरे मुक्क के अन्धेरा से दूर ठे हुए बेहरे को देना तो उसके अंधेरे पर घफा की एक अन्धेरा बिरक गई। दूधरे मुक्क ने अपनी बति को भीमा किया घीर अपने अपने बासों के एक पुन्दी को घोर से पकड़ते हुए उसने अपने मुक्क की घार देगा तथा अपने समूचे घरीर को एक बिचिब अटका दिया।

पहले मुक्क की नजर एक पीछा करने बासे की माँति भूक गई। वह एकरम अन्धीर हो गया। फिर जाने क्यों सीटी बजाने लगा?

दूधरे मुक्क भीरे भीरे बुमाब पार कर रहा था। मीनार का गुम्बर नजदीक था रहा था। अन्धेरा घीर दूधरे मुक्क एकरम रुक गया। उसके रुकते ही पहला मुक्क एक अटके के साथ उसके पास था गया। दोनों की नजरें एक हुई घीर दोनों के अपने अपने बेहरे के उग्र भावों एवं गुला मदी हकि मुक्क-दूधरे के अन्धेरा घीर दोनों जैसे अन्धेरा

गुम्बर

हुए।

प्रिय रोमी

तुम मेरे जीवन की मसुर चढ़कन घोर मयनों की ज्योति हो पर यह बेरहम समाज हम दोनों को मिलने नहीं देता। मेरी मृत्यु के बाद तुम अपने जीवन को ध्वंस मत रीना और मुझे भूल जाने का प्रयास करना। चाहो तो तुम किसी और से विवाह कर सक्ता हो। मेरे हृदय में तुम्हारा प्यार सदा बासन्ती फूल की तरह रहा है और मृत्यु के बाद भी रहेगा।

तुम्हारा धभागा प्रेमी

—सागर

पहले मुझ ने पत्र को काढ़ते हुए कहा "कम्यस्त कहता था कि धारमहत्या मूर्खता है।" और उसके होठों पर जीवन भरी मुस्कान खींच गई।

×

×

×

दूसरे मुझ ने भी विस्मय के साथ पहले मुझ के पत्र को पढ़ा। मेरे ताबियों,

म प्रेनुएट हूँ और निरन्तर तीन वर्षों की बेकारी से लगे हूँ। और सिफ़ारिश के अभाव में मुझे कहीं भी काम नहीं मिल रहा है।

मैं गत तीन दिनों से भूखा भी हूँ जीवन के धारे रास्ते बन्द हो गए हैं। इसलिए 'मीनार' पर चढ़कर धारमहत्या कर रहा हूँ। मेरे बाद किसी को भी न सताया जाए। मेरी आखिरी इच्छा है कि देश में समाजवादी व्यवस्था की स्थापना हो और आर्थिक विषमताएँ मिटें।

दूसरे मुझ ने पत्र को पढ़ते हुए कहा "भूटा कहीं का! धारमहत्या को पाप कहा गया।" और उसके धपटों पर बँसी ही जीवन भरी मुस्कान खींच गई।

दूसरे की हार देख कर अपनी हार विजय में परिवर्तित हो गई थी।

टूटे हुए इन्सान



घोरे-घोरे उमने अपने किराये के मकान की दहसोख पर कदम रखा। उनकी दृष्टा हुई की दम भर के लिये सीड़ियों पर बैठ जाय पर सीड़ियों पर घुल बिधरी हुई थी और पानी के नूनने पर कई अजीबो-गरीब चित्र बन गये थे। वह बेमन मीढ़ियां बढ़ने लगा। एक बार उमने अपनी छादन के अनुसार गोंगारा धीरे पेट की जिक से मँसा-सा क्माल निबाल कर गहन पर बहते हुए गमीने को पोंछा।

उमरा रेंग वाला या धीरे धीरे प्रभावहीन। धरर बेहूष सोडा धीरे पत्रना होना तो उसरी ममना कम से कम नाक को लेकर बोहे की चौक न धररय की जा सकती थी। फिर भी उनके बिकरी-भार उमे मत्राक से हागसाम बहते ही थे।

तोरना द्वार पर वह गला धर के लिए रवा। हन्वी घेंवड़ाई-मी मी। फिर टायर के तमुके की बाई अपने की कणल को धोर न भ्रष्टा। हन्वी-मी रेल उड़ी धीरे उमने अपने बड़े मड़के को दुबारा 'मुन्ना धो मुन्ना।

जवा है। मुन्ना दाल से गले हाकों को चाटता हुआ घापा। धरर बह बाहरसामो बैठक से बैठ दवा था। रँगी-मी बाहर से रँगा दूध पत्र-मुत्तना बिगतर बिछा था। उमने पेट-कबीज

प्रिय रोमी

तुम मेरे जीवन की बहुत पढ़कर धीर नयनों की ज्योति हो पर यह बेरहम समाज हम दोनों को मिलने नहीं देता। मेरी मृत्यु के बाद तुम अपने जीवन की ध्येय मत्त योना धीर मुझे जून जान का प्रयास करना। चाहो तो तुम किसी धीर से विवाह कर सकती हो। मेरे हृदय में तुम्हारा प्यार सदा बासन्ती फूल की तरह रहा है धीर मृत्यु के बाद भी रहेगा।

तुम्हारा प्रमाणा प्रेमी

—तागर

पहले मुझसे मैं पत्र को फाड़ते हुए कहा "काम्बख्त कहता था कि धात्महत्या मूल्य है।" धीर उसके होठों पर जीवन मरी मुस्कान बौक गई।

×

×

×

दूसरे मुझसे मैं भी बिस्मय के साथ पहले मुझसे पत्र को पढ़ा। मेरे छात्रियों

में प्रेजुएट हैं धीर निरन्तर तीन वर्षों की बेकारी से तंग हैं। धीर सिफारिश के अभाव में मुझे कहीं भी काम नहीं मिल रहा है।

मैं पत्र तीन दिनों से बूझा भी हूँ जीवन के सारे रास्ते बन्द हो गए हैं। इसलिए 'मीनार' पर चढ़कर धात्महत्या कर रहा हूँ। मेरे बाद किसी को भी न छोड़ा जाए। मेरी धामिरी इच्छा है कि बेघर में समाजवादी व्यवस्था की स्थापना हो धीर धार्मिक नियमताएँ मिटें।

दूसरे मुझसे मैं पत्र को फाड़ते हुए कहा "कूठा कहीं था। धात्महत्या को पाप बसा रहा था। धीर उसके पत्रों पर बेटी ही जीवन मरी मुस्कान बौक गई।

दूसरे की हार देख कर अपनी हार विजय में परिवर्तित हो गई थी।

घोस कर अपनी बीबी की लाड़ी को सहमर के रूप में सपेट लिया था और चारमीनार सिगरेट निराल कर होंटों से लगा ली थी।

‘मुझे या माहित ना।’

मुन्ना पूर्ववत् उँवमियाँ चाटता हुआ चला गया।

फिर उसने पुछने तकिये का सहारा लिया और विचारमग्न हो गया। मुन्ना माहित से घाया था। उसने सिगरेट जलायी। दो बार लम्बे बस खींच कर उसने घाबाज सपायी ‘मुझे मम्मी को जा कर कहना चाय बना दे।’

उसकी मम्मी सरस्वती ने अपनी पतली घाबाज में भीतर से ही कहा मैं चाय बना कर लाती हूँ।

वह ध्यानमग्न-ता सिगरेट फूँकता रहा। पहली सिगरेट समाप्त हो गयी थी। दूसरी उसने अपनी सिगरेट द्वारा बना ली। पुन एक टूटी हुई प्लेट में इकट्ठा हो रहा था। चुर्चा पार-पिड़की के ब होने की बजह से ऊपर कई दिनों में सज रहा था जिससे बुटा-बुटा बाठाबरछ हो गया था।

चाय की गम्भीरी मोटी प्लासी रखते हुए सरस्वती ने पूछा सम्झी जाए ?

‘नहीं भाई भूल गया। उसने चाय की चुस्की की और सिगरेट का चुर्चा बाहर की ओर छोड़ा पर हुआ विपरीत होने की बजह से वह बापस बैठक में आ गया। चुल्हा धीरे बड गयी।’

सरस्वती ने मुँह फेर लिया और उत्पन्न स्वर में बोली ‘सम्झी नहीं लावे फिर मैं बनाऊँगी क्या ? बाइए धीरे मुझे बाजार से सम्झी ला कर धमी खीलिए।’

‘बैचो सरो मुझे संन मत करो। जो हो बना दो। पर ऐसी बकान में मुझसे बाजार नहीं लाया जा सकता। एक गवा हूँ चुरी तरह। एतए में बहुत काम ना। सिर में बर्ब भी हूँ। बाल बना लो।’

‘हमैला-हमैला की बाल मुझको धच्छी नहीं लपटी। इत बार उसके स्वर का धंवाच बदल गया था। वह कठी हुई सी लज रही थी ‘ठीक-

दिन से दाम बना रही हूँ। पर धात्र में दाम नहीं बना सकती।

धामंड मे तिमरेट का प्रस्थित बना लिया। उसे बाहर फेंकते हुए उसने कहा 'ये धात्री नहीं जा सकता। मेरे निर में बंद है।

सरो भी बिपद नहीं 'धे' गुरु बाजार म मे धाडंगी। धात्र इस तीन माह की बच्ची को नैमान सीजियेगा।

सरो प्रोध में 'धुपकारती-सी' भीतर गयी। उसकी मुद्रा बटोर धीरे दाम हो गयी थी। पलक भरते वह धपनी तीन माह की बच्ची को कपड़े में सपेट कर उठा लायी। उसे फटने का प्रभिनय करती हुई वह बोली 'मे बाजार जा रही हूँ। मुझे पैसा दीजिए। मे मरा वह बीज नहीं था सकता है जिससे मुझे मल्ल मफरत हो। मे बटती हूँ कि धात्र बीच बाजार से घाते हैं 'ठिर मन्त्री बना नहीं माने' वह धब बहुत ही धावेय-धावेय से मर उठी थी 'धात्र मुझे किसी तरह का मुग नहीं बना पाहूँगे। केवल सहाया चाहते हैं। मजाए जौ लोम कर मजाए। वह धपनी बच्ची को ले कर रोती हुई भीतर पनी ली।

धामर दूटे हुए इन्तान की तरह बाय को जन्नी-जन्नी से कर सदा हुआ। पागम कपड़े बहने। धात्र भर वह धपनी नादकिन के पास सदा हुआ। नादकिन का पितासा द्युब एकदम साराब हो गया था। कई बार बिपदाया था पर धब बिपिया ठहर ही नहीं रही थी। दुःखानदार मे भी मल्ल-मल्ल कर दिया था 'बाबू जी धब इस पर बिपिया बिपदाने के पैसा धिदुग मर्ष कर रहे हैं। ध टरंगे तो मरी। धात्र द्युब ही बर मरा सेते ?

बिनु उमक पाग पैसा नहीं है। हपर उमका जीवन बहरींगी हवाया के बीच गाँव में रहा है। इन दो बरों मे कभी उमने बिन की सभ नहीं थी। बुपा ! बीदासायक दाम ! धात्र भर के निर भी बंदनी नहीं।

बह पैसा ले कर बन गया।

धात्र के उड़ते बरों की तरह बिपद की बटमार्ग उह उह कर उमके मर के दाम पानी पीर बनी बनी।

बहु सरकारी क्लार में एम० डी० सी० है। मध्ये अपने साठा है। बहुत भाङ्ग है और उनकी भावना सत्रों के चारों घोर लिपटी रहती है। उसकी महत्वावांछा को उपसाठी रहती है। उसे भरित करती है अपनी कल्पनाओं को साकार करने को।

बहु बहु स्तुम में था तब बहुत प्रख्या प्रमिन्त करता था। बहु विरूपक बनता था और बच्चों को अपने हास्य अभिनय से गूब हँसाता था। उसके घर में परेवर नाट्य-पाटियाँ भी कभी-कभी उसे अपनी मंडली में धामिल करती थी। उसका सम्मान और धार करती थी। फिर उसने मैट्रिक पास किया। विवाह किया। तीन बच्चे भी हुए। अपनी और परिस्थितियों में सचय हुआ। नौकरी करके माँ-बाप से दूर, पछये घर में था गया।

माँ-बाप को एक बर्य तक एक वीता भी नहीं भेजा। प्रसबता बहु बहु बहुत ही तंगी में हुआ तो बच्चों व पत्नी को घर पकर भेज दिया करता था। परिणाम स्वल्प माँ का स्नेह भी उसने खो दिया। एक बार माँ ने साफ-साफ लिख भी दिया कि अपनी बीबी और बच्चों को मेरे पास मत भेजा करो मेरे पास चल का कुर्मा नहीं है जो उसमें से अपने विकास विकास कर तुम लोगों को खिलाती रहूँ।

और इस बटना के हीम बाद उसने नीकटी छोड़ दी। बहु एक नाटक मंडली में सम्मिलित हो गया। दो माह के बाद बहु मंडली टूट गयी और धारन नै बड़ी प्रमुन्त दिनम और हीड़ रूप के बाद पहले वाली नौकरी बारत पायी।

लेकिन धरकाभाएँ उसके स्वपना लोक में छटी रहें। अपने धाप से हीव धरसतोप लिये हुए बहु भी रहा था। मुबह-ग्राम बहु क्लार आता और घर में धाकर पड़ जाता। उसे हर बड़ी लपला कि उसके बीबन से तनाव ही तनाव है और हर पल मुर्बा है इतना मुर्बा कि उसमें सह जाता है रहा भी नहीं था बकता। और बहु सोचता है कि हम सभी मुर्बा है, इतने मुर्बे कि हममें अपने बीबन मुर्बा लखों को प्राप्त करने की

सातसा ही नहीं है ।

बाजार बहूँच गया । उसका ध्यान मग्न हो गया । उसने बसम सच्ची भी धीरे-धीरे पर ही धीरे बतल पड़ा ।

बहूँ भीरे-भीरे ऊबड़-खाबड़ सड़क पर जाता जा रहा था । कंसा है उसका जीवन ? न उम्मास धीरे न सुगो ।

एकदम बंजर भूमि की तरह अनुपयोगी ।

धीरे एकाएक बसे घरना बम्बराया दोस्त संतोष भिन्ना । बोला, 'तुम्हें ही ईड रहा था । गुरु भीके पर भिन्ने ।

'क्यों ?

'भाब रिहमस में बतला है ।

'बित्तन बजे ? घानंद उरगाह में भर घाया । उसकी बुन्धी-बुन्धी घाँघों में एकाएक घाय की बिन्नापी-ओ बतली ।

'टीक दस बजे ।

'कहाँ ?

'नाट्य मंडल के दल्लर में ।

धीरे बहूँ टीक दस बजे नाट्य मंडल के दल्लर पहुँचा । संतोष ने बसम बड़ी घाबरावत की । बसे घबने घाँघियों से परिचय करवाया । उमे हीरोएन 'दया' में भिन्नाया । दया ने घबर्ब बही मुम्कान से उमका हवागत दिया 'नाम बटने है कि घाय यहाँ के ए-बन कामेबिन्ना है ।

घानंद लगना से त्रिबुङ्क गया । घर्दन भीपी करके बहूँ बोला 'घाय तुम्हे घाँघिया करती है ।

'घबरा बाट में घारना घानिन्ना देघने दिस्नो है यहाँ घाँघी । बस घानिन्ना तो इस नाटक में घाय देबने ही ।

धीरे घानंद ने घरने भिन्ना संतोष में प्रार्थना की 'माई तुम्हे भी इस नाटक में बस-मा बाट दे दो । मैं घबनी बान लया हूँना—घरने बाट में ।

मेबिन्ना बमोद ने बने बीरा घल्लर दे दिया । उनने बिन्नाट का बस घाँघ कर बटा 'इस नाटक में मेरे बाहूर के बीमन बस करेने । मैं बस

घपनी परती भी उगते नारों की तारीफ करनेकी धीर वह उसने मिला एक घण्टी-नी सोने की घँबूरी साम के दरवाँ की बना कर रोज़ेगा । वह मुग के सपनों में मग्ना रहा । भूतना रहा ।

उसने जग जिन दरार से सुटी से ली । वह संतोप से पास गया । उसे घपनी मोखना मुनापी ।

मनोप की धाँसों में गजमायक की बमक दीत हो उठी । बुट्टा बरी मुसलान बिगरता हुपा वह बोणा 'वैसा बरस पड़ेगा । बाभिक के तुम बाबागाह हो धीर दया रूप की मस्लिहा है । दोनों की जोड़ी गूब रहेगी ।

धीर धानंद ने बड़ी मेहनत से एक नाटक मिया । जैसी मोघना बँसा नाटक । हर रात को अभिनेता संतोप घपनी बिच मंडली को इकट्ठा करके गूब जाय-जाय उड़ाता था । बीरे धीरे पूँजी धापी रह बपी । एक दिन चिन्तित स्वर में धानंद ने पूछा 'संतोप दो सी दरवाँ म से सी ही बने हैं । नाटक बँसे होया ?

'तुम इसकी बिठा मत करो । कस पचास रुपये दया को एखाँस भेज दो धीर उसे मिस दो कि हमारा तार पाते ही वह बपी घाये ।

वह भी बाम हो बया । नाटक की तारीफ भी तप हो बपी । दो दिन पहले तार के दिवा दया । उसने जबाब दिया 'दो सी रुपये पहले भेज दो ।

धानंद के पाँवों के भीचे से बमील बिसक बपी । वह संतोप के पास गया । संतोप ने मंभीर हो कर कहा 'साली मे बोखा के दिया । इन अभिनेत्रियों की कोई बात नहीं होती । कब पसट जावें ? मुझे ऐसा बुस्था पाटा है कि जा कर साली को पीटूँ ।

'भाई अभी इन बातों से कोई फ़ायदा नहीं । धमी तो बुझ करी मेरी बीबी के बिबा गिरबी है । 'उसने दृष्टि स्वर में कहा 'मे बरबाद हा जाऊँगा सतौप । मे घपनी बीबी को घपना मूँह नहीं दिखता पाऊँगा ।

संतोप ने साफ पक्का म्झड़ते हुए कहा 'मे क्या कर सकता हूँ ।

दुप में ही कुछ बातें जानते ही हों। बड़ी बड़की में हूँ। घर रहा मे लीन
 ली करने कापो लो काय बने बनी मुझारे काय देरी भी इग्नत मिट्टी
 में ही विरंगी।

घानद की धोंगों में धरेप छ बया। ध्या की तीरता के बाण
 पदान ठानू से न्य पयो। वह मिर पकड़ कर बँट पया। वह क्या बने ?
 नाटक नहीं जया लो जमड़ी बीबी के सारे जेकर बिज बायेंगे और
 जमड़ी गहर म बड़ी बान्नाबी होबी ? यह क्या बने ? यह रहा म इय
 तान ?

उसके मन की माटी पाटिनी बहरम हो पनी।

बह दूग-दूग-मा पर छा पया। उमने बह हूँ पैसा म मे बार पैसा
 बारमीबार मिग्रेट ब गरी- मौग रात्र तर उरुँ पैसा रहा।

नाटक नहीं हुआ। जेकर गिरती न विरंगी रहे। पनी भी मौग
 छादी। गुरु दरलान जगदा हुआ और यत्र में ज्ञान भी घानद की हूँ।
 पनी रो-रो कर चुन हो पयो। किन्तु घानद ने कुछ दिनों बाद महदुम
 बिदा कि वह जमड़ी पनी का खयाल एतदम बाम पया है। वह जमडा
 पय भी विरोध नहीं करती है। बनी भी उमक मुन-मुन क बारे म
 नहीं पूछनी है। केवन जमड़ी बाबा को पूछ करनी है। एक दिन नहीं
 बुरे मान-आत्र मि लक बाक सानी है। बायों में साधुन नहीं मदानी है।
 एकरम मुर्न इमान ! एकरम मुर्न ब्यगार ! हर बाक मे मौन म्बी
 कृति। यह पकठ उदा है। यह यह सब नहीं कर सकता। यह जगद
 मौन और म्बीकृति जमद मोहन की छिट्टि बान्ना भा छिंय जदे लब
 लब जमड़ी इच्छा हाणी है कि जमड़े बानो जमडे बाणे टोंके जमड़े
 के बान्ना बने। वह उमे टांगनी भी है पर जमड़ी पनी चुन राणी है
 एकरम चुन। जमद की मूर्ति की तरह मौन।

उस का जमडा कर बाना है गरो, म पर उरुँदा कर उरुँदा।
 दुप बुद बाननी बनी नहीं। म मुझारा यह बन नहीं न्य गवा। मुन
 मुन बदन कर बोरी बाण।

घरों का मन भर गया है। उत्तम कुछ प्रतिक्रिया नहीं होती है। वह आनंद रहती है और आनंद बरेघान। बीचम इसी पुटनदार घाबरी में सिद्धता हुआ मुजर रहा है मुजरता रहेगा।

घोर कभी-कभी घरों की चिड़ कर रहती है 'घान मुझे घमिठ संभ न करें। मे बहुत मुघ हूँ शुघ ! घान बिरबाम क्यों नहीं करते ?

घोर दोनों प्राणी समुद्र के अंतर में दूबे जाते हैं जैसे उनके आरों घोर मुर्दा घन बीचिठ हो गये हैं घोर उन्हें घपने में सीम रहे हैं घोर के हने दूट गये हैं कि उन्हें मिटा नहीं बनते।



एक इन्सान की मौत एक इन्सान का जन्म



कॉलेज स्टीट के बस स्टैंड पर, वहाँ लम्ब्या का हस्ता हस्ता धँसेरा छाने लग गया था वहाँ घनेक सदकियाँ बमस में पुस्तकें धाने लगी थी। के प्रायः हँडसूम की ही छादियाँ पहने हुए थीं और उनके चेहरों पर धापमी हमी-मजाक से उत्सव लाजगी दिखाई पड़ रही थी। सदकियाँ बमसा में बात चीत कर रही थीं। कभी-कभी मन्ने कन्गाली एक काली सी सङ्गी संघेरी में फरटि स बोलकर ममी का ध्यान घाली और धावबित कर लती थी। मैं भी उस मुण्ड को निहारता रहा। न जाने कितनी बसें धाईं और पुत्रर गद बपोरि उम स्वान से जाने वाली प्रत्येक बस मेरे पतम्य स्वान को जाती थी।

एकान्त एक भाटी हाप पीछे से मेरे बग्न पर पड़ा। मैं लखम चौका। हात पूब कर देगा—प्रह्ला था। उसकी हटि और मुसकान दोनों में रहस्य भरा हुआ था। बड़ बुध धार उर मुझे उसी हटि से देगा न राज और मैं हग धराया मिन मिनन के कारण गाय हो गया। मुझ से कुछ बोला नहीं गया।

तभी उसने उसी मुसकान के साथ कहा— "गहवाना नहीं मुझे?" और वह निताला सदब मुग में हो गया।

"तुम्हें क्या पूब लजता है?" मैं धरनी धापीयता से

घमीर स्वर में कहा "तुम्हारे माप मेरे घण्टा की महरबपूर्ण राख मुझे है। बताओ घाजकम क्या पन रहा है ?

"बुद्ध नहीं। उसने तुम्हें कहा।

"क्या मतलब ?"

"बहु बुद्ध नहीं। कोई काम तुम्हारे ध्यान में हो तो बताना घाजकम में बर्दा लम्बी में है।" और वह मुझे लम्बी के एक रेस्तराँ में जाय बिसाने को ले गया।

हम दोनों गिलासों में बहुत ही कड़क जाय पीने लगे। मैंने घपनी इटि रेस्तराँ में सबे किसी बंजामी बिज के मैंने पोस्टर पर जमा कर पुछा "फिर तुम्हारे उस घाजकम का क्या हुआ ? उस प्रस का क्या हुआ ?"

उसके चेहरे पर संकोच की रेमाएँ बौड़ गईं। जब मेरी इटि बहुत पीनी और लैज हो गई थी तथा उसके मुख पर घपसक जमी हुई थी। वह इधर-उधर टाटने लया और उसने कट से जाय का बसता हुआ एक बड़ा बूट लिया जिससे उसकी घाँसों में पानी ठेर घाया। अपने क्माल से घपनी घाँसों को पोंछता हुआ वह बोला "ममी बुद्ध जसा गया जम्ह लैया घमी बुद्ध। जब तो वह खरीर रह गया है और इन्सान का खरीर जिसमें पुरुष का उरुकी फूटी कौड़ी भी नहीं उट्टी। वह जण मर क्का और मेरी घोर देपता हुआ ब्यवापुरित स्वर से बोला "कोई काम बिलाओ न ? तुम्हें घायब वह मामूम नहीं है कि मुझे टाएप मी करला घाता है। मेरी स्पीड ४०-४५ की है।

मैंने जगते प्रका क्रिया कैजिन तुम तो बर के घमीर हो। तुम्हारे घपने बर का बड़ा ब्यबसाय है फिर ऐसी दिवसत क्यों ?"

वह चुप रहा। मेरी घर्ब खरी इटि उस पर जमी हुई थी। जाय के गिलास खाधी हो गए थे। वह हठात उठता हुआ बोला "कोई इन बासों को। बताओ तुम कसकता किसने दिन घोर रह्यो ? बड़े घासों के बाब घाए हो ? घायब बार-माँब सान बाय।"

जमीर स्वर में कहा "तुम्हारे माप मेरे घायल ही महसूसपूर्ण
पुत्र है। बलाघो घायल क्या बन रहा है ?

"बुझ नहीं।" उसने तुरन्त कहा।

क्या मतलब ?"

"बस बुझ नहीं। कोई काम तुम्हारे ध्यान में हो तो बताना
कम में बर्बाद नहीं म हूँ।" और वह मुझे समीप के एक रेस्तरां में
बिस्ताने को ले गया।

हम दोनों बिस्तानों में बहून ही कड़क चाय पीने लगे। मैंने
दृष्टि रेस्तरां में लगे फिजी बगामी बिज के बेंसे पोस्टर पर जा
पूछा "फिर तुम्हारे उस साप्ताहिक का क्या हुआ ? उस प्रेम का
हुआ ?"

उसके बेहरे बर संकोच की रेषाएँ बौड़ गई। अब मेरी हडि
पैनी और तेज हो गई थी तथा उसके मुख पर प्रथमः कमी हुआ
वह इतर-उतर ताकने लबा और उसने अरे चाय का असत
एक बड़ा बूट मिया जिससे जमकी घाँटों में पानी ठेर घाया।
कनाक से प्रगती घाँटों को पोंछना हुआ वह बोला "समी कु
क्या बस मैंना सनी कुछ। अब तो वह शरीर रह गया है और
का शरीर जिसमें पुरुष का उसकी फूटी कौड़ी भी नहीं चटती।
छाए मर रहा और मेरी घोर बेचता हुआ अभापूरित स्वर से
कोई काम बिलाघो न ? तुम्हें शायद यह मामूज नहीं है कि मुझे
नी करना घाता है। मेरी स्वीड ४०-४५ की है।

मैंने उससे प्रश्न किया "लेकिन तुम तो बर के जमीर हो।
प्रपने बर का बड़ा अयसय है, फिर ऐसी दिवजत क्यों ?"

वह चुप रहा। मेरी घबर् घरी हडि उस पर कमी हुई थी।
बिस्तान खाली हो गए थे। वह हठात चटका हुआ बोला "बोस
बावों को। बलाघो तुम कसकता फिटने दिन और रहोगे ? बने

पूरे छह घण्टे बाद । घाटा युग बीत गया है । समय की रफ्तार भी कितनी तेज है ? ऐसा प्रतीत होता है कि मैंने कमकाल को कम ही छोड़ा है ।

हम दोनों बाहर घा गए । बोड़ी दूर पर कालन स्ट्रीट का पार्क था । इन दोनों करती का मजा लेकर बस रहे थे । छपूरी बात ने मेरे मन में उत्कण्ठा पैदा कर दी थी । मैंने उसने प्रश्न किया "नहीं माई, बात क्या है यह मुझे बतानी ही होगी । यदि तुम धानाधानी करोगे तो मैं मून की तरह तुम्हारे पीछे सब आऊँगा और सारी रात तुम्हारा पीछा नहीं छोड़ूँगा ।"

"बात यह है बस्र धमी मुझे एक जहरी काम में जाना है । मैंने अपने एक मित्र को समय दे रखा है । उससे मुझे कुछ राह देने हैं ।"

"यह प्रोग्राम तुम्हारा फेम ही मगभ्ये । जब तक तुम मुझे लड़ी स्थिति से अवगत नहीं कराओगे तब तक मैं तुम्हारा पीछ नहीं छोड़ने वाला हूँ । यह रात है और मैं हूँ । भूत की तरह पीछ गया रहूँगा ।"

"तुम विद न करो । मुझे जान दो ।"

"नहीं जाने दूँगा । मैंने बालक की तरह हट करके कहा, 'समझ में नहीं आता घालिर तुम मुझ से बोरी बात छुपाते क्यों हो ? जरा विधने दिनों को भी याद करो, सबमुख प्रज्ञाप तुम बहुत बदल गए हो ?"

पार्क के पास हम दोनों घा गए थे । अंधेरा गहरा हो गया था । पार्क की बुनियाँ पर बके-हारे मुकम-मुकमिमी बँठी थी । नरकारी बलियाँ का पड़ता हुआ प्रकाश उनके चेहरों की उपासियोंको स्पष्ट कर रहा था । मेरा अनुमान था कि इस बड़े नगर में मैं ही इन बगीचों की बँचों तथा बुनियाँ पर बैठता हूँ जिनके पास होटलों में खर्च करने के दैने नहीं होते । जड़े बड़े चेहरे गुमते रहे मेरे घामे ।

ड्राम की गड़गड़ाहट ने मेरा ध्यान भंग किया । हम दोनों ठीक मैग-गोस्ट के नीचे थे । प्रज्ञाप का चेहरा मुझादृष्टवित विपद्यता से

“पूरे छह साल बाब । घाघा भुम बीत गया है । समय की रफ़्तार भी कितनी तेज़ है ? ऐसा प्रतीत होता है कि मैंने कमकत्ते को कम ही छोड़ा है ।”

हम दोनों बाहर धा गये । बोड़ी दूर पर कालेज स्ट्रीट का पार्क था । हम दोनों बरती का मजा लेकर चल रहे थे । घण्टी बात में मेरे मन में चल्कंठा पैदा कर ही थी । मैंने उममे प्रश्न किया “नहीं माई, बात क्या है यह मुझे बतानी ही होगी । यदि तुम घानाकानी करोगे तो मैं भूत की तरह तुम्हारे पीछे सय बाँझ्या घौर सारो रात तुम्हारा पीछा नहीं छोड़ूँगा ।

“बात यह है जब धनी मुझे एक बहरी काम से जाना है । मैंने अपने एक मित्र को समय दे रक्ता है । उससे मुझे कुछ ब्याए मेने हैं ।”

“यह प्रोघाम तुम्हारा फेन ही समझे । जब तक तुम मुझे सही स्थिति से सबबत नहीं कराघोगे तब तक मैं तुम्हारा पिंड नहीं छोड़ने वाला हूँ । यह रात है घौर मैं हूँ । भूत की तरह पीछ सया रहूँगा ।

“तुम जिद न करो । मुझे जान दो ।”

“नहीं जाने दूँगा । मैंने बामक की तरह हठ करके कहा, “समझ में नहीं आता आखिर तुम मुझ से कोई बात सुनाते क्यों हो ? जरा विझने दिनों को भी पाह करो सबमुच प्रत्याय तुम बहुत बदम गए हो ?”

पार्क के पास हम दोनों धा गए थे । घंघेर घहरा हा मया था । पार्क की बुनियाँ पर बके-हारे पुबक-मुबतियाँ बँठी थीं । मरकारी बतियों का पड़ता हुआ प्रकाश उनके चेहरों की उवातियोंको स्पष्ट कर रहा था । मेरा अनुमान था कि हम बड़े नगर में है ही “न बदीची” की बेंचों तथा बुनियों पर बँटल है जिनके पास हीटनों में चल करने के रीने नहीं होते । उड़े उड़े चेहरे भूमते रहे मेरे घाये ।

ड्राम की बड़बड़हट ने मेरा ध्यान मंय किया । हम दोनों ठीक लैम्प पोस्ट के नीचे थे । प्रह्लास का चेहरा फु म्भाट्टबनित विवपता से

बरा हुआ था। वह कुछ भी कर बीना "हाँ वह गुमराही बड़ा
जगती है।"

"कुछ भी मत करो। इसे जल्दी छोड़ दिया देव ही बड़ा बसोड़
से बन ही बन करने इन अरुणार को बड़ा अगिष्ट समझ रहा था।

"तो फिर मुनो।" उनके बानी से बानी दृष्टि इधर उधर होवाई।
भंग्य-गोस्ट के शीशे कोई नहीं था। बोझो दूर पर बाक में लटे दो कुम्ह
बानी बागबान में ठामर ब। इन्स-ब के मुझे के बड़ा से गुमराही है।
से पुजा देमना है। धार मुझे लर धाम्मो को रंभे देने है। धर नगी
रुंवा तो वेरी इरुमन धुन य विन मापरी नमभे। धर से बनना है
नमय हो लर है।" धोर उर भाग कर बानी बग में बर गया।

देर ममय मीनर दोरः वा प्रवासा धंभरा बन गया। विनर प्रानी
की तरद में निरवतनिरुद मरुत रहा। उरुणर केने मरु में प्रानी वा लीला
नया कर बला मया। उरुणी बग मुमगे बहून पुन निरवतनर की धन
में निरवतनर कुछ देर मरुत रहा।

दिर में पीटे पीटे बरुम उरुणा हुआ मरुत पर जाने मया। पर
बहुँप कर धरिणर के मुनू लामा धीर पर दया। विनरे कर बरुदें
बगमया रहा। बार-बार बीरुणा रहा बगमर बनने बागय य मरुणा
पुमारी बंभे बन मया ? हमने धरना मरुंगय पुन के उरुा विना ? मरु को
विनराम गरी मुनू। नगना या रंभे नगी कुन विप्या हो। इरुणरन
बदिर धरुण की तरद। धरुण मुझे को प्रम ही मया हो। इमी उरुद
कुन में से मो मया।

मुगरे दिन मुबह ही मुबह में प्रुणा क पर दया। बसों के बार
मया था हमने उरुने बार के मुझे बहबाना नहीं। धरने विना धरनी
राजमपानी पगरी को बाँभने लर बार धाल धीर बरुन कर बीने
"बदिर, धरुको विरुने दया मने है उरुने ? विरुने की विट्टी (ईद मोन)
विनासाई है ? पर में धरुका नाक-नाक बरुण देना है। कि धर में उरु
बालाधर-बमीने की एक पटी पीठी भी देने बाला नहीं है। मने लर

मासूम है कि मासूमकन यह चार लेकर चालीस सिख रहा है।”

मैं उन्हें कैबल देखता रहा। जब उन्होंने एक साथ यह कह कर बुध्दी साथी तब मैंने विनीत स्वर में कहना शुरू किया “बाबू जी। आपने मुझे पहचाना नहीं। मैं हूँ चन्द्र बीकानेर।”

“पर चन्द्र बेटा घाघो-घाघी प्रह्लाद की माँ देखो चन्द्र घाघा?”

त्रिगुणी के घपनी निर्दयता से बिसकी हर बस्तु छीन सी है। ऐसी कंधालबन् एक कूड़ा मेरे समान लड़ी हो गई। उसने मुझे पीड़ी बेर देखा फिर बमता बरे स्वर में बोली “घाँघों की बोट भी जाती रही बेटा बड़ी मुश्किल से बेहूष पहचान पाती हूँ। एक कपूत सारे मुटुम्ब की नैया को डूबो देता है। या बेटा या तेरे लिए चाय बनाऊँ?”

“नहीं माता जी चाय पीने के बाद ही विस्तार छोड़ता हूँ। बड़ी नदी घाघन पड़ गई है। प्रह्लाद कहाँ है?”

उसके बाप के पगड़ी पहन सी थी। कोर को पटनते हुए वह बोस “हमारे लिए यह मर गया और हम उसके लिए मर गए। बेटा उसने हमें कहीं का नहीं रखा समाज में इतना जमीन करा दिया है कि हम गर्दन ऊँची उठाकर भी नहीं बता सकते। पन्द्रह-हजार का भुगतान करने के बाद मैंने घपना हाथ रोक लिया। रामद तुम्हें नहीं मासूम? हो भी कैसे? तुम्हारे जाने के बाद वह कुछ रईसजानों के फेर में पड़ा। उनमें विपना करने के लिए उसका मन लालायित हो उठा। घपनी हैमिपन की परबाह किए बिना बह उनके साथ घमाप-घमाप घर्ष करने लगा। बीरे-बीरे वह जपनों में जाने लगा। काम भलने लगा। पड़ल एक घाना प्वाइंट घोर बाद में एक रूपया। जमा हुआ बंधा छपड़ने लगा। पत्र बन्द हो गया। प्रम बिरु गया। फिर बह राठ-राठ मर मर नहीं जाता। बह के मरने बुराने लगा घोर एक दिन एक पुण के घह में कई बुधा टिपों के साथ बह भी पकड़ा गया। छपबारों के खबरें घापीं ब्यादि समय कई रईसजाने भी थे बलीजा यह निरता की घानदान की दान पिट्टी में मिल गई।” उन्होंने घरी लॉस लेकर कहा “मैं सोचा कि

एक घण्टा में वह सुबह उठता था नहीं। बगी बेशकी लगातार। क्या करता? कुछ बड़ा-भूरी होती है। पीठ पीठे बर्तन बाग्य बना "म पर एक दिन बीर साहब के घरीब गा भी।"

घरीब! मैंने सुन के भीग ही निकली।

भई केन घरीब गा भी। साधार होकर मैंने १४ हजार का देना चुकाना बीर उगने पर एक गाथो का समय गाई कि एक बहू कभी भी चुपचा नहीं होता था वह बगल में भीग जो लिखा ही थी के हीवा परंतु वह भीग नहीं होता कि वह ही गलत क्रिया स्वभाव होगा ही बना है वह घरे के बाहर ही लगा है। तो उगने के ही बगल गाई। पर सांगरे ही दिन वह रात का नहीं घाना। बगी लगातार। साधार मैंने इसे पर न घबरान कर दिया। साधार परिवार का बाध उगना बगल जो मुझ के पर गब स्वयं? सुन गलत भी निकला। ही निगी भी घरीब का गई। चुपचा ही का बीर गाता बगलगा? सुनाना ही का गलत नहीं का नहीं। साधार साधार होकर गई। लोके कथा में एक घरेबनी बगी गा गई है। हीनता के कारण के पर में ही १८११। बेटा एक र्चिताम ने मेरा गर्वनाम कर दिया। बीर उनकी घीग कर साई।

मैंने उगरे साधारगा देने के लिए बहू बाग्य बगल प्रथम होगा है बाहु भी।

"बीर बीर भी लिए दिया या गलता है?"

तो भी निगी गा गई। बहू बड़ी हो गई दी मित्री। घोरन की लज्जा उगती दांगों में बगल ही थी। मैंने कभी मुनवान व गाथ बड़ा "मित्री तु तो बहू बड़ी हो गई।"

मित्री में गर्दन भीभी कर भी।

तू बड़ी सुन्दर बहन है। जाने के पार कभी राती ही नहीं मित्री?"

उगने महमलै-महमलै बहू "माय पता भी बेकर नहीं गये। मागरी बिट्टी देगी सादिए भी।"

तनी बाबू जी ने धरदोष उत्पन्न किया "मित्री का भया के लिए चाप बना ही सा।" मित्री जमी गई। उसका बरगाम्पाकिन मुख मेरे सम्मुख बड़ी बेर ठक नाचता रहा। पत्रमियों की नीचे ठीरती दर की छायाएँ उबाम-उदास रेखाएँ। मेरा धमत्त पमीत्र गया। चाप पीकर मैं बैठे ही बाड़ी के मुख्य द्वार पर पहुँचा बस ही मित्री ने मुझे पुकारा "भैया।"

मैं इक बकर गया सा पर मैंने कोई उत्तर नहीं दिया।

"भैया! चाप हो प्रसाद को समन्वयण म उनके कारण सारे परिवार पर संकट छा गया है। सभी दुखी हैं।" उसका स्वर बरा गोरन पुरित्त हो गया "घोर मुझ पर तो दुग का पहाड़ टूट पडा है। जेल के कदी की तरह जीवन हा गया है। मेरा हर बदन पर माँ लड़ी रहती है सोया मेरा धरना कोई ब्यतिरिक्त नहीं मेरी धरनी को भंगिबता नहीं बस मैं धरना बना-बुरा जानती ही नहीं हूँ। हर पक्षी माँ मुझ से जली हुई भी बोसती है। गादी भैया के कारण दरी घोर उसका दुख मुझे मोदना पड़ रहा है। जानते हैं चाप देरी पड़ाई बीन न ही छुड़ा की बर्बा में धर भेदिक्र पाव कर सेती मुझे किसी से हेमजर बाउधीठ नहीं करने की जाती है यहाँ तक कि धरने छोटी म भी। गहेमियाँ कहती हैं कि तू धरान्न बँबारी रहेगी। पुपारी की धरन को धरने सेगिया-उमात्र में कोई भी बहू नहीं बनाग्या और बाबू जी मुझे धरामी निरधापी हो बरन रहते हैं। मैं धरको हाय बोझी हूँ कि चाप भया को समन्वयण, जनस कठिण कि धर किम मित्रा क निण प्राग दने को उत्तर रहूँ के उसको बरा दुर्दग तो देखिए।" मित्री की धायें सजन हो गईं। मेरा मन भी भारी हो गया। तनी 'मित्री-मित्री' की बरगाम्पाकिन हुई धीर मैं उनसे बिदा लेकर जता धाया। धरने-धाने प्रह्लाद का पाा मो पुण धाया।

बाँये रोज मैं प्रसाद के पर बहूँसा। मुझ ही ठाया मुझ 'एक छोटी सी बाड़ी में यह एक बरगाम्पाकिन रहता सा। बरने की पिछरी

दीवार लोखन के बीनी थी । इन सब बच्चों में सबसे लो बेचियाँ घोर हो गई थी । उनकी बहुत बड़ी ही बं धानु उठान रही थी । उनकी देख बड़े बेबी ही बोनी थी । मुझे देना ही बं धानु भर इनकी-बगरी रही बार में लिखप धरी मुफकन गिरेर कर बोनी । अब धानु धानु ? इतना बहन को लानु वा नहीं ?

उसने मेरे जिग लर बोनी बिद्या की । मैं उन पर बं ता हुआ बोना "नहीं घरेगा ही धानु है । लिखो मैं बचानक बिचार हो दना वा ।"

"बधा बहाना बना ? ? जानबूझ वा नगी लाने धानु गनी बरं एक मे होने है ?"

बधा नहीं बना मुझे बचानक मुना ? मेरे हूंगे हूँ पीरे में बधा "बदं एक मे न होने ता धानु दुब ति न दइ जाती ?

भाभी प्रमा ललम उठान हो गई । मेरे बचानक वा उगरे हूय कर घोर वा बचानक गना । बर बुनी हुई ती बोनी "घानु मुझ लिखनी मुगी बारते गिग" मैं तो बोने हा होई । । अब धानु ही देखिग न ? लिखना बहानाकर भीषण है ? इनके पीछ मेरे बीतर जाने भी मुझ मे लोपे बं बात नगी बनने । उन मे भी गने गदमाने में बोई बोर-बगर नहीं लगे लिखु दने गिर कर लनि देना वो धा लिखते ? धनी धानु को मुनने हो नगी ! बल उगी ही उम्दी । बलम घोर "लिखते" उसने जिग बुना भी नहीं । बरं बार बहने मां मे भी लिखे धानु मे मेरी बरर की बर धर बर भी बरग हो गई । मेरे जिग लो वा बहना है कि तु लगे धानु-बहने को छोड़कर धानु पर बपों नहीं धाती ? मैं लबक लूना कि तु लिखता है । बर मैं हूँ छोड़ कर नहीं जा लगी । बुरे दिन में ही पानी की गीगा होती है । धानु भी हो बरं भेदा धानु-बह है तो मेरे धानु ? बर पत्र के साकने धानु ठक लिनी लो नहीं बनी है ? यह बोई मुगी धानु ही है ? बनी बिगलिगते बचनों को देगकर वो पढ़ते हैं बर धुधा धाक नहीं गते ।"

प्रदान धा मया वा । उगके साब बित्री । मुझे देखने ही बह बिपक

पड़ा 'तुम्हें मैंने मना दिया था फिर भी तुमज अपने मन की पूरी की। तुम्हारी यह प्रवृत्ति मुझ से सहन नहीं हो सकती।'

मैं उठ नहा हुआ धीरे बोला 'अपनापन तुम्हें यहाँ तक खींच लाया। निश्चयने सोहार्द धीरे बन्धुत्व में विभय कर दिया। प्रह्लाद! जुया मैमना छोड़ दो।' मेरा स्वर अन्ध में मारी हो गया।

'नहीं पट्टा अन्ध नहीं छूटता। तुम ममझते हो कि मैंने भेदा नहीं की। बहुत की पर हर रात्र हिंसितिया के रोगी की तरह मेरा मन बुद्ध के घड़ पर जाने क लिए छपटाने मयना है। बीबी का अनुपेक्ष बन्धों की दयनीयता धीरे कर की तबाही सभी बुद्ध अब नये क पीछ भेरा हो पाते हैं धीरे मैं—।' वह एक दम रुक गया 'तुम यह नहीं जानते कि मैं भिक्षु की विजना चाहता हूँ। इस बहुत को मैंने पुनो की टानी की तरह धनने इन हाथों से पाना-पोसा है। इमक एव-एक धीरे को मुनाने के लिए मैंने सो-नो मुमकाल विजयी हूँ। हिंसु क्या कहे? इसी बहुत क बीबन को मैंने बहुर बना दिया है। मैं इनके दर्द को मूक जानता हूँ पर मेरी परबगता सबसे अधिक पतिबान धीरे छुर है।'

वह परबगता की धाय में बस चला था। कपरे में सप्ताह धा पना। मित्री की धानों मरी-अपी सी हो गई विवस-विचार चारों घोर प्याण्ट सा हो गया।

मैंने धायविबान के नाव कहा 'मनुष्य तारर हो तो प्रदेक अब दुग धीरा वा सजना है। मंसार में धमम्भव बुद्ध भी नहीं है।'

वह तरन मरी हमी हंस पड़ा 'मूर्खिया बोलने में बड़ी महज होती है पर प्रयोग में जगती ही दुप्कर है। धीरे, अब तुम मरी मोग देमा ही मयनडे हो तो समझने रहो। मैं जुया करने पर ही छोड़ूँगा। अब तुम वा मरुन हा।'

मैंने जाते हुए तुम्हें में कहा 'तुम्हारे धाय कोई मजदूरी नहीं है तुम बरमापी पर उतर धाये हो धीरे जो कति बरमापी पर उतर पाया है उमे जो भी गठी गन्धे पर नहीं ना मयना।' मैं हवा की

दीवार लीजक से बीबी थी । इन दुःखों में उनके दो बेटियाँ घोर हो गई थीं । उसकी बहू धनीटी व घाम उबाल रही थी । उसकी देह बहने लगी ही बोटी थी । मुझे देखते ही वह धाग भर हकमी-बकरी रटी काट में गिराव करी मुनकाव बिगेर कर बोली "अब घाग घाग ? हमारी बहन को माए वा नहीं ?"

उसने मेरे लिए एक बोरी बिद्या ली । मैं उन पर बैठता हुआ बोला "नहीं घोसा ही घावा हूँ । दिल्ली में घबाराक बिचार हो गया था ।"

"बवा बहाना बनाव ? ? जानबूझ कर नहीं लाने घाग नहीं कई एक ने होने है ?"

पता नहीं बपो मुझे मजाक सूना ? मेरे हुंला हूँ भीरे म बहा "नई एक है न होत तो बाप दुबमी न पड़ जाती ?"

भाभी प्रया एवम उशम हो गई । मेरे मजाक का उगके हृदय पर धोर का घाघान गया । वह पुत्री हुई भी बोमी मा मुझे रिगनी घुरी मारते रहिए, मैं तो मोटी ही होईनी । अब घाग ही बैगिए न ? कितना बटुबाबर अजम है ? इनके पीछ मेरे बीहर बामे भी मुझ से लोपे नूँ बाव नहीं करते । उगके भी उगके सामाने मैं कोर् कोर-नगर नहीं रगी रिगु इनक निर कर लानि बैपता जो वा गिराये ? मनी बाव को मुनते ही नहीं ! बस उरटी ही उरटी । बजमे घोर प्रतिगारै उनके लिए कुछ भी नहीं । कई बार पहले माँ से भी दिये बग मे मेरी मरक को पर अब वह भी बगर हो गई । मेरे पिता जी का करना है कि तू ऐसे घाघाघ-नकने को छोड़कर चलने पर क्यों नहीं घाठी ? मैं तबक सूना कि तू बिपवा है । पर मैं हूँ छोड़ कर नहीं जा सकती । बुरे दिन में ही पत्नी की पौसा होती है । कुछ भी हो बग भैया घाघिर वह है तो मेरे पति ? घा बज के सामने घाघ ठक रिभी ली नहीं बनी है ? वह बोई मुनी घोड़े ही है ? कभी बिलदिसाते बच्चों को बैलकर रो पड़ते हैं पर पुवा छोड़ नहीं लतते ।"

प्रहास घा गया था । उगके छाब मित्री । मुझे देखते ही वह बिबक

पढ़ा "तुम्हें मीने बना दिया था फिर भी तुमने अपने मन की पुटी की। तुम्हारी यह प्रकृति मुझ से सहन नहीं हो सकती।"

मैं ठग रहा हुआ और बोला "अपनापन मुझे यहाँ तक सींच लाया। निदाने सौहार्द और बंधुत्व ने बिगड़ कर दिया। प्रह्लाद! मुझा नेचना छोड़ दो।" मरा स्वर धन में जारी हो गया।

"नहीं छूटा अन्ध, नहीं छूटा। तुम समझते हो कि मैंने भेदा नहीं की। बहुत की पर हर रात मिस्टिरिया के सेगी की तरह मेरा मन हुए क झट्टे पर जाने के लिए छपटाने समता है। बीबी का अनुपेय बच्चों की दानीपता और पर की तबही सनी कुछ बस मये के पीछे पीछ हा जाते हैं और मैं ।" वह एक दम रुक गया "तुम यह नहीं जानते कि मैं मिश्री की बिजना आहता हूँ। इस बहान को मैंने पुर्नों की टामी की तरह अपने इन हाथों से पाता पाता हूँ। इसक एक-एक घाँसु को मुमाने के लिए मैंने सो-सी मुसफान बिजरी है। बिन्दु बना कर्म? एसी बहन के बोधन को मैंने बहुर बना दिया है। मैं इसक दर्द को मूब बावता हूँ पर सही दरबानता सबसे दर्दिक दृष्टिबान और करूँ है।"

वह परबाठार की छाप में जल रहा था। कमरे में सभाय छा गया। मिश्री की दाँके मरी-अटी की जो दर्द बिगड़-बिगार जारी और प्यास सा हो गया।

मैंने आत्मनिश्चाय के नाब कहा, "अनृत्य ठहर हो ता प्रत्येक धन पुन घोषा जा सकता है। संसार में अन्धकार बुध नी नहीं है।"

वह तरल मरी हँसी हँस पड़ा "मुनियाँ बोसने में बड़ी सख्त होती है पर प्रयाप में जननी ही दुप्पर है। गौर, जब तुम मरी कोप देमा ही बसमते हो तो समझने नही। मैं मुझा करने पर ही छोड़ूँदा। जब तुम का मरने हो।"

मैंने बाँटे हुए पुमे ग बना "तुम्हारे साथ कोई मयबुपी नहीं है। तुम बरमाजी पर उतर घाटे हो और जो धनिक बन्धापी पर उतर पाता है उसे कोम भी गी राधे पर नहीं जा माना।" मैं हूँ

तरह बता पाया।

समय गान बाढ़ बाँ में एक सम्मेलन में भाग लेने के लिए बनरसा पुन चाया। सम्मेलन में निरूत होने के बाद एक दिन हम सोन खीरपी पर पुन रहे थे कि एकएक मुझे प्रज्ञा की मूरत में कुछ विनता पुनता कोई व्यक्ति गिनाई पड़ा। उसे देखते ही मुझे प्रज्ञा का ही चाया। हमारे दिन में उसी लोटी ती बाड़ी में पहुँचा। बड़ी न जानूम हुआ कि प्रज्ञा वहाँ में बता गया है। मैंने सोचा कि चाय- बिराया न चुनाने की बरन न मरान-बागिन में उमरा सामान भोगाम करा दिया होगा। मैं उनके बाप की बारी गया।

हार पर मुना-मुना मा एक इमान मुझे सीगा। उगरी बाड़ी बड़ी हुई थी खीर उगने मेंही-भी भोगी पहन लगी थी। उगरी घाँतें भीतर रेंगी हुई थी खीर वह बुझा-ना गम रहा था। मैं उनके सामने लड़ा हो गया। वह मुनी मुगफान के साथ बड़े ही पीमे ररर न बोना “घायो कब कब घाए भैया ? बाबू भी ऊपर है। मैं सोझो देर में घाता हूँ।

मैं उनसे गम्भीरता न समझा कुछ भी प्रश्न नहीं कर पाया। कुछ बाप ऊपर बना गया। एक घबोद-सी उगरी बड़ी के बातावरण को बेरे हुए थी पुटन घोर लड़न ! बाबू की गिनाद-दिताव में लरतीन थे। मैंने उनका ध्यान भ्रम किया। वह मुगफानते हुए बोले “घायो कब घाए ?

“कुछ दिन ही गए।”

“धीर घाए ही कब ?”

“कुर्मत नहीं मिनी।”

‘बैठो चाय तो पीघोये न ? घरे मैं भी गया हूँ इनके लिए मुन्हें कुछ रहा है। प्रज्ञा की माँ ! चाय तो बना ला। धीर वह बोड़ी देर तक लक्ष्य से बैठे रहे। मुझे निहारते रहे। मेरे देखते-देखते उनकी घाँतें भर घाए। मैंने संकित होकर पुछा ‘बया बात है बाबू जी ?

बाबू जी ने कुछ निकलते हुए बड़ी कठिमाई से कहा पिछली बार

तुम्हें मिश्री ने चाय पिसाई थी घीर घात्र मिश्री ।

“क्यों मिश्री को क्या हुआ ? मैंने व्यग्रता से पूछा ।

“मिश्री हमें सब कुछ लिए छोड़कर चली गई ।

मैं पत्थर हो गया । बाबू जी मेरे सामने घाठ-घाठ घाँसू बहा रहे थे । माँ भी घाकर रोने लगी थी । कितने क्षण बीते मैं नहीं जानता परन्तु जैसे ही मैं होश में आया मैंने अनुभव किया कि मैं रो रहा हूँ । मैंने जैसे स्वर में कहा ‘क्या हुआ मिश्री को ?’

“मैं बताऊँ ?” रपमंज के अभिनेता की तरह प्रह्लाद ने कमरे में प्रवेश किया । मेरी प्रश्नधरी घायल उसकी ओर उठ गई । वह लडा खड़ा बसते स्वर में बोला “मैंने उसे मार दिया । मैंने उतकी हत्या कर ली । मेरे बुधारी ने उधकसी के सारे सपनों को मिटा कर रस दिया । अन्न । घब मैं बुधारी नहीं हूँ । मैंने बुधा खेतना बन्द कर दिया । घब मैं नीकरी करता हूँ पर वे दो घाँवें ? नहीं नहीं मैं उन्हें नहीं भूल सकता । मिश्री की घाँवें नहीं भूली जा सकती । घीर वह अशोप बालक की तरह रोता हुआ भीतर चला गया ।

चाय के प्यासे ठंडे हो गए ।

मैं उमन-सा उठा भाभी के पास गया । भाभी बचारी मुर मुरकर पिजर हो गई थी । येहरा उमरी हुई हृदयों की बजह से बुक्य लगने लगा था । मैंने हृषिम हूँगी के साथ अनिच्छा से परिहास किया “घब क्यों बुकसी हो रही हो ?”

भाभी कुछ देर मेरी ओर देखती रही घीर बाद में सिद्धकी की यह धन्य पर हृष्टि केना कर बोली “पता नहीं क्यों घाकरे भैया के इस रूप का मुझे उध रूप से अधिक भय भवता है ? यह प्रशान्त दान्ति यह अमर्य मौन यह एकरमना घीर यह उरातीनता जब मैं उनके इस समूल परिवर्तन में हर घड़ी चिन्तित रहती हूँ । हर घड़ी आर्चन्य बनी रहती है कि कोई अनुभव होने वाला है कोई घाँधी घाने वाली है । अन्न भैया घब वह मह्य नहीं है ।

‘बहु महत्त्व भी हो जाण्डे । बहन का धारणा है न ?’

‘हाँ मिन्नी ने धारणादत्ता की ।’

‘धारणादत्ता ?’

‘हाँ ।’ उगने टूटते तब न बड़ा ‘उन रात खोर का नूपान धारणा का मयादक नूपान । नूपान के साथ बाहनों की मयादक मयेंना मुनलाधार बर्षा । तब मिन्नी बाई इन बमरे में धकेली सीधी थी पता नहीं नब बहु बाहर गई और नब उगने इन के दूर कर प्राण दिए, यह उन मयादक रात को कोई भी नहीं जान गया । बाबू की को मुबह ही पता चला । हुंसाया मय मया । हुमें एक बाड़ी में बुलाया धारणा । मुनत ही बहु बेहोश हो गए । बाड़ी मुदिक्त से घड़ी जाए । हाय ! कितना बीजत्त हब न ? मैं उन्हें नहीं देगा छत्री । और बहु पागला की तरह हाहाकार करन मये । इन्होंने धरना फिर छोड़ दिया मुदिक्त हो गए । मिन्नी बाई ने मरने के पूर्व एक नम निता का धरने धेवा के नाम ।’ धारी छत्री और बहु नम निकाल कर ले धार । खोरकर पड़ने गनी— धेवा । मैं तपा क लिए जा रही हूँ । बहन एक खोल चिरिया होती है एक न एक दिन छोटे बूतरे की बधिया में जाना ही पड़ता है । हंसनी नाठी उड़ती नहकती छत्री का धदूट धनुषाय लिए हुए नद दूनरे की पृथक्धमी नम जाती है । बाप का साड़ धाँ की ममया और धेवा का बुलार छत्री कुप्य उनके धनुषाय की बिबाई के समय उनके धन्तस के केन्नीमूत हो जाते हैं । और मेरी इस धन्तस माया को देता मैं सभी का प्यार धेरे साथ है किन्तु तुम्हारा नहीं । क्योंकि तुम संतान के धुषम से बनते हो तुम्हारे भीतर का इनसान मर चुका है । तुम से धार्वना है कि मेरी धर्मी को धरने दिन में पठ संतान को बसाए हुए पत पुना । संतान का स्पर्ध मेरे नरलोक को भी इहसौर की तरह बिबाड़ देगा । धपर धुधो तो धरने भीतर नए इनसान को जन्म देकर जो मुझ धेरी धमाधी बहन का धीवन न ले बहिक उगे सुवों-सुवों तक धुबरियाँ धोकाता रहे । जिसके स्पर्ध मैं धलीकिक धानन्द मिले’

‘धेवा ! मरने

मे पहले मेरे मन में किसी का दुख है तो तुम्हारा। तुम मुझे बचपन में मिली कहते थे। जानते हो मिन्नी (बिस्मी) की धाँस बिल्ली तेज होती है, धँबरे में भी बमकती है, उस मिन्नी की बड़ी-बड़ी धाँसों को बूमकर उसे धाकाज में उछाल दिया करते थे और मैं बम से तुम्हारे हाथों में फिर जाती थी। बिलसिलताकर हँस पड़ती थी और तुम्हारा चेहरा मेरी बिलबिलसाहट को देखकर फूस-सा बिल जाता था। उस मिन्नी के पीचन को तुमने कितना मीरस और निरय बना दिया। उसका हर लण मुझे उत्पीड़ित करता रहा। बेदना पहुँचाता रहा।

क्या कर्क भैया घायब तुम्हें मेरी पीर का घहसास नहीं है किन्तु मुझे तुम्हारी दुर्बला और निर्भङ्गता ने बिकल और उद्विग्न बना दिया है। मेरे सिये यह घसह है सीमाहीन है। कुछ दिन पूर्व मेरी एक कहेमी ने स्नेहसिक्त स्वर में कहा "धरी मिन्नी क्या तू घाबम्म पहुँचारी रहेगी?"

मैंने कहा "क्यों?"

"बुपाटी की बहन किसी खोर की बहू ही बम तकती है। यला घारमी उसे घपने बर में पाँब नहीं रखने देगा।" और मैं दपर देल रही हूँ कि उसका कपन सत्य हो रहा है। मुझे कोई भी घपनाने का संघार नहीं। तुम्हारा लया हर जयह सड़ा रहता है। और तुम्हारा लादमी बहन किसी खोर की बहू बने यह तुम सह सफने हा पर मैं नहीं। हमसिय मैं सदा-सदा के सिण जा रही हूँ। बाहर भीपरा तुघन है। बारतों की गर्जना से लग रहा है कि घाब से कृष्णी पर सड़ा भारी कहर डाने डाने हैं। सुनती घाई हूँ—जब बेबठा जग्गते है तब ऐसी प्रनरकाटी बड़ी होती है। कुछ भी हो मेरे सिण दोनों ही नाबदायक है। घण्डा भैया घमिठम बार प्रणाम। सुनो तुम मेरी नाम को मत पूना। माँ को तो तुमने पहले ही मार-सा दिया है उनसे मनों की ज्योति छीन सी है। छोड़। तुम कितने हृदयहीन हो गण हा।

घमिठम बार तुम्हें ही प्रणाम। कर्को हृदय तुम्हें बार बार प्रणाम करता

बहना तो दूर रहा बल्कि मुझे बालों के हरण में यह घण्टा की कि वही योमती को बुझा वह दिया तो सार्जन बाबू गुन सापसी पर उतर घासेया । इमतिष् के सत्री केमन से भोवती की दृग्जत करते से श्रितनी एक सम्भरिवा की । जैसे योमती मुझे के दुग-दरं में बाग घानी की । हरएक के संकट में बागकर जाती की ।

घाप् विचुर था । उनही बीबी जीवन-यात्रा की दो मरिमें तय कर एवरन दूर गयी थी । विवाह के बी वर्ष बाद उसे हमना-मा बुतार घाया । रात को घाप् ने उसे बूब पिना-कर मुलावा घीर मुबद उनही नीर घमर नीर बन गयी । बाबू को उनके लिए परचाताप था पर उनही घाप् में घाप् नहीं घाये से क्योंकि उसे घमरी जोरु बहम् नहीं थी । उनके मन प्राण में बमने मुनार की जवाब वह योमती का रूप बस गया था । वह मुग्ध हुआ घन पर बैठा रहता था । उसे महमून होता था कि योमती उस पर घपने बाल मुपा रही है । उसके बाल इतने मम्मे हैं कि वे कमर के नीचे तक बने घाये हैं । उनका बालों को देखकर उसे सन बहानियों पर बिदवाठ होने लगा कि एक राजकुमारी हर उस तिङ्की से घपने बाल लटका देती थी और उसका प्रती उसका महान के केरु बरङ्कर बला बाठा था । कभी-कभी उसे भ्रम-या होता था कि हवा में उनके बालों के हन की मुञ्जु बसहर उसे महहोग पर रही है और वह प्रतिमा-सा निरचल बैठा रहता था ।

यंगला बुबसा-यतना घीर हरामनाक था । वह बिना मेहनत के जीवन गुजारना चाहता था । इतना ही नहीं कुटी मयठ के कारण घपीम भी खाता था । घपीम की पिनक में वह निर्वीच-मा पड़ा रहता था घीर योमती की सेज के कुन बिना पुए ही मुरभा जाते थे । वह बंगले को बुझ नहीं कहती थी । बूबट में लिपटी वह बोग्गु के बीन क तरह काम करती रहती थी । मुबह वह उठकर कुर् से पानी के मटके लाती थी । बाजार से सौरा लाती थी । बरकी बीरती थी । दोबर बावती थी और बार में वह ऊन बावने बनी जाती थी । बूबट वह कभी

नहीं उठाती थी। फिरवाँ उसे लज्जोकी कहनी थी और छत्र के कारणाने का मानिक सेठ मनोहर सब उस पर भिड़-भिट्टि नपाये बैठ रहा था। किन्तु गोमती ने उसे कभी जो धक्का नहीं दिया। गोमती अपने काम से काम रसती थी। उसे मजदूरी से काम था। हाँ वह बापू में जकर खरेदान थी। बापू उसे छत्र से हटारे करता था। उसके मैं धेरकर प्यार की प्रार्थना करता था। तब वह मजदूरीत द्वितीय-श्री कड़ी रहती थी। वह उसकी किसी बात का उत्तर नहीं देती थी। बापू उसके मौन से परोधान हो जाता था।

अपनी बली श्री मृत्यु के दो माह बाद बापू की दशा एक उम्मार बस्त प्राणी-सी हो गयी। उसे अपने मया कि वह पागल हो जायेगा। उठका फिर बिना गोमती के पट जायेगा। उसे उल्लेख-बैठे गोमती का मुखड़ा महर्षे के बीच किमपिभाते बाद की तरह अपने मया। मागिर एक दिन गोमती का श्राप पकड़ ही लिया।

ऐसी ही एक सोनहर थी। अलगा मायाय और जलती पृथ्वी के कारण पशु-पक्षी भी नहीं मिन रहे थे। उस समय गोमती नाम सोनरी में अपना सोमर्ष भनकाती बाजार का रही थी। बापू के उनको पकड़ अपने घर में लीज लिया। वह कुछ बोले इनसे पहले ही उसने उसके मुँह पर हाथ रख दिया। जैसे गोमती उसकी मुग्धापरी से धार्जित थी ही।

गोमती ने पहली बार अपना मौन तोड़ा। वह आदुन-श्री एक बोले में कड़ी हो गयी। उनके मोरे मलाट कर पनीने की बूँदें बमक उठी। उठकी खीन-श्री महुँ प्यारी धालों में धारिनीम दुम भनक जाया। वह अश्विन-रहर में बोनी "बरापी रूरी के नाप जबरजभा (बनालार) करमा बर्म नहीं है।"

बापू ने अपने हाथों की कुटी ठरुह पटवारर कहा "मैं तुम्हें चाहता हूँ मैं तुम्हारे बिना मिन्या नहीं रह सकता। रात-दिन तुम्हाय मुखड़ा गोमती!" और वह जाये बहा। उसकी बाहों ने गोमती के रोबनी

घरीर को लपेटना शुरू कर दिया। गोमती ने बनी दीनता से कहा
 नमस्कार से मुझे ताकतवर हमलिया नहीं बनाया कि तुम दूमरों की इज्जत
 को घूम में मिलाओ उसे घासियों की बगइचाँ उठाओ। यह धम्याब
 है पाबू। दिन को प्यार से जीता तहरार से नहीं। अगर तुमने मेरे संन
 बबरज्या की तो मैं अपने घरीर को घास लगाकर मर-मिट जाऊँगी।”
 गोमती की आँखों में आँसू उभर आये। वह पार से निमक बड़ी।
 सिसवर उमने बाबू की घोर देगा। पाबू को गया मगार की सारी
 क्या गोमती की आँखों में है। धीरे-धीरे यह सिमिल होने लगा।
 उसकी आत्मा उसे पिचकारने लगी। उसकी बागना की बिनपारियाँ
 कुमने लगीं। पत्तु हवा की तरह गोमती के सामने से हट गया।

गोमती को बचने से सिबायत ही कि वह पाबू को टाँटे कि वह
 उसकी बीबी को भावे जान न छडा करे। बगना गया भी पाबू के बास।
 वर बीबी की विकल्पत न करक वह उमने से रूप सत्रार मीम छाया।
 उन दो इरबों की उमने गुरु सराब पी। उस सराब क मने में उमने
 बाबू की बड़ी प्रशंसा की घोर बोला “वह एक उरीक घारमी है। घाब
 उसने मुझे पिलाया।” संनने के बेहरे पर निमज्जता माच छटी।

गोमती का मन अपने पति के प्रति क्षणा से भर आया। उसे सया
 कि यह कँसा मई है। इसमें बरा भी बीरत नहीं। नायर धीर
 पोहपहीन।

धीरे धीरे संनने में परिवर्तन आने लगा। घाबरम उसके पात
 पर्याप्त पैसा दितता था। जब कभी भी गोमती पूछती थी वह
 कहता था “घाबकन मैं सेठ मनोहर के यहाँ काम करता हूँ।” गोमती
 ने मजबूती पर आगा बन्द कर दिया। जब उसका पति कमाता है तो
 वह धीरों के यहाँ मजबूती करने क्यों आस ?

इपर उसने बाबू के जीवन से बड़ा परिवर्तन देला। घाबकन वह
 बहन घनेने आंग देकर घाबकनी बरने बकर आता था। जिन्ही से आगना

बटना क बाद गोमती के हृदय में एक कोमल भावना बस्य गयी थी—
 बापू के सख्तबहार और उदैता से और सखीब व सुखर हो गयी ।
 कभी-कभी गोमती के मन में यह प्रश्न आन जाता था “माजकस बापू
 छत्र पर क्यों नहीं आता उसकी घोर क्यों नहीं देखता ?” वह तब बंटों
 छत्र पर बैठी रहती थी । किन्तु बापू छत्र पर नहीं आता था । आता
 ही था तो उसकी घोर नहीं देखता था । इससे गोमती व मन में
 परमानन्दनित पीड़ा की सहर उठ जाती थी । वह आदेश में उमस-सी
 हो जाती थी । उसकी इच्छा होती थी कि वह बापू का हाथ पकड़कर
 बटि कि वह उसकी घोर क्यों नहीं देखता ?

कल तो जमाने हृद कर दी । वह स्नान करके छत्र पर चढ़ी । बापू
 छत्र पर झट्ट मगा रहा था । गोमती सदा की तरह नहीं मजापी ।
 वह कुछ क्षण तक झट्ट लगाने में लग्य बापू को देखती रही । देखते
 देखते उसका मन बदला स भर आया । वह भावनाभिभूत हो उठी ।
 उसने ओर से ललाच । बापू ने उसकी घोर एक उदती नजर फँकी
 और वह अपने काम में लग्य हा गया ।

गोमती बस गयी । घुम्स में भर उठी । साप ही एक विचित्र
 कारितक भावना से उसका अन्तर भर आया । वह माड़ी मुचाकर
 नीचे आ गयी ।

शोपहर ।

आज बापू बन्धी आ गया था । वह ताँपा गोमकर पोड़े की माणिक
 करने लगा ।

मती में समाटा था । गुण्यता थी । वह माणिक करके पोड़े की कुर्से
 के पास से गया पानी रिमाने । अभी उसने देखा—गोमती गिर पर
 मटका रखे था रही है । उसने घबरी हृष्टि नूने आकाश की घोर की ।
 गोमती घायी । उसने हौब में मटका भरा । बापू के मन में अन्तर्भू
 मच गया । उसकी इच्छा हुई वह अदस्त्य मुनि की तरह एक हृष्टिबूट
 में गोमती के सौन्दर्य-सागर को पीने पर अन्तर्भू अन्तर्भू मन के तूज्य

को रोक सिखा । वह सब कुछ हारे हुए पुपारी की तरह बना ।

वो बचप भी नहीं गया था कि योमती ने पुपारण "विजाय बहुत बढ़ गया है । अंत उठाकर देगने ही नहीं !"

बापू के पाँव रुक गये ।

'मटकी तो छँबी कर दो ।'

बापू उसके पास आया । मटकी को उठाया ताएबर में जखरी इट्टि उसके नीचे से गुण पर रहीं । योमती के होंठों पर चैतानी अरी मुस्मान बिरफ जगी ।

"तुम मुझ से नाउज हो ?"

नहीं ।"

"किर घाजकम इतने बरत क्यों गये हो ?"

मुझे पाने के लिए ।" बहकर बापू जखरी से नीचे उतर गया ।

योमती ठनी-सी राड़ी रहीं । फिर वह जमी बहुत बीरे पालो बनके बन से बापू ४ प्यार को स्वीकार कर लिया हो ।

पंचेस घजबर की तरह कल्पै-पौटे मजानों को घपने गीत गया था । बापू बारह बजे बाना सिनेमा शरम करके आया था । वह पोड़े के घाँवर पर हाव फेर रहा था । हाव फेरकर घर के भीतर गया । डिबरी जतायी ।

तभी उसे बचनों की आइड तुनायी पड़ी ।

'कीन ?'

'सि ।

'योमती ।

'हाँ ।

'इतनी उठ गये ?'

'मन नहीं माना । बापू तुमने मुझे ब्रेष से बीत लिया । मैं हार गयी । मैं हार गयी । वह खपाठी होकर उसके बरलों में बैठ गयी । उसके बैहरे की बावनाजमित्त जसेजना घौर जखिनता डिबरी केइर के

प्रकाश में स्पष्ट अभिन्न हो रही थी ।

“गोमती ! तुम घायीसुखा हो ।”

“प्यार के बीच दावी बीबार नहीं बन सकती ।”

“तो मुझे बहुत चाहती हो ?”

“न चाहती तो इस तरह तुम्हारे पाँव पकती ?

‘किन्तु !’

“मुझे अधिक मत सताओ । मैं सचमुच हार गयी ।”

“फिर तुम मेरे पास सदा के लिए जमीं आओ । छोड़ दो अपने पति को ।” बाबू ने दीवार की घोर मूँह करके कहा ।

गोमती की बातना एकदम माया हो गयी । वह भट से लड़ी हीकर बोली ‘क्यों ?’

“मैं चाहता हूँ तुम सदा मेरे साथ रहो ।

“नहीं-नहीं-नहीं ।” वह एकदम चील-सी पड़ी ।

“पड़ोसी भी रहते हैं ।” उसने गोमती को घायबान किया ।

“ओह ! तुम मुझ के पुष्पे ही हो । तुम्हारा दिन परन्तु का टुकड़ा है ।” और मोमनी जमीं आयी ।

बाबू की बहो पति थी । बही मोन और बहो प्रस्तुतता । अपने काम के काम । पर मोमनी ने अपने हृदय की आबाद के विच्छन्न बगावत कर दी । उसने भी बही रबिया अक्षिपार कर लिया । वह भी बाबू से नहीं बोलैनी । वह गुम्फा है । उसमें कोई भी परिवर्तन नहीं आया । वह पते नरे बाजार में बरनाम करना चाहता है । बही वह ऐसा नहीं करेगी ।

किन्तु एक पटना और बटी ।

बाबू फिठी बरात में बाहर जाता गया था । रंगता उत रात अष्टीम की पिनक में होते हुए भी जाय रहा था । लपनम बारह बजे फिठी के दरवाजा टट्टयाया । रंगता उठा । उसने फिन्नाइ खोले ।

“या नये मनोहर बाबू ?”

“हाँ।”

मैं लोग मेहर जंगल जाने का बहाना बना रहा हूँ। घाब ।
करी ।”

“घाब बिना न करे बह नृप भी नहीं बड़ेमी। मैंने सारी बात
कर रानी है।”

“मैं तुम्हारा गारा करने मान कर दूँगा।”

“घोर पपाम क्या की बात ?

“ब” भी दूँगा।”

संगता जाता गया।

बाँदनी के धूँबसे प्रकाश में सोपी हुई योमनी का चेहरा साफ
दिखाता था। मनोहर उगक पाम बँठ गया। योमनी ने धीरे से गोल दी।
दिया तो झटके से गाब गयी हो गयी।

“तुम क्यों हो ?”

धरे मुझे नहीं पटवाना। क्या तुम्हें संगते में गरी बताया कि घाब
में बहो जाने वाला हूँ ?”

बह संवर की घोर म्हाटी।

“बह बाहर जाता गया है।” सेठ मनोहर ने हँसकर कहा “बल से
मैं तुम्हें बाहर के बाहर बानी कोठी में रणुंगा। यहाँ मुझे बापू का बड़ा
कर मगना है।” कहकर धरने योमनी का हाथ पकड़ लिया।

योमनी के तन-बदन में घाम लज गयी। उनसे कड़ककर कहा “बचा
बाहरी हूँ तो इसी मजब बापस जान्ये।”

“घोर मेरे कपडे ?”

“मैं कहती हूँ, जने जाइये। बर्न मैं शोर कर दूँगी। घादकियों को
इसका करके घाबको बलीस कर दूँगी।”

“शुभ ! उसम बुझाता है घोर बीबी बमकी बेठी है। योमनी में
सेठ हूँ। बापू के साथ रहने से तुम दुल्लों के बिबाय बुझ नहीं पाओगी।
मेरे संन जलो घाम्ब ही घाम्ब मिसेजा घोर तुम्हाण पठि भी गरी

चाहता है।

“घान जने जाइये। उसने मड़ककर कहा।

सेठ बरनामी के भय से जसा गया। उनके आँठे ही वह पूट-पूटकर रोने लगी। गंगना घाकर ज़ुपचाप सो गया। उस रात सोमती को नींद नहीं आयी। रोते-रोते उठकी आँखें सूज पयीं। सुबह गगने ने बेहयापी से कहा “बान ?”

सोमती ने जमकी घोर जलती हट्टि से देखा घोर जाम बमाने सपी।

बापू लोट घाया। उसने कई बार सोमती से मिसने की बिटा की जर वह नहीं मिल सका। घाधिर बात क्या है ? उसका हृदय पडकने लगा। वह सोमती को बाँगी की तरतरी देना चाहता था जो उसे बगत में मिसी थी। वह तरतरी बहुत मुन्दर थी।

घाधिर रात हो गयी। रात भी टल गयी। डूसरी सुबह घायी। वह घगन मन को नहीं रोह सका। जैसे ही गंगना जंगम गया बंस ही वह सोमती के पान जा पहुँचा। वह गंगना-गगना पुकारता हुमा पर में जुन घाया। गगन ही सोमती बँटी थी—गुरमाने पून-सी। वह जस देखकर हजप्रम हो गया।

“क्या तुम बीमार हो ?” उसने घर्बमरी हट्टि से देखकर पूछा।

वह हुर रही। उसने घवनी हट्टि बीबाग पर जमा दी घोर पाँव के घँपू से जमीन कुरेदने लगी।

“जुप क्यों हो ? बोपो न तुम्हें मेरी कसम।

सोमती पूट-पूटकर रो पड़ी। उनकी मिनकियाँ हृमपदिदारक थीं। बापू ने उसे घगने गीत्रे से मबाकर हुमाघ।

“क्या बात है सोमती ?”

सोमती ने रोते रोते सारी बाँठें मुभायीं। बापू का मन जोप ने पर गया। तरतरी को बभीन जर पेंजठा हुमा वह बोला “मैं जगनी बान निदान हुमा। उसके दुबड़े-दुबड़े कर हुँवा।

“मैं उसकी धारों निराल हूँ। सुविद्या व वर से तेरा बदनामूँ।” कहकर बापू बाहर चला गया।

बोमली बिमुड़-सी राड़ी रही-सो बस। जब बापू उनकी धारों से धोखल हो गया तब उः होस घाया। वह बाहर की घोर बावी किन्तु बापू चला गया था। वह क्या करे ? वह किस तरह बापू को रोके ? वह भंवर में पड़ी नाच की तरह झूमती रही। फिर वह बैठ के उन के कारखाने की घोर बावी।

वह जैसे ही वहाँ पहुँचो उसने देखा—वहाँ भीड़ जमा थी। बापू को कई घाबरी पकड़े हुए थे। बैठ के तिर से गून वह रखा था। बापू के नाम के पास भी गून की धारा वह रही थी घोर बापू वह रखा था, “घामे से उस राखी से मुझरा तो बैठ जिया नहीं छोड़या। भीड़ की तरह तेरा गून भी जाईया। बोमली को बेगहारा मत समझना।” घोर वह घोर की तरह बहावता हुआ लौट घाया। बोमली भी वहाँ से गुरस्त भनुसब हो गयी थी।

जब उसने घर में कदम रखा तब बोमली को उसने बड़ी बेंठे बाबा। वह जैसे प्यार भरी बजर से देखता रखा देखता रखा। गून की बुरे घब भी पूँ बूँकर उनकी बनिमान पर बड़ रही थीं। बोमली का हृदय प्यार से भर घाया। धारों धारों से भर घायी। वह बापू से लिपटकर बोली “मैं तब के लिए तुम्हारे पास था बयी हूँ मैंने सिध्दमे तारे नाठे रिखे छोड़ दिए हैं। अब मैं तुम्हारी हूँ केवल तुम्हारी। मैं तुम्हारी ही पत्नी बनने के काबिल हूँ। इस रूप की रत्ना तुम्हीं कर सकते हो।”

घोर के उस दिन से एक हो गये। बंधना दूसरे मुसलमे में चला गया। कुर्मा बन्ध हो गया। वर किसी ने बोमली से यह नहीं पूछा कि पाकिर उसने अपने बलि को क्यों छोड़ा ? हाँ वह सब सब पनाल से कहते हैं कि वह तिहाकठ गिरी हुई दिनाल रही है जिनने अपने घामे-घामे गरीब बलि को छोड़ दिया है।

मिस प्रभु और उनका फोड़ा

वह फिर धकेली घूमने घायी थी ।

साम्र के डूबते मूरब के समय जब सिठिक का रंग रसाय हो जाता था और नीले रंगण रपी आकाश में दो-चार पबेरु बम्बों की तरह उड़ते थे तब मिस प्रभु अपनी सहेलियों के साथ घूमने आया करती थी । वह कमी भी उदास नहीं लगती थी और उसके कहकहों से घाटी पर्वतीय जाती गूँज जाती थी । वह बहुत बालूनी थी और उसके चहरे पर सदा मुस्मियों के बादल फैल करतें थे । हास-परिहास उसकी सामारण बातचीत में लदा रहता था ।

एक मीरा बैहरा कुछ अधिक बोझ इसलिए कम आकर्षक । स्वास्थ्य भ्रष्ट । वस्त्र अत्यन्त आधुनिक ढंग के । उम्र यही तीस-बैंतीस । एकांत से पबराने वाली । यही कारण था कि उसने अपने मकान में अपनी दो सहेलियों को और रख छोड़ा था । वे दोनों सहेलियाँ कुंवारी थीं और छुट्टियों में अपने घर जाती थीं । तब मिस प्रभु उस सप्ताह से एक-दो दिन तो गूँज पबरायी रहती थीं मग ऊदा-ऊदा सा रहता था और वह बोलिष करती थी कि उसकी क्यूटी रात की रहे । रात को भी वह अपने घर में घबेनी नहीं सोती थी । बलग के पास अपनी बौरायी को मुसाती थी और उनमें नीर की घंठिक छानकी एक हाम-परिहास-मुक्त बार्तालाप

करती थी ।

रात को कभी-कभी उगरी नींद उभट जाती थी । घबेरे में बग धातुत हो जाता था । घुटन ठमक राँम को रोतने सपती थी घोर चंभरे की बरतें धीर धीरे उचके मन पर बबने सपती थी । तब वह पबरा जाती थी घोर बमरे में तुरम्न उत्रापा कर लेनी थी । धपनी शीङ्कपनी रामा को बबानी—“रामी । घो रामी ।”

रामी हङ्कबङ्का कर उठ जाती । धपनी धाँगों को बमनी हुई बूझनी “बपा बाठ है मालतिन ?”

“बाठ यह है कि तू घाने-भोसे हँस क्यों रही थी ?

“हँस रही थी ?” बह निरमब न पूछनी ।

“हो हँस रही थी । इस तरह हँस रही थी कि मैं पबरा गयी । मुझे सपा कि तुम्हें कोई बूननी सन पपी हो ? बता सपकी बाव बपा है ?”

“बुध नहीं ।”

“मुझ से दिनाती है ?”

“नहीं तो !”

“बपा तूने धपने पति को सपने में देपा था ?

“नहीं तो !”

“बकर देपा ” बह धपने धमों पर ओर देकर बहती । “तेरी धाँसों में धाँसती लबबा बठा रही है ।” बस इसी तरह निरहँस्य घोर बिना सिर-नीर की बातें किया करती थी ।

रामी बुध बतर न देती । धीरे-धीरे प्रभु की बड़ी-बड़ी धाँसों में नीर धुलने लबती । बाठ का सिमसिमा बहीं सारम हो जाता । प्रभु नीर में बुरटि मरने सपती धीर रामी उठे शोतने सपती । उचकी नीर उचट जाती । धुपों से बूर, बहूठ बूर भाग जाती । बस्की बापस नहीं पाती । बह बेबायी करबटें बरबठे-बरसठे परेठान हो जाती ।

इस तरह मिस प्रभु का जीवन गुन-बुनाती हुई सहरों की तरह बन

था था। वह बदनाम-कुपनाम दोनों की। उसकी सभी सहेलियाँ बहूची थीं "यह न हो तो बीबन में उदासी ही उदासी का जाय।" इतना सब कुछ होते हुए भी मिस प्रभु की पुरुषों की सोसाइटी नहीं के बराबर थी। उसे वह जहाँ तक हो सकता किनारा ही करती थी हालाँकि वह सुब डॉक्टर की उसका काम प्रत्येक बापटों से पड़ता था पर वह जतने उतना ही सम्पन्न रहती थी जितना आवश्यक होता था।

प्रायः वह रात की द्यूटी लेती थी—घपनी ही नहीं घपनी साची बापटनियों की भी। जब कभी वे इससे घनुरोप करती यह सह्य स्वीकार कर लेती। विवाहिता से कहती "भारत की भूमि अत्यन्त उर्वर है। सभी पावन-मेघ नदियाँ यहीं पर बहती हैं। पवित्र नेहरू के घनुरोप का ध्यान रखना। घोर कुमारियों से कहती "कुम पर मैं क्या भी करना नहीं चाहती घोर कुम लोगों की उदासी भी नहीं सह सकती। पैरी एक बात को मानना—हर करम देखना कर पठाना। राती समय में घोर का विमान सही डंग से बहुत कम सोचता है। वह एकान्त से बबरा जाती है घोर घबराहट में अत्यन्त समत निर्लज्य कर लेती है।"

वे बातें वह प्रायः ही रोहपाया करती थी। रोहपाये समय वह बम्बीर नहीं लगती थी। उसके होठों पर कभी निरदल ध्वंगमरी मुस्कान फिरकती थी। उसकी सहेलियाँ भी उसका कुछ बुरा नहीं मानती थी। वे सब उनसे सब समझ पयी थीं।

मिस प्रभु अपने मरीजों में बहुत लोकप्रिय थी। वह उनके लिए समता की सागात प्रतिमा थी। रात के सप्राटे में जब हड्डियों को टिड्डुपाने वाली नहीं पड़ती बत्तनों में रखा जानी बरक की तरह कम जाता घपनियों के रक्त का प्रवाह रमा-रमा सा समता बाहर पंवल की नीरवता छापी पड़ती तब मिस प्रभु अपने द्यूटी कम से निकलती। गुनी गिदकियों को बन्द करती रोबिगियों को सिहाय घोडाती,

उनकी छाती पर हाथों को हटानी ताक़ि से भवान्‌घ घोर बुने बपने न देखें। वह लड़पती हुई रोबिटी की तात्परता देती। उसे डाड़न घोर बर्य बँबाती तब उसकी धारुति पर बही धर्मीबिक बामत्स्य दीप्त ही जाता। तब उसे कोई नहीं वह मरना या कि यह बही बाबुनी प्रभु है जो बक-बक घोर धन्यंत प्रभाव किया करती है। उम नमय उमरै केहरे पर प्रीड़ महिना जँती बम्बीरता होती थी।

मुबह बह धरने पर बनी घाती। यमी से एक ही उपहास की धारें करती बार में बँतिक कार्य से निवृत्त होकर मो जाती है। प्यारह बारह बने घटती घोर फिर बही बल्लासमय बतिमान जीवन में ब्यस्त हो जाती है।

बिन्नु उक्त दिन मिस प्रभु धार्यन्त व्यग्र दिसायी दी। बिठा की रैवार्यँ उसके मुग पर शीड़ रही थी घोर वह धानुन-धाकुन भी थी। उतने पुष्परा "यमी!"

"क्या है?"

"ये दोनों मास्टरमियाँ कहाँ गयीं?"

"दस दिन के लिए बाहर बनी गयी हैं।"

"कहाँ?"

"कैम्प में।"

"क्यों?"

"मैं क्या जानूँ? उतने बोलेपन से कहा।

मिस प्रभु घोर भी बेचैन हो गयी। वह दूटकर पत्तंग पर बह गयी घोर बड़ी बेर तक धरने बिचारों में लम्पय रही। बार में धीरे-धीरे बसने धपनी ताड़ी को बँबा किया। उसकी गंभी पिढमियाँ बमक घटी घोर ताड़ी बाँप के धर्भ भाव तक धाकर बह गयी।

उतने धारुन्ति हटि से देखा—फोड़ा! रोम-दूटा फोड़ा! वह धबोध बातक की तरह उसे देखती रही। धनार के प्रधाम्बिक दाने की नरह उनका फोड़ा बसकी थोटी बाँप पर बमक रहा था। उतने उक्त पर

हाथ फेर। उसे मीठी-मीठी गुरगुरी हुई। उसे दरं मीठा-मीठा लगा। वह बड़ी देर तक उस पर हाथ फेरती रही। सुन्दर धनुमुक्ति ने उसे बिल्कुल कर दिया। बिटिया की तरह बहकने वाली प्रभु की धाँसे भर आयी।

रामी ने बिना पूर्व सूचना के कमरे में प्रवेश किया। वह अपनी मासक्रीन को छेले हुए है "कर भौचककी-सी रह गयी। धाकृत स्वर में बोली "क्या बात है मासक्रीन?"

मिथ प्रभु ने अपनी धनुसरी दृष्टि से उसे देखा। वह कुछ बोली नहीं। बिपाद की छाया ने उसके मुख को बहुत ही कष्ट बना दिया था जिससे रामी का मन भी उबास हो गया।

धनु भर तक निस्तब्धता छापी रही।

"क्या बात है। रामी ने फिर मौन तोड़ा।

"तोड़ा"

"कहाँ?"

मिथ प्रभु ने बीच की घोर गंभीर कर दिया। वह अपने धाँस से प्रभु पीछे मगी।

रामी बिनापिता कर हँस पड़ी। उसकी हँसी से सारा कमरा गूँज उठा। मिथ प्रभु विमूढ़ हो गयी। यह इतने जोर से क्यों हँसी यह नहीं समझ सकी। वह प्रभु के समझ सिनी कारण का उद्घाटन नहीं हुआ था वह पबोब कामक की तरह सहज स्वर में बोली "तू हँसी क्यों?"

"मैं इतना हँसी कि आप डाक्टरकी हाकर भी एक प्य-सा फोटा होने ग रोती हूँ ?

मिथ प्रभु पन्नीर हो गयी। उसकी दृष्टि में प्रभु जबका जिते उमने अपनी मुसफात में किसी कामका पाहा पर राती गहन मयी। बिम केयी से मिथ प्रभु के चेहरे पर बिपारों के परिचर्नन हुए उन्नेने रामी को पालनित कर दिया। यह निरवगत मी गड़ी बिम प्रभु के बेर का धन मोहन करती रही।

"रामी। मिथ प्रभु ने उसे मान्यता देने के लिये कहा— "मैं ५६

फोड़े से प्यारा जानी हूँ। एक बार पाने भी मेरी दूनरी जाँप में लगा ही थोड़ा हुआ था त्रिगने में पहरा गई थी। पूरे एक माह के बाद भर था। देगो धा रहा उनका बाग।" बापू उमने अपनी दूनरी जाँप भी खरी कर दी। उममें एक पहरा निरोना दाग था।

"बहा अजीब दाग है। रामी ने पुनतियों को नबाकर कहा।

"रामी तो मैं प्यारा गयी थी।

"फिर पाग जस्ती मे दमात्र क्यों नहीं बरती?"

"बक ती।"

विशु मिस प्रभु ने चार रोज एक बुद्ध भी दबा नहीं की। उमने अस्पताल से फुटी में ली पर हम फोड़े के इलाज को पुष्ट ही रखा और रामी को भी मना कर दिया कि वह हम फोड़े का त्रिग किमी से भी न करे। इन चार दिनों में उमने उस फोड़े का जो दुर्बह कुग बहुत बिया जसे था तो रामी जाननी थी वा स्वयं बह।

बाँबी रात फोड़ा अपने पूरे ओर पर था। पीक भर पसी थी और सारी जाँप त्रिग की तरह लाल हो गयी थी। मिस प्रभु उसे महमाती रहती थी और जब पीका अधिक होनी तो वह नये की मोसियां से घेती थी। रामी की बुद्ध समझ में नहीं था रहा था। 'दर्र को वासना भी कोई सीक होता है। फिर मार्मिन तो दर्र के नाम से बरती भी हूँ।" किन्तु उममें इनका भी माहम नहीं था कि वह जप बबाव देकर पूछे कि धाधिर इन तरह लकपने में क्या मजा मिलता है?

धाधी राठ हो गयी।

मिस प्रभु के पास जर्मन की हरी रोपनी सीमित बुद्ध में पंती हुई थी। उलका इरका प्रकाश मिस प्रभु के मुख पर पड़ रहा था और वह अपनी कोमल हथेली से फोड़े को सहना रही थी। रामी इष्ट होकर ली पसी थी। धात्र उमने अपनी मार्मिनसे परमन्त धाधर किया था कि वह क्यों नहीं बताती कि धाधिर इन जाँप के फोड़े को पालने में सखरा बौग

बीरे नीलवारती रही थी। उसके धर्मों पर हर बम-मा रहा था वह
हृष्टि में धर्मधरी कई चिनगारियाँ उठ-उठकर बुझी जा रही थी।

गहरी गुप्ती में उल्लास कर रामी ने अन्त में कहा था 'मातृ-
घाप नहीं बतानी है तो मैं कहीं-कहीं घापका माता नहीं हूँ।' और
छो गयी थी। मोड़ ही उमे गहरी नींद घा गयी जैसे वह पोड़े बेचन
सोयी हो।

मिग प्रभु के सम्मुख बस्यता का बिज हमके हृदय की तरह म
घटा—

'कल यह फोड़ा पूरा कर ही रहेगा। नून और पोष की पार
मैरी मारी बाप को महामुशन कर देंगे। हमके पोष्य और वैज
बाम-मी सुशोभता को बिहृत कर देंगी। उसे सुरक्षा बना रही।।
दिलों क मिए सजिन' ।"

"मेकिन-बैकिन मैं नहीं जानता मैं कल तुम्हारा घायेरान कल
ही।" प्रभु के प्रेमी बदन में कहा था।

'घागिर क्यों ?'

क्यों-क्या ? नहीं दिवना हो गया तो ?'

"मुझे दिवना नहीं हो सकता।

'इन्हिए नहीं हो सकता कि तुम डाक्टर हो ! क्या डाक्टर
बीमारियाँ नहीं होती ?'

"तुम समझत क्यों नहीं मदन कोडा है अपने घाप टीक
बादेगा।"

'दानिय रोय ठरबार में ही टीक होता है। मैं कल इसका घा
पन कल दा ही बादे तुम मान चिन्ताना। पजाना बचोगे तो के
कर रूंगा। घागिर मैं तुम में भीमियर हूँ।

"घण्टा बादा घण्टा" मिग प्रभु ने उसे बैचना की तरह।
हाथ जोड़े। मदन ने उन बँदे हुए हाथों को घनमी बीमन ह्मेनिर्वाँ
बीच ल निदा। प्यार में उठू पकड़े रहा। मिग प्रभु अपने कोड़े

दीया कई क्षण भर क लिए भून गया ।

“क्या लोच रहे हो ?” प्रभु ने पूछा ।

लोच रहा हूँ इन हाथों को जीवन पर्यन्त न छोड़ ?”

मजा गयी थी प्रभु । मैं न कुछ गये घोर पानों पर साहिमा झनक उठी । वह कुछ बोली नहीं देरानी रही लूणा नही हृष्टि मे । क्या नहीं कर मन्त्र मे उगई होठों को रमोता कर दिया था । वह शिमुचता मे जान भी न गयी ।

मदन घोर प्रभु के बीच धारुण्य घटागतन मे घाटे ही उतरप्र हो गया था । बीरे पीरे लगके बड़ा घोर प्यार मे घंगड़ाई थी । मदन उत्तर प्रदेग का निबामी था घोर प्रभु राजस्थान की । प्रभु के माँ-बाप नहीं थे । नाना मे उमे डाक्टर बना दिया था । घासी करने के बारे मे वह स्पष्टगन था । उन पर शिमी तरह का बाठीय प्रतिबन्ध नहीं था । मदन गुस्तर था—डाक्टर था । दोनों की जोड़ी गूढ फरेगी । प्रभु दोनों मे एक दूसरे के ममथ दिल तोमकर नहीं रगा । ऐसी परिस्थिति भी नहीं आई ।

घोर, एक दिन यह घबघर आ ही गया ।

मिस प्रभु की जीव मे फोड़ा हुआ । मामुम पड़ते ही मदन थापा घोर उगधार करने लगा । मिस प्रभु ने छाक वह दिया कि वह न तो घापरेषन करायेंगी घोर न ही दबा लगी ।

“क्यों ?” मदन ने पूछा ।

‘इसलिए कि मैं इसे ठीक नहीं समझती ।

मदन उतके हठ के समय कुछ बोला नहीं । उसे जब-जब समक निमता तब-तब भाषा समके पास घाता था घोर उतके फोड़े को देखा था । प्रभु को वह घबघा लयता था । मदन की धनुमियों का स्पर्श उगके मन मे भरमन का संपीत भर देता था । बीड़ा मीठी-मीठी घोर भी प्यारी हो जानी थी । पीरे बीरे फोड़ा बिगड़ गया । अब मिस प्रभु की एक भी न लगी । मदन ने उतका जबरदाती घापरेषन कर दिया । प्रभु को जरा

भी कष्ट न हुआ। वह इन्तेंकाम भी लेने लगी।

पट्टी बाँधते हुए मदन ने पूछा "इतने दिन तक तुमने घापरेपान क्यों न करने दिया? खर्ब ही कष्ट होगा। अब यह बाब मरेमा भी बहुत देर है।"

"मुझे लड़पने में घानन्द थाका है" उनमें माजुफता से कहा।
बन्धा।"

मिस प्रभु ने गर्दन हिला दी जैसे कह रही हो कि 'हाँ'। बस्तुतः मिस प्रभु ने इस छोड़ का बहुत ही सुविधा घना किया क्योंकि इससे उसके घोर मदन के बीच की भिन्न-भेद मिट गयी। वे वास्तवतः समीप आ गये। उनके घरमानों के पूल बिल उठे। उत्साम के लोठ पूट निकले।

प्रभु ने एक दिन उसे अपनी बाँहों का सहारा देते हुए कहा था "कब शादी करोगे?"

"जल्दी ही। मदन ने कहा।

"दिनांश को मिया?"

"निश्चय दिया।"

"क्या पत्तर थाया?"

"उम्होंने मुझे बुलाया है।"

"कब जा रहे हो?"

"घरमें मत्ताह।"

पर घनम मत्ताह ही मदन की दूमरे राहुर में बदली हो गयी। मिस प्रभु को यह दखल नहीं लगा। उनमें मदन से अनुरोध किया कि वह अपनी बदली का घाँवर कमिन्म कप दे। चाहे उसके मिस बुद्ध राने खर्ब हो जायें ता भी कोई परबाह नहीं। मदन ने उस घादबामन दिया कि वह प्रयास करेवा।

पर मदन को बदली होकर ही रही।

मिस प्रभु ने उसे घाँगू मरी बिबाई दी थीर कहा कि तुम्हें उत्तर

ले-जल्द पिसाऊ करने का प्रयाग करना आशिया । मैं जब ८ बजते में
बहता हूँ । मेरा मन अधिक घमगाय दब नहीं गत करता ।”

मदन ने लट्टी पसाइन की । वहाँ से वह टुनी लेकर घर गया ।
एक बात लट्ट नहीं लौटा । क्या बने मिस प्रभु ? उगरे पाग उगरे पर
का पता भी नहीं था । हर पत्र के सिगता था कि मैं हो जाऊँ दिन में धा
रहा है । हमने प्रभु ने पता मोड़ने की अपितर बहुत भी नहीं की थी ।

प्रभु की दया विरहिणी जैसी थी । आगिर मन्त्र लौट आया ।
उतने मिया । दो-तीन दिन घामोद प्रमोद में तितार बट वापस लौटनी
पर जाता था ।

“दीदी ही हम बहुत सम्मान में बचने ।” मदन ने जाग समय ससते
बहा था ।

दो पत्रों के बाद मदन का कार्प पत्र नहीं आया । हमने कार्प पत्र
काले । आगिर वह पबरा एनी । वही मेरा मन्त्र बीमार तो नहीं हो
गया ? वह दुप-दुपनामों से अधीर होनी गयी । उमे हर घड़ी घटित का
आभाग होता था । घनापन घमगाय की आगवाया म बट हूँ ही
रहती ।

एक दिन वह चुपचाप खाना हो गयी अपने मदन के पास ।

दूसरे दिन मदन के आगताम में बहूँ थी । मदन नहीं था उस दिन ।
रात झूठी करके क्या था घबरी-धमी । उतने पर का पता मिया । चल
पड़ी ठाने में । उतने दिन में घलेजित सपने हीर रहे थे । वह घनरी
मादकता में विभोर हो गयी । घाँसों के घाँसे घामुर्षों के बारत या पये ।

“कहाँ पन्नु बीबी जी ?” लपिसासे ने उनका ध्यान भंग किया ।

“बड़े जोराहे की दुनरी गनी मैं ।”

ठाँपा दुसरी गनी में चुल पड़ा ।

उतने एक घाबरी से पूछा ‘आई नम्बर ५२५ वहाँ पर है ?’

घाबरी ने अपनी गोल-गोल घाँसे मिचमिचवाई जैसे वह लोच रहा
हो फिर कर्कष स्वर में बोला—‘उत बड़े कृष के घामे ।’ ठाँपा

जम दिया ।

मैं जानती है वह अभी साया हुआ होगा । उनका बलिष्ठ शरीर रैमनो बिस्तर पर इस तरह सेटा हुआ होगा जैसे कोई घोंगड़ा सजीव होकर मिट्टा में निमज्ज हो । मुझे देखकर वह चौंक उठगा और अपनी जिज्ञास बाहों में भर लेगा । मैं उसे नहीं रोकी थी । चाधिर वह मेरा होने का नाम पति ही तो है !” वह सोबती जा रही थी ।

तांगा रुक गया ।

“टहलना मियाँ” कहकर वह उस द्वार की ओर बढ़ी । उसने कूड़ी सटलटाई । द्वार खुला । एक सुन्दर-सुबह-सलोमी सुन्दरी उसका सामना करती थी । उस पुत्रनी ने प्रणाम करके पूछा—“घाय किसकी बाहनी है ?

“डाक्टर मदन को ।”

माइये के घाय की खे है” कह कर पुत्रनी ने बड़े धादर घाय से उसे जतने का संकेत किया ।

प्रभु के मस्तिष्क में उस पुत्रनी ने अनेक प्रश्न उत्पन्न कर दिये । पर हामान ऐसे ब कि वह कुछ पूछ न सकी ।

“डाक्टर साहब !” सुत्रनी ने पुकारा ।

मदन ने सहन उठायी । विस्मित-सा हो गया । हठान् मंह से निकसा “क्या ?”

“हाँ मैं” उसने बठोर स्वर में कहा जैसे वह धीरुवा मुखान क रंय को पहचान गई हो ।

‘प्रमिता यह मेरे साथ काम करती थीं नाम है मिस प्रभु’ ‘और ये हैं मेरी पत्नी प्रमिता ।”

‘नमस्ते’ प्रमिता ने कहा ।

‘जैसे घाना हुआ तुम्हारा ?’

‘काम है ।’

‘रनवा सामान तपि मे है घाग कर ताते क्यों नहीं ?’ प्रमिता

ने कहा।

“कहीं बहुत ही मैं अपना लहेली के वहाँ टहलूँगी। वह वही पास में रहती है। मुझे जाने की इजाजत दीजिये।”

“बत बाब ?”

“बसू।” वह हवा की तरह घर से बाहर जाती जाती। वह उसी समय बापठ जाती जाती। उसका हृदय भीतर कर बटा। उसे लगा कि वह अंगन में जाकर जोर-जोर से बीग अपना तिर छोड़े बातों को सीखे। कहीं वह पापन तो नहीं हो पाएगी ?

बिन प्रभु कई दिन तक सूँधी बनी रही। बार में लहर हो गई। उसने प्रता कर गिमा कि वह अभी भी विवाह नहीं करेगी। वह से वह बीरे-धीरे बागुनी बन गयी। एक एकान्त घोर नीरवता को अपने पास बगलने बही दिवा जो उसे दुन्दुनों का स्मरण करा देती थी।

गिनु यह दूमरी जीव का छोटा ! लक्ष्य समाप्त है। गया।

रात बहुत बन गई थी। अतीत अतबिच को तरह कुछ देर के लिए छाकार होकर बाह्य घेपरे में लोच हो गया था। हरी बत्ती का प्रकाश चाकर की सतह असा धर भी फैला हुआ था। मिन प्रभु अपनी पीप के छोड़े को गहना रही थी। दर्द घाय फिर सीझ हो उठा था। घाम वह फिर इन छोड़े को क्यों पनवने दे रही है ? वह इन मर्म से अज्ञात है। लोखने का प्रयास करती है पर प्रप-मठीबिबा की तरह उसे पुण्य ही मिनता है। वह क्यों यह पीड़ा भोग रही है ? मदन की स्मृति फिर उसे कुरेदने लगी। वह भावना में बह गई। उसे लगा कि वह छोड़े को हमलिए पीबित रत रही है कि उसके अचेतन मन में एक दुराया है कि अभी मदन पायेगा और बहेगा “मैं इसका घापरेघन करूँगा।”

प्रभु बबरा बयी। प्रीति के के मयुर धाग उसकी पीपों के समल नाचने लगे। उसने हारै हुए सैनानी की तरह अपने मन-कषाट अन्धकर लिए। उसने कमरे में अन्धेरा कर दिया।

पीड़ा बड़ रही थी। स्मृतिपी पीधा नहीं छोड़ रही थी।

घबरे में गया कि मदन उसके पास लड़ा है। वह रहा है— “क्यों पीड़ा भोग रही हो? मैं घाब भावस्थान करूँगा। इसका मवाद निकालूँगा।”

“हूँ!” उसका धमत्तमन भड़क उठा।

“मैं ठीक कहता हूँ।”

“तुम मुझे स्वर्ण कर लोके तो मैं अपनी जान दे दूँगी। सुनी नीब। यादिर तुमने वह द्रोप क्यों रखा? मेर जीवन में कभी न-नरम होने वाली बीरानियाँ और तनहाइयाँ क्यों भर दी? मैं कहती हूँ मरने से मुझे। मेरे फोड़े को हाथ मत लगाया मदन मदन! मैं तुम्हारा स्पष्ट भी सब सहन नहीं कर सकती। जाओ! और उसने अपनी बाँध को पेट में समेटने की कैला की। वह तीव्रतम होकर उड़पाये गया। फिर मकायक कम होने लगा। मावनाये दूँकर विषर गई। बस्तु-जगत प्रकट हो गया। उसने सपककर बह-स्त्रीक बनाया। कमर म फिर हरा प्रकाश फँस गया। उसने देखा—फोड़ा फूट गया है मवाद वह रहा है उसकः धीरे से। वह लण भर देखती रही। फिर बार से भीखी—“रामी! रामी जस्ती स उठ। रामी धा रामी!”

रामी हड़बड़ा कर उठी। जवाला और भी तेज किया।

“क्या है मामकिम?”

“मेरा फोड़ा फूट गया मेरा फोड़ा फूट गया।” उसक बेहरे पर ऐसी प्रपूर्व गुपी की जैसे उसे नया जीवन मिल गया हो—जैसे वह फाड़ के मवाद के साथ उसके मन की वे कृत्याये भी निवस रही हों जिन्होंने उसे मावस्थानता से अधिक धमत्तमुँघ बना दिया था।

“फूट गया?” रामी ने चौंकर पूछा—उसके बेहरे पर भी प्रपूर्व गुपी थी।

“हाँ दैन न।”

रामी पीड़ित बई टिटोल और पर्व वाली स घानो। वह पाव को हलके-हलके हाथ से साफ करते हुए पूछ रही थी “घावने हमने दिनों तक

दर्द को क्यों मग ?”

मिस प्रभु मुन्हायानी हुई बानी 'तू नहीं जानती मैं घरेलो नहीं रह सकती। इसीलिए इस दर्द को साधी बना लिया। तू तो जानती ही है तेरी ये दोनों मास्टरमियाँ दग जि के बाँ बापणी !”

“कह बात कहें घाग बुरा ता नहीं धानपो ?”

‘नहीं। उतन गुणत कर रहा।

“जीवन में मदा गाप देने बामा तो घोरत बा धरना मरं ही लोना है। घार रिबाट क्यों नहीं कर लेनी ? येरी बाउ मानिने घोर जट मँगनी पट ध्याह कर लीजिये।

मिस प्रभु की घाँग मामो बोम पही ‘मैं घर जकर बहँसी” पर बह झट में बोमो— ‘पुत्र पगनी मरा” बह बह कर भीषे गिर रद्दा है घोर तुम्हे रिबाट की बातें मूम नहीं हैं ? जही कर !

रामी धीरे धीरे छोड़े के घाल-गाम की जपह दबाने मयी। मिस प्रभु के भाव-गारु मं नबा डी बिज बन गया। मानो जीप को दबाने बामी ये घेंकुजियाँ उमके घाने पनि की हैं घोर बह गरु बार छिर घाने दर्द का भूम मयी।



मैड हाउस

०

बोयलर में जिस तरह मसूदा का स्तारारा पामी रहता है उसी तरह सबकुं पामी थी। इन्फ्री-नुमा। मरु की तरह बसें घोर हुमरे परिवहन का जा रह थ। 'इतनी मरी घोर स्पष्ट मगधी का यह दाभीपन मुझे खिबर नहीं मगा। पर यह मामीपन ही इस ममरी पी घोर यहाँ क मोपों की बास्त विकता है। ऊपर में भरा भर घोर पीपर स पामी जमीन के एक बटुत बड़े निरपक होल की तरह लामो।

यं बड़कीमठी पोसाक पहने हुए घूम रहा हूँ। नही की मन का ठहराव नहीं। रूखा मिलेमा घरो घोर भवक बुजानों के घो-कर्मों में जाता हूँ थोड़ी बेर बैठता हूँ। मन घण्ठी भीजों सुन्दर धीरलों घोर तरल-येवा क बावके में लल भर के लिए छाता है। फिर उबट-उब जाता है घोर में बटकले मगता हूँ। बरबर जामुन के पेड़ क नीचे मडा होता हूँ। छपपने वके घोर नावों से बुजान कामुन पके हैं। कता नहीं क्यों मैं उनको मिलने लगता हूँ—एक-दो-तीन-चार-पाँच-छह' मोरे पाँव दिखायी पड़ते हैं। ध्यान इन तरह उन घोर पीचता है जैसे के मोरे पाँव नहीं चूमुफ है। दृष्टि ऊपर उठती है। बिमोवा जाने का बोस्टर धाम्बोलन गहवा बाद हो जाता है। थोपेजी वप्यनियों की कर्मलियल घाट की बहायी हुई मुम्बरियों का खरल हो जाता है। यजम्या की धीलि

दर्द को बनो गा ?”

मिम प्रभु मुग्धराणी हुई बोली “तू नहीं जानती मैं घबेगी नहीं
रह सकती। इमीलिए हम दर्द को सापी बना लिया। तू तो जानती ही
है तेरी ये दोनो मास्टरमिस्त्री दग तिन के बाँ छापगी !”

तू क बाग बहूँ घाग कुछ ता नहीं मानसो ?

“नहीं। उमन गुगा कर बहा।

“जीवन में गना गाप बने बासा तो धीनन का घपना घरे ही होता
है। घाग तिया, क्यों नहीं कर गनी ? घेरी बाग घानिसे घौर बट
घेगनी वर घ्याह कर वीरिय।

मिम प्रभु की घाग मानो बाग पही मैं घर उरर बहँती वर
बह घनट में बोमी— “तू पसनी घवार बह रह कर भीषे विर रदा
है घौर तुझे विवाह की बाँसे भूम रही है ? जहरी कर।

घमो धीरे धीरे फोके क घाग-नाम की वगह बवाने गगी। मिम प्रभु
के भाव-नोरु में ममा ही चित्र बन गया। घानो जीप को दवाने बापी
के घंगुवियाँ उगके घाने पति की हैं घौर वह तूक बार तिर घाने दर्द
को भूम गयी।

— — —

मैड हाउस



होकर में जिस तरह समुद्र का किनारा बानी रहता है उसी तरह सबके खाली भी । इसकी दुबरा । सहर की तरह हमें छोड़ हमारे परिवहन का या रह प । इतनी मये घोर प्यन्त बपरी का यह छापीपन मुक्त रबिहर मही लया । पर यह भाभीपन ही इस नगरी की घोर जहाँ क मोर्षों की वास्तु-दिक्ता है । ऊपर के भरा-भरा घोर भीतर से आती बमोन के एक बहून बड़े निरर्पक हीन की तरह लागी ।

मैं बेपरवाहीना पीगाक पहने हुए घूम रहा हूँ । वहीं भी मन का छत्रार बनी । वैष्वा विनेमा बरों और अनक बुझानों के दो-बमों के बाता है । छोटी देर बंटता हूँ । मन बगली भीजों मुग्धर पीगनों घोर तरल-पों के आयके में धरा कर के लिए बोजा है । फिर उबट-बद बाता है घोर में भटकने लपटा हूँ । पनकर जामुन के पैर के मोने लबा होता हूँ । पनकर पके घोर पाँवों के बुरत जामुन पड़े है । पना नहीं बरों में उनको विनने लपना है—एक-दो-तीन-चार-पाँच-सह मोरे पाँव दिखामी पड़े है । प्यात हम तरह उस घोर गीबता है जैसे के मोरे पाँव की मुमुक है । इति ऊपर उठती है । बिनोबा भावे का कल्ल पाभोलन कटवा कर हो घाना है । घोरकी बग्यानिपी की कल्ल-पल्ल काट की बग्यापी हुई मुम्बरियों का खरता है । पना है । पनका भी भीति

दर्द को क्यों मरता ?

विमल प्रभु बुरफ़रागी हुई बोली 'तू नहीं जानती मैं क्या नहीं कर सकती। इसीलिए इस दर्द को माफी देना लिया। तू तो जानती ही है तेरी ये मोती मास्टरमिस्स! हम दिल के बाँध पायेंगी !"

एक बात कहें घायल मरता तो नहीं मानती ?"

नहीं।" उमर गुणक कर गया।

"जीवन में मरना साम देने वाला तो धीरज का धरना मरने ही होगा है। घायल जिम्मा क्यों नहीं कर गयी ? मेरी बात मानिये धीर जट मरिणी बट ब्याह कर लीदिये।

विमल प्रभु की घायल मानो बोल पड़ी 'मैं क्या जरूर कहँदी" पर वह घायल म बोली - 'तु तू पगली नबा" बह बह कर भीसे फिर पहा धीर तुझे जिम्मा की बातें मूक नहीं हैं ? यही कर !

रामी धीरे धीरे प्योड़ के घायल-नाम की जगह दबाने लगी। विमल प्रभु के माह-गोड़ में गया डी पित्र बन गया। मानो जॉय को दबाव वाली प्रभुमिस्स उमके घायल गति की हैं धीर यह एक बार फिर घायल दर्द को भुल गयी।



हाउस बना दिया है, वहाँ बघनी घन्तगणमा व नरम घोर चिन्तियों को सुने घाम प्रकट कर सकते हैं। घायो 'इन नये इंस के पागमनामे घोर बसे ठरह के गायनों के बीच बने जिन्हें पटे-दो पटे के लिए बोरे बइते हैं।

हम दोनों बल। एक सड़के उगार घाये समुद्र की भांति विभिन्न घातुणियों में भर घनी थी। नहरमें घाबस उड़ रहे थे घोर बसे नपर बण्ड की तरह नीर को चीगती हुई लग रही थी।

जब हम दोनों में हाउस के नाम पहुँच तब बाहर कुछ लोग इस तरह लड़े थे जैसे उन्हें हिमी में गूट मिला है। उनकी उरास-उरास बुन्धी-बुन्धी घातुणियाँ घुर्नी ही भय गयी थी। 'हम भी उनके पास लड़े हो गये। मैंने घाउते दोस्त के कहा 'भीतर क्यों नहीं जाते ?'

उसने मड हाउस के दरवाजे की घोर बंगा। दस्तकर उसने मन्धी घाम लीधो घोर बोला 'योही हैर घरी पर टहरो बाहर में बसने।'

मैंने बोला कि उसने दरवाजे की घोर देनकर यह क्यों कहा ? गायद 'म म' हाउस का दरवाजा फिर्ती प्रहस्य रिबाङ्को में दम्द होना। मैं दुपचाप बनी गड़ा गता। फिर कहा 'इस घोर घामो'न। घबानक मेरे दोस्त के कहा 'बनो।' घोर यह मेरी बिना प्रनीया सिधे ही मेरे हाउस में घुम गता घोर पीछे घाया की तरह मैं भी।

हँसी ही ली ३३

घहा हा हा हा ३३३

बीग विभिन्न घोर गुना घट्टहास।

दा तर- के घट्टहासों के मियला मे घट्टहास का एक बग घन्तगण पैदा हा मगा। मैं हाउस महम गया। यकर यह घोट हाउस है। मैंने घन्तगण घबलेणियों के महारे घन्ती इट्टि को रोड़ाया—दो उने घानम में घन्तगण नरह न बँच पर हास मियाते हुए, यह घट्टहास बघ्यार छोड रहे थे। एक घाम बिगारे हा बन्मा मयावे घोर बिना बीग का

मारी भी" कि मरुता मेरा एक मित्र बरबत ध्यान घंघ करणा है—
 "घरे तुम आई कर बाबे ?

"कन ।"

"सूचना भी नहीं की ।"

"सूचना देकर मैं तुम्ह परेवान करना मारी जाइता बा । तुम ती जानते ही हो कि मैं बार्बरम के घनुमार पर मे रवाना कभी नहीं हो सकना ।"

"बाबो ।"

"बर नहीं ।"

"बस भा बाबो वही नहीं मठ बुद्धो ।"

मेरा मित्र मुझे तीन घंटों तक विभिन्न दरारों में अपने निजी काम से घुमाना रहा । पाने डारते घोर बेडिय हमों में उमको प्रतीक्षा करते करत मैं बिलकुल बोर हो गया । इतना बोर की अस्थ मे मैंने उसे मस्ता कर कहा तुम नात घभीब हो घोर घभीब है तुम सोनों की मरुमान नबाबी ।

"घरे तुम पार बुरा मान गये । इस दिस्ती की लाइफ ही ऐसी है । एक्टव मैनेटिकल एक्मम बिजी । फिर काम न किया बाव तो बीना मुश्किल हो जाना है । बाबो तुम्ह ठंडा पानी पिनाई ।" मैंने अनिच्छा से पानी पिया ।

बानी का जितान धरम करते ही हमने अपने बापको कुछ धारबत समझ घोर कहा "सांभ हो गयी है मार ! बतौ तुम्हें घरी का मंड हाउन बिजला साई ।"

"दिस्ती का मंड हाउन ?" मेरी घोरों में प्रश्न नाथ बठा ।

"हाँ हिमुस्तान में अपने हय का धलय प्रयोग । जिस तरह कैदियों के जीवन को उन्नत बनाने के लिए सरकार ने सुधारवादी इतिहास अपनाया है और सुधार बिनों का निर्माण किया है वही तरह संस्कृत घोर बुद्धिजीवियों के लिए वहाँ के एक पूजीपति के एक मंड

बनकर आया तब मैंने उसकी आगबानी में झौंसे बिछा दी थी घोर मैं भगवान् की कृपा की तरह तब मैंने उनके स्वागत हेतु भागता था। लेकिन उसने मुझे ज्योंही देखा त्योंही एक घबरील भजनबी ना भाव बनाया। सबकुछ उस ठीक दृष्टि को देखते ही मैं सहम गया और मेरी धपनी तब से पल भर में सारे मेरे हाउस की दीवारों का धपन में भर गया।

बहु धारतीय एक भजनबी सा बोला "आप कब आये? बटिए? अत्यन्त फार्मिडिटी। मैं बैठ गया। धाम-मास देना" कई बुद्धिजीवी।

मेरेक नाटककार, पत्रकार, बलाकार चित्रकार बैठे थे।
"आरे मैंने सुना कम्बई मय थ?" मेरे धारतीय ने मौन मय किया।
"कुछ नाम-नाम बना 'पार। अब तुम्हें लिखने के बलाबा दुरती भी लक्ष्मी चाहिए बिना धरते स्वात्म्य के स्वत्म साहित्य नहीं लिखा जाता।"

मैं हूँ। कंठी मन्त्रिबिधि है मेरे इस धारतीय की। फिर उसने उन प्रत्येक को छोड़कर मेरा प्रत्येक से परिचय कराया। एक कामे टियन एषम का लैरक बोल पड़ा "मैं आपको पहले से ही जानता हूँ। आप से मिस भी जुटा हूँ।"

"मुझे याद नहीं पड़ता।"

"कलकत्ता में आरे उन बार मैं आपसे साथ एक बंगामी लक्ष्मी थी आप उन दिनों बंगाली बीबन पर एक उपन्यास लिख रहे थे।"

"मुझे याद नहीं।" मैंने निरपेक्षता से कहा।

मेरे धारतीय को दौरा पड़ गया "अरेय! बंगाली लक्ष्मी हाय हाय।" उसने मेरे पर जोर से आप मारी। मैंने उसे निहायत बहूदली समझा कर यहाँ की उपमिनि पर हठनी बोर की आप का कोई प्रभाव नहीं हुआ। सभी ने अपने अपने में समझ घोर धरत।
बात का तात्पर्य यहाँ बकरी नहीं। आपनों की बात में टिल निता? नहीं थी। उन्नी पत्रकार महोदय गम्भीरता से बामि "मैंने

हुए था। मेरे मित्र ने बताया दोनों एक ए हैं। सापटी करते हैं।
साधो मुझे विमाऊँ ?”

मैंने एक बार पूरे मंड हाउस की घोर देखा। घामीघान फर्नीचर
घाला घोटनं बनावट। घननेतुन पाती। मैं गहमा-गहमा सा घाने
बाद। मेरा शोक्त मुझे उगत पाम से गया। हज दोनों मित्र के पाम गड़े
हो गये। हमें देगते ही शेरबानी बासे मटाप्य मे कहा “घरे मियाँ
बरकत घात्र तुमने मजनुँ रंभी गवत वघों बना रगी है। मार मुज्जवत
के मारे हम हैं घौर परेमान तुम हो रहे हो ?”

मेरा शोक्त बरकत मूंगा हो गया। उमने मेरी घोर साबित्राय हट्टि
से देगा जैसे बह मुझे बट रहा है—वघों ? हैं न इनमें पाममरत ?

तभी शेरबानी फिर बोला “बैठ न मार।” रंभे उगे बोई नुमी बात
पाद हो घामी हो हम लख बइ बोला “सापटी शारीफ ?”

“ये मेरे शोक्त हैं मरेघ ?

“वहाँ कमी देगा नहीं। वघों जनाब हम अपह मे डरते छो नहीं
हो ? यह हम इस्टैब्लिशम लोगों का भंड हाउस है। बैट्रिण न ?

हम दोनों बैठ गये। बैट्रै ही बिसर बासो बामा मुबक पोपीबंद
“जमन चौककर बोला “मार क्या घेर बना है

मा रब इस पल की उघ्न ही कयामत तक

बो घाये हैं घात्र एक पल के त्रिण

घससम गीज कर बोला “ओमी मार न घेर सापटी को। ही
मियाँ बरकत उम मीधिया वा क्या हास-बाल है ?” उसमे घाघ मापी।
बरकत का हाव घोर से बाबा। जमन मार भीमार को जसाकर अपनी
घापटी की दुनिया में लो गया। मैं प्रल घरी हट्टि से दोनों को देखता
रहा। वे दोनों घत्यन्त घस्मील बातें करते रहे।

एकाएक किंती ने बरकत को पुकारा। हम दोनों उठे। दूसरी मज
पर गये। वहाँ एक मरघ भी परिचित था ऐमा परिचित त्रिसे मैं अपनी

बनकर आया तब मैंने उसकी आणवानी में धालें बिछा दी थी और मैं मनवान श्रीकृष्ण की तरह मैंने पाँच उनके स्वागत हेतु भागता था। लेकिन उमन मुझे क्योंकि देखा क्योंकि एक घड़ी में घबरायी सा भाव बनाया। तबमुख उस तैब दृष्टि को दृष्टते ही मैं सहम गया और मेरी घण्टी नजर ने पल भर में सारे बँड हावस की दीवारों को घपने में भर लिया।

बहु भारतीय एक घबरायी सा बोला "आप बह घाये? बटिए? घस्पत फामेलिटी। मैं बँठ गया। घाम-घात्र देखा" कई बुद्धिजीवी। तैबक नाटककार पत्रकार बनाकार बिबकार बँठे थे।

"घरे मैंने मुसा बम्बई गये थे? मेरे भारतीय ने मौन मय किया। "कुछ काम-काम बना" "घार। घब तुम्हें तिवने के घसाघा कुरती थी नदनी चाहिए बिना घम्बे स्वास्प्य के स्वस्प्य चाहिये नहीं तिसा जाता।

मैं हूँचत। बँधी मन-रिपति है मेरे हम भारतीय की। फिर उतने उत घमंग को छोड़कर मेरा घम्य बीरतों में परिचय कराया। एक कामे रियत घबल का तैबक बोण पड़ा मैं घापको पहले में ही जानता हूँ। घाप से मिस भी चुका हूँ।"

"मुझे घाद नहीं पड़ता।"

कनरता में घर उत बार में घापक माप एक बँधानी नदनी थी, घान उन रिताँ बँधानी बीबल पर एक उरग्याम तिय रहे थे।

"कुछ घाद नहीं।" मैंने निरघ्नता से कहा।

मेरे भारतीय को दौरा पड़ गया "अरे! बगानी नदनी हाय हाय।" उतने मेघ कर जोर में घाप मारो। मैंने उसे निरघ्नत बँटनी सभक पर घाँ की उररिपति कर दगनी जोर की घाप का को घमाघ नहीं हुआ। तभी थ घपने घपने में तगमय घोर घरत।

बाउ का तारतम्य घाँ जानी नहीं। घादनी की बाण में घिन मिला? नहीं जी। तभी पत्रकार घदोन्य घग्नीरता के बोण "कैके

घरने पक्ष में एक स्टोरी छापो है—जुग देह पर हठी बतियाँ। भाई, तेसक घबघब मे घाव की गानोग्गुली जीवन की बहुर ही गद्दी तारीर लींभी है।”

सेगक मनपडन्त गहमा उदम कर बोले “क्यों न मही साका होया घाघिर घबघब गुर मी तामोग्गुगी परम्परा का है। मो धारिस्टी मो स्टैण्ड एकरम कुता इतिवा जमनेबाला।”

“मुता है सन् ६० मे जमने एक लोहरी की सैतिवा बनाने के बाहर में बरबार कर दिया वा।

‘बरबार ? जानते हो बहु लकड़ी इतनी कंटाइस्त हो गयी है कि इतना जीवन के प्रति हटिकोग भी बस बया। घरबनामक हट्टि। जयता है कभी न कभी बहु घानी घणारमस्टी के पत्रर में घातमहत्या करेवी।”

“क्या घातमहत्या की रट मना रही है।” मेरा घारमीय जोर से बीबा घौर मेरी घोर जग्गु होटा बोला बतायो धार बम्ब में जो एक्का की।”

मै गुस्से में भर गया। म्पनाद में बोला ‘छोहरी-छोहरी छोहरी ? ‘आपो सक्क पर छोहरियों की बहार मिस पायबी।” फिर मैं कुछ हककर बोला ‘गुण-गुण की बावें करो। यह पूछो कि गुम बने की लामनिन करके भी रहे हो ?

बेचहुत घाभोचर मे बीब में घयरोन उत्पन्न किया “ए बेरा ठंडा पानी पिनायो।

“ताया साहब।”

मैंने बुद्धा “केबल ठंडा पानी ही पिघोये वा बुद्ध घौर।”

सबके बिहारे सलु भर में एक घनजानपन की तटस्थता से फिर बने। हट्टियाँ इबर-उबर बीहने लगीं। लकिन बचकार मे धार मिनार घकेस गुमवाकर कहा “बहु हमारा सपना हाउस है। इसके मासिक मे घपने सभी नीकरों को कह रहा है कि इन्हें कुछ नग करना,ये सभी ह्वारे हाउस के

जीरक चिन्तू है।' उसने जोर का क्रोध लिया।

ठंडा पानी घा गया। पीकर कुछ ठंडे हुए।

मेरा भारतीय मुरझाया सा बैठा रहा। तभी ठामियों की पड़गड़ग-हट हुई। दूसरी मेज के पास लुधी से उठम रहे प। पनाय मुहम्मद भली कह रहे थे "हिन्दी एक बड़बास संकलन है। नेशनल सर्वेक्षक न बन सकती है और न बनेगी।"

एक संघेजी हाँ अपने तैलहीन बालों में उमसियां टालकर बाया "हम मरते हम तक भी संघेजी को सपोर्ट करना नहीं छोड़ेंगे।

तभी धा गये एक ध्वं संकलक। वे संघेजी हाँ के पास गये। तपाक म बोले "आप टायर मूठ बनने के बाद भी हिन्दी का विरोध नहीं छोड़ेंगे। आपकी आत्मा संघेजारों के हज़ारों पालियामेंट और मिनिस्टर्स के रिमोविंग में घुमती रहेगी। आपको इसका भी हादिक दुम है कि आप चिन्तन में क्यों नहीं पंदा हुए? और आपका बाप एक संघेज क्यों नहीं हुआ?"

समाप्त।

"आप आप। बन्दूक मुस्ते में अपने हाठ बसा लिये।

'मैं आपको यह बठा देना चाहता हूँ कि हिन्दी राष्ट्र काया बन गयी है। संघेजी के मोह में नेहरू को प्रतिष्ठा को शिवा दिया। ममाकी मोहिया और हुपलानी की भीठ नेहरू सरकार के प्रति प्रति-बाग की प्रतिशिया नहीं?"

"संघेज संघेजी"।

"पर आप संघेज लोगों की मारिस्टी भी देखिए। वे आपकी तरह अपने ही संघेजी बाया और अपने आप के प्रति गहुराई करी करते। नमस्ते।"

जोर की हंसी। बाह-बाह बादीब जो। क्या मिन्तान पच पं है घाने? और बादीब भी बत्र नाभिनी की तरह बमते हमारे रूप में शामिल हो गये और घाते ही बीन "मुपने ये घानी बगनी रही। नया

प्रयोग' काग की गाने प्रयोग के नाम पर बबरा मर रहे हैं गार्हिय
 ने । फिर तुमने मेरी घोर देगा घोर हाथ बढ़ाने हुए कहा "तुम सब
 माने बिना । न मुबना घोर न मर ।" जब दोनों के हाथ मिलाने ।
 बाँधीर में भट ग बना दगे पुनो उम माने धेनन के प्रति बना गी
 दिना हल्ले ? का बर माना दगे ही दया दे गया । मैं बगना है कि ऐक
 ए मंग बह पना ही गी है ।

"माई गार्हियार के सर्वांगन जीवन से हम क्या बरो ?"

गाडीब बिा पटा क्यों नी परो । एक मिन मानिक रिमी
 दोकरी के साथ समाहार कर मिला है तो बर बुनाहगार बटमाना है ।
 बदि बर मत्रुरा क प्रति बिबनामपात घोर योगा करता है तो हम
 प्रामोशन ताड़ा करते उनही मँलिनना को चुनीनी देते हैं घोर हम
 घार्हियार कहाने माने प्राणी चाहे कितने ही धर्नतिक अनुबिन नाम
 करते राज है । मनु कोई म्याय नहीं ।"

"माई मैं तुमसे सहमत नहीं ।" मेरा धाल्पीय बोला ।

तुम क्यों सहमत होओगे । तुम भी तो बैठे ही हो । बेचारी मिय
 सन्ना को ? "तूने घोरत के पीछ घानी बीबी के संघ समानवीय ध्यद
 हार करने माने मानवीय संवेदना घोर पीडा घोर म्याय को क्यों
 स्वीकार करोगे ?"

बात बढ़ना के बावरे में बँपरी गयी ।

मुझे बिबनाम हो गया कि म्याड़े का धारम होया तो मैंने बात
 बबनी "छुना हो इन बातों को । मुनो माडीब बम्बई में जीवन बहुत
 धमका रहा । सधमुच हर मेतरु को बहाँ जाकर प्रवरप छुना चाहिए ।"

मेरा धाल्पीय मेरी बात को बिना मुने ही बोला "माडीब तुम
 हलामबादे का कभी मैं जान से मार दूंगा । घोर उसने हाथ का एंगस
 ऐसा क्रिया जैसे उसके हाथ में घुरा होता तो वह उसे तुरन्त थोक देता ।

मैंने तुरन्त कहा "बम्बई में मुझे एक धरपन्त हवीम ताडकी
 मिली ।"

एटेन्शन !

सब कृप धीर उनकी दृष्टि मुझ पर । लड़की ! 'मैंने देखा सबकी
 शब्द ने सबको सज्जे में ला दिया है धीर सबमुख मुझ पर भी पागलपन
 छा गया । मैं अपनी धमतीरना के साथ जो इस तरह कपसने लगा जिस
 तरह की होती है — 'हाँ गाँधीव मुझे एक लड़की मिली । सासर थी ।
 रंग थी । मैं धीर मेरा एक एक्टर दोस्त उसके पास मये । मेरे दास्त में
 सब लड़की को मेरे परिचय में यह कहा कि मैं एक प्राइयूठर हूँ धीर
 फ्रिस्म बनाने चाया हूँ । मारवाड़ी हूँ । मारवाड़ी इस मामले में बड़ा
 ही प्रभावशाली सज्ज रहता है । सब लड़की हमारे चक्कर में घा
 पपी । एक दिन हम उसे नार न बैठा कर स मये । समुद्र के किनारे
 की प्रेम लपरी में ।—मुझे मंटो की कहानी 'ठंडा गोस्त' पार घा गयी ।
 सब लड़की की बही स्थिति की संविन हम पर उस सरदार की बासी
 प्रतिक्रिया नहीं हुई । मुझे महमूस हुआ कि हम उस सरदार से भी मये
 भीठे हैं जो उस प्रमानवीय इत्य से बिदा लाग बन गया था धीर
 हम !

"बिधो मेरे राजा ।" मेरा धारमीय बोला "मुझे बम्बई से
 चलो । 'उसका साथ धीर हिमने लगा ।

धीर मेरे मन को चक्का ला लगा जैसे सबमुख में मैं घनामाग्य हो
 गया हूँ । इन मंड हाउस के बाठावरण से प्रभावित होकर मैं भी पागल
 सा प्रभाव करने लगा हूँ । यह प्रभाव ही हमारे धमतीर का साथ है । मैं
 साथ धीर न उगल हूँ इस मये में बाहर चला आया । मेरे साथ गाँधीव
 धारमीय धीर बनारस से । बाहर जनरल कम हो गया था । हम बन की
 बस में लड़े हा गये । बोड़ी देर में गाँधीव बोला "घोट । व्यर्थ ही देर
 कर दी । मुझे कम मुझ परमी घोषित जाना है ।"

मेरा धारमीय बोला 'साजठ फन। इन मंड हाउस पर, मेरी वेदी
 में अपनी निगाहें सेंबाइ की सरीदना ही भूम मया' 'पीप पजे का
 यही बैठा हूँ । धीर बहु परबालाप में डूब गया ।

घोर बन्दकार घबरी बची हुयेनी पर समेटे हुए घग्गवार को बेचनी से पीट रहा था ।

घोर मुझे महसूस हुआ कि अब हम सभी सामान्य प्राणी हैं । घोर को घग्गवारभूत मार्य है वह है—बेबी के लिए बापियाँ लाना घरनी घापिस जाना घोर किनी बिपैय काय के प्रति नैर जिम्मेदारी करने के बार बचनी से घग्गवार को बोटकर हुयेनी पर पीटना—

तस्वीर का दूसरा पहलू

०

जिन रात मेरे मन में यह विचार आया था उस रात बाहर जोर की बारिश के साथ-साथ सनसनाती हवा चल रही थी। सभी खिड़कियों पर पानी की बूँदें गिर गिर कर बह रही थीं जो भी घने कपों में जिससे मेरे मन में विचित्र उलझी हुई कुछ अनुभूतियाँ उत्पन्न हो रही थीं। वे अनुभूतियाँ मुझे अपने केन्द्र बिन्दु से प्रभाव कर देती थीं और सोड़ी देर के लिए मैं विमूढ़ की अवस्था उन खिड़कियों की ओर देखनी शुरू करती थी। मैं जाने कितनी देर तक मैं बँधी रही जब बारिश थमी। जब खिड़की के धागे साफ हुए और जब एकदम बायीं खिड़की के कोने में दुबका हुआ पत्तेर उड़ा मैं न जान गयी। जब ओकरानी के खिड़कियाँ खोलना शुरू किया तब मुझे उस पत्तेर का अमानक ध्यान आया। मैंने पूछा 'किन्हीं! वह खिड़की कहां गयी?' किन्हीं ने मेरी ओर प्रत्यक्ष भरी दृष्टि से देखा और धीरे धीरे होठों पर निश्चय रेखा बिखेरती हुई बोली "उड़ गयी बीबी जी घूरें!" उगने परने हाथ से बड़ा नाटकीय मनेत किया जिससे मुझे बरबन ईंसी आ गयी और वह भी मेरी पलक झटपट खुल गई।

एक सप्ताह बहुत सप्ताह का गया। मैं उभरे प्रत्यक्ष भरी दृष्टि से देखती रही देखती रही लेकिन महमा मेरे

बानों में किनारी के लक्ष्य फिर । गृहे 'उड़ गयी बीबी जी पुर' ।

उड़ गयी उड़ गयी ! मैंने मोथा बिटिया की तरह मुझे भी उड़ जाना चाहिए । यह सोने का रिजरा व्यर्थ है यह सोरपिदना व्यर्थ है । जीवन में सबसे पतला गुण आत्मा का गुण है । वह नहीं तो यह सब धातुम्बर है व्यर्थ है ।

प्रमा के मानस पटल पर घनीत ठहर गया—

बहु एक प्रसिद्ध नतकी है । उनका रूप-मोन्दर्य और गुण की गर्वित चर्चा है । सोय उसका नृत्य देखने हम तरह बने पाते हैं जिस तरह पहलू के लक्ष्य पर मधु-मण्डिता । उनमें मित्रों के लिए बड़े राय रसित तरलते हैं । सबकी उसके चरणों में है । फिर भी दिन में बुद्ध और व्यपत्ता क्यों ? क्यों नगता है कि यह सब व्यर्थ है व्यर्थ ! उनका सामन बिभ्र' का बेहतर भुम गया । बिभ्र एक लक्षण-पुत्र ! उसे दिन से जाहना था । उसने जामे मित्रों की इतनी बार कोटिया की थी । पर उजरी आत्मि कुटिया की मे जों पर मे बुझने नहीं दिया था ।

'बीबी बी यह बिभ्रकार आपसे घंट करना पाहता है — एक मुबह उसकी मोरपानी किनारी के एक ठल-बिभ्र उसके सामने रगा । वह बिभ्र ईना हुआ था । उसने अनिच्छा से जमे उखाड़ा । वह हीराण रह गयी । पूँवट के धरनुंठन से जयका बिभ्र ! जामे उस बिभ्रकार को बुलाया बिठाया आप विमावी और बुद्ध 'आपने मेरा यह बिभ्र बनाया है ?'

'बी ।'

"मुझसे बिलकुल बिभ्ररीत ।"

'बी गारी का बरम लक्ष्य तो वह है कि वह दुस्तर बनकर समु रास जाए, मैं बनकर अपने जीवन की सार्थकता प्राप्त करे और अपने दुर्लक्षार को आसोबित करे । आप नर्तकी बनकर अपने अनुपम रूप से केवल मन दम्पटा कर रही हैं । पीस ममता और सौम्यता को मुसाकर आप केवल बाह-बाह लुट रही हैं । जीवन और रूप जीवन के लिए लक्ष्य नहीं हैं । स्विट लक्ष्य है प्रेम और परिवार ।' उसने प्रेमा की ओर

मही देखा। नीची गर्दन किए हुए कइता ही रहा। 'ये एक महीने से धारका मृत्यु देखा रहा हूँ। आपके यहाँ लमे धरमीन बित्र देखता हूँ तो मन कई सबाकों से उडिग्न हो जाता है। कई बार मितन की बेष्टा की पर सज्जम नहीं हुया। आपक मोकर धीर आपकी मां न मुझे दुल्दार दिया जीत में कोई खुनमाया हुआ कृता हूँ। आपकी धानूम गही कि मैं एक सज्जपती बाप का बेटा हूँ। मां-बाप बचपन मे ही मर गये। बाबा का धादशबारी बेटा रमेव मेरी देख-रेल करता है। बड्ड नितान्त सप्यात्म बारी धीर बठोर बह्यचर्म का पलापाती है। आपके पोस्टर उनी ने बल बाये थे। मुझे भी उसने मरुत हियापत दे रमी है कि मैं आप जही निर्भेज-बेसर्म धीर अरिभहीन मर्तकी के पाम भी न पटकुं। पर अपने को न कर सका। आपका स्यतिव्य धीर सौन्दर्य बध मेर मन पर छाठा ही गया धीर मैं आपसे मितने के लिए बर्चन हो उठा।"

"आप चाहते क्या हैं?" प्रेमा ने पूछा।

"सब-सब कइ हूँ।"

'हाँ'

उममे एव पन प्रेमा की ओर देखा फिर राम से गिर मुका मियो। फर्म की ओर देखता हुआ बोसा मैं आपसे पारी बरना चाहता हूँ।"

जैसे एक महम बहटा कर गिर पड़ा हो प्रेमा के दिल में ओर का बसाका हुआ। वह धवाक सी उसे देखती छी। उन कुछ भी बहते नहीं बना। मैकिन बिम नीची गर्दन झुगाए हुए बह रहा था मैं आपसे पारी करना चाहता हूँ। सब मैं आपके बिना नहीं रह सक्ता। इर यही हर पल मुझे धाग ही का रनाम धाता है। मैं आपकी कोई भी सक्तीक नहीं हुँ। मेर पाल मव कुछ है।"

सुबक की स्पष्ट धान ने प्रेमा क हृदय में सन्धन वेदा कर दिया। वह कुछ देर तक विचारती रही। उगने एक बार पगीदार की सप्ट पनी इष्टि स बित्र का गिर से पांर तक देखा धीर बीभी 'मेरा पनी देगा कोई दरादा नहीं। मैंने रग पर बनी गोबा नहीं है।"

“मोक्ष लीला” । यह तो सत्य ही है कि धारणी विन्दनी मरना ऐसी नहीं रहेगी । घायला यह स्वयं यह बचसता और यह कुण्ठी सदा एक ही नहीं रहेगी । एक न एक दिन यह सब रात हो जाएगा । मेरा प्यार तब भी बीजित रहेगा—इसी बहराई के साथ ।”

“घार धभी आ नरते हैं”—उसने बड़ी लहजता से कहा । ‘मुझे घायले पूरी हुमरती है । ऐसे प्रस्ताव लेकर मेरा पाल बट्ट में घाटे है । वे भी घायली तरह मुझ पर घोर वीरने बाने होते हैं । एक करोड़पति भी मुझसे विवाह करने को तैयार है पर मेरा धभी ऐसी कोई इरादा नहीं ।”

विश्र दूटा ना जाता थाया ।

प्रेमा के बनने के घायले उसकी परिचित बुनिया बीगी थी । उसने उसे एक निश्चय दिया और घायले बढ़ गई ।

उसके जाने के बाद प्रेमा के मन में उबल-गुबल मच गयी । ऐसा निरंतर निर्भीक व्यक्ति उसने पहले कभी नहीं देखा था । उसने उसकी बनायी तरवीर को देखा तबन्त गली-गली बुन्दूत । उसे बना-बना बना शला है उतन ? धीरे धीरे उसके मन में विश्र की तरवीर गहरी और गहरी होनी गई ।

उसकी माँ ने धाकर उगक घ्यात को संघ किया । वह चौक पड़ी । माँ ने कहा— ‘मन सम्पन्नमान घाय है । मुझे पता तरवीर से उनसे पाँच हजार रुपये माँवना समझी !”

लेकिन बढ़ सेठजी से एक पैसा भी नहीं माँग सकी । उसके मन पर तो विश्र छा रहा था ! लज रहा था विश्र की बातों की पूर्व धीरे-धीरे उसके मन पर पतों की तरह बम रही है । वह समझती सी रही । सेठजी ने क्या कहा उसे बरा भी माँसुम नहीं । वह जनकी ही मैं ही मिलाती रही । बीच-बीच में सेठजी भूमना भी पाठ के ‘क्या बात है प्रेमा ? धाव तुम घोसी-खोसी क्यों हो ? तब उसने हँसकर उनके प्रश्न को टाल दिया था । माँ से ठिकपायत की थी । माँ ने बुद्धि होकर पूछा— “घाव तुम्हें क्या हो क्या घोकरती ?”

“दुख नहीं।”

“क्याये मरि ?”

“नहीं।”

“क्यों ?”

“मेरे पास बहुत है।

“अतिना क्या है उससे भी बड़ी अतिना है। ए छोकरा। मेरे कान उबाल-उबाल गुनने के धारी नहीं हैं। मैं अपने दुःख की ठामील चाहती हूँ। कान बोलकर गुन से। कम से ऐसी कोई शिकायत नहीं होगी।”

प्रेमा ने कोई उत्तर नहीं दिया। न जाने क्यों धाम उसकी धाँगे बीबी हो गयी। उसकी इच्छा हुई कि वह फफक-फफक कर रोये। धामने धामको पीसा से नुच सठाए। वह चिट्ठेकर बोलो। मेरी ठबीयत सराब है। मैं सेठबी को नहीं रिखा सकती।” माँ स्तब्ध सी उसे निहा रती रही। समने मन ही मन कहा “क्या ही क्या है इस छोकरा को ? वह उस समय मान्य रही। जब प्रेमा भीतर जाने लगी तब उससे बोली “मह अकामी जाने के बाद फिर नहीं धाएगी समकी !”

प्रेमा धामने बिस्तरे पर निद्रान पड़ गयी। समने मोबा—“अकामी बार-बार नहीं धाएगी। तब विप्र” “हाँ विप्र ने ही तो मेरे धन्तर में हसबल मचा सी है। उमे फिर विप्र माद धामे समा। तलने उमका बनाया हुआ विप्र देया। नीके निरता पा—‘दुम्दन’। वह उमे देगती रही। फिर बड़ी धोर धियेटर धामे की संघारी करने लगी।

बाहर निकलते ही उसे बुझिया की धिलधिलमाह सुबायी सी। वह भीक पड़ी। बुझिया ने टेरी धाले करके धपना धाबल उमक धामे धमा दिया। उतने एक कबली हात सी। बुझिया सबा की तरह धबूक हँसी हँसती हुई धाँपड़े में लगी गयी। उमक निवाह का धापन धात्रधान प्रमा के धात्रिधि ही ने। प्रेमा ने माँ ने पूछा “माँ वह बुझिया बीन है ? यह मुझे इस तरह पुर-पुर कर क्यों देगती है ? मुझे हकने कभी-कभी दर

'सोच सीजिए । यह तो सत्य ही है कि घायली शिन्दगी क्या ठेकी नहीं रहेगी । धारण यह रूप यह संजतता धीरे यह कुन्ती सरा एक ही नहीं रहेगी । एक न एक दिन यह सब चरम हो जाएगी । मेरा प्यार सब भी बीजित रहेगा—इसी बहुराई के साथ ।”

“घात घभी जा सकते हैं”—उसने बड़ी सहजता न कहा । ‘मुझे घायल पुष्टि हुआदरी है । ऐसे प्रस्ताव लेकर मेरे पास बहुत से घाते हैं । वे भी घायली तरह सुन्दर धीरे पंने बाण होते हैं । एक करोड़पति भी मुझसे विवाह करने को तैयार है पर मेरा धभी ऐसी कोई इरादा नहीं ।

विश्र दूटा सा जला घायल ।

ब्रजा के बंगने के घागे उमरी परिचित बुझिया बँटी थी । उसने उसे एक सिक्का दिया धीरे घाम ब- ग- र् ।

उसके जाने के बाद प्रया के मन में उबल-बुलल मच गयी । ऐसा निरर निर्भीक व्यक्ति उसने पहले कभी नहीं देखा था । उसने उमकी बनायी तरबीर का देगा एकरम मजी-मजायी बुझन । उसे क्या-क्या बना जाला है उधन ? धीरे धीरे उगक मन में विश्र की तरबीर दहरी धीरे महरी होती गई ।

उमकी माँ ने घाकर उगक ध्यान को भंग दिया । वह चौक पड़ी । माँ ने कहा—‘अ- सम्पत्तमान घाए है । तुमो जरा तरबीर से उनसे चौक हजार शाने मौजना समझी !”

लेकिन वह सेठजी से एक पंता भी नहीं माँप सकी । उसके मच पर तो विश्र छा रहा था । मन रहा था विश्र की बातों की धुँप धीरे-धीरे उसके मन पर पतों की तरह बम रही है । वह धनबनी सी रही । सेठजी ने क्या कहा उसे जरा भी माधुम नहीं । वह धनकी हँ में हँ मिलाती रही । बीच-बीच में सेठजी भुँझना भी जाठ के क्या बात है प्रेया ? घात तुम सोमी-मोवी क्यों हो ? तब उसने हँसकर उगक प्ररन को टाम दिया था । माँ से शिकायत की थी । माँ ने बुरा होकर बुला—
“घात तुझे क्या हो क्या धोकरती ?”

"तुम नहीं।"

"दरसे मयि?"

"नहीं।"

"क्यों?"

"मेरे पास बहुत है।"

"कितना क्या है, उससे भी बड़ा कितना है।"

कम सवाल-जवाब सुनने के धारी नहीं है। काल खोलकर मुन के। यह उतरी नहीं होती।"

प्रेमा ने कोई उत्तर नहीं दिया। प्रेमो ही पपी। उसकी इच्छा हुई कि वह पापनी कोड़ा के मूष मगाए। वह बघार है। मैं सुनरी को नहीं रिखा सकती रही रही। उसने जब ही मन कहा वह उस समय वास्तु रही। जब प्रेमा यह कहानी नाम के बाद फिर नहीं

प्रेमा अपने कितारे पर निदान बार-बार नहीं पाती। तब फिर

हलकल मया ही है। उसे फिर बराना हुआ फिर देना। नीचे

उ। फिर उठी घोर विपतर बने

क्या निरुपते ही उसे बुधि

की गई। बुधिया ने देरी पाके

दि। काने लक बरानी धान ही

हिसा है उतरी से कमी मपी।

के ली है। प्रेमा ने

मुद इन गद बु-बुर कर

1
2
3
4
5
6
7
8
9
10
11
12
13
14
15
16
17
18
19
20
21
22
23
24
25
26
27
28
29
30
31
32
33
34
35
36
37
38
39
40
41
42
43
44
45
46
47
48
49
50
51
52
53
54
55
56
57
58
59
60
61
62
63
64
65
66
67
68
69
70
71
72
73
74
75
76
77
78
79
80
81
82
83
84
85
86
87
88
89
90
91
92
93
94
95
96
97
98
99
100

समता है।”

“पगली है। भिगारिन है। बैकार बन डरो।”

तैलिन उसे मक्का की तरह बुझिया की हंसी बरेमान करती रही।
बिग्र ने रिठनी लड़कना से कहा था—मैं धापने पायी करना चाहता
हूँ।

उस रात वह गट्टी नींद न ली पायो। मुबह फिर बिग्र धाया।
उसने धापने प्ररन का उत्तर आहा “धारने क्या गोबा।

किग पर ?

“गारी के लिए।”

वह हँसी—कृमंत ही नहीं मिली।”

धक भूट क्यों बोलती है ?” उसने लगाफ से कहा। ‘धापन बकर
मेरे बारे में सोचा है। न मोबा होगा तो मुझे धापकी नौकरानी सम्मान
से भीतर न जान देती।

प्रेमा के गालों पर लज्जा की रेगार्से दोड़ नहीं। वह निरहृदय इतर
उतर दीपने लगी।

‘धाव धापकी नौकरानी के हीठों पर भी धजीब मुस्ताग थी। मैं
झेंप क्या। वह बड़ी खंजम है।” फिर बिग्र उगली कसा की प्रसंगा
करता रहा। बोला “मैं इन्जीनियर नहीं बनना चाहता था परन्तु पिताजी
की अन्तिम इच्छा यही थी इसलिए कर रहा हूँ। मैंने बिगकारी धपना
मिब लौक बना लिया है। धापर तुम्हारे सम्पर्क से मैं धपनी कना को
मुगदित कर सकूँ।”

‘धाप जकरट से क्यादा सोच रहे हैं। मुझे ‘बरमसस’ धौर
वह एकाएक चुप हो गयी। बिग्र उठने लगा। प्रमा न कहा “धाप मुझे
धाव धाम को बकर मिलें।”

धाम लौ के बोलों धूमने मये। पहली बार प्रेमा की माँ का माया
उगका। वह सैठ सम्पत्तनात के होठे हुए किसी को भी धपन पर मैं नहीं
धावें देवी। वह उस समय बाहर का भूट पीकर रह गयी। वे दोनों

सागर के किनारे एकान्त में बड़ी देर तक बातें करते रहे। एकाएक प्रेमा ने पूछा "बिन्दु बह बुद्धिया कौन है ?"

"बह भी एक दिन तुम्हारी तरह अधिभरो थी। सागर इसी संभव में उसकी अपनी जबानी जसी यही शक्ति समाप्त हो गयी। पीछे कोई नहीं रहा। रूप-बीजन क लौंभी बने। रोप रह गये—य बुद्धि तुम्हारे घोर पीड़ाएँ। उस समय उसने भी नहीं सोचा था कि कभी मरा सब कुछ जाता जाएगा। प्रेमा जीवन दो अरम बिन्दुओं पर टिका है—दो विपरीत अरम बिन्दु। एक मुख का एक दुम का।"

प्रेमा बहुत उदात्त हो गयी। बह बोली हा नहीं। उसका जानों में बार-बार बुद्धिया की बह भेन्नरों हँसो मूँख उटती था। प्रेमा के सम्मुख मानों उस भेन्नरों हँसी का रहस्य भूम गया—रूपन की तरह नाक घोर स्पष्ट।

माँ ने पूछा "ताना घाएयी ?"

"नहीं"—बहकर बह सो गयी। उसने निरवय किया कि बह गिर मे ही घाटी करेयी।

"तू घाटी करेगी ? दिनान नहीं की ! मारते मारते तेरा बम निकाल दूँगी !" माँ ने शपथ की तरह मुछकर कहा।

"निरान के दम ! मारना है तो मरने मार है। मैं बिन्दु स घाटी कल्येयी घोर अरर कल्येयी।"

"बुप रह !" माँ ने उसके पाल पर चाँटा मारा फिर अधविधियत भी बह प्रेमा पर झट पनी घोर उस पाल्य कुल की तरह बोला। प्रेमा उसी हदना मे बोली—"मैं उमने घाटी कल्येयी अरर कल्येयी। तू मुझे रोवेगी तो मैं पुमिम की मरर कूँगी। तू मुझे घाटी मे नहीं रोक मरती कपी नहीं रोक कल्येयी।"

दिर तू बोकें मे घाटी कर मे। तगी तमन्ना पूरी हो जाएगी घोर बह दया भी नहीं करेगा। घरना दस्तान है नकर हमानी ही करेगा !"
"रेपा नहीं हो मरगा।"

सायर क बिनार एकान्त में बड़ी बेर तक बातें करत रहे । एकाएक प्रमा ने पूछा “बिन्न बह बुद्धिया कौन है ?

“बह भी एक दिन गुम्हारी तरह घमिननो थी । सायर हयो बयस में उल्लनी घपनी जबानी बनी घयी कलि समाप्त हो गयो । पीछे कोई नहीं रहा । कप-जीवन क सोपी बसे । दोष रह बसे—ये दुर्दिन दुत्कारें घोर पीड़ाएँ । उम समय उमने भी नहीं सोचा या कि कभी मरत सब कुछ जाता जाएगा । प्रेमा जीवन दो जरम बिन्दुओं पर टिका है—दो बिपरीत जरम बिन्दु । एन गुण का एक दुग वा ।”

प्रमा बहज उदास हो गयी । बह बोनी ही नहीं । उसक बातों में बार-बार बुद्धिया की बह भरमरी हुईसी सूँझ उठनी थी । प्रेमा के गम्भुज मातों उम भिरमरी हुईसी वा रहस्य गुम गया—दर्वन की तरह पाऊ घोर स्पष्ट ।

माँ ने पूछा “ताना घाएमी ?”

“नहीं”—बहकर बह सो ययी । उमने निरबय किया कि बह बिन्न स ही घारी करेगी ।

‘तू घारी करेगी ? दिनाल वहीं की ! मारते मारत तेरा दम निवान बूँदो !’ माँ ने बापन की तरह गुपकर कहा ।

“निवान दे दम ! मारना है तो घभी मार दे ! मैं बिन्न से घारी कसेँगी घोर उबर कसेँगी ।”

“कुप रह !” माँ ने उमके घान पर बाँटा बाटा फिर घर्षेविघ्रित थी बह प्रमा पर घपट पती घोर उम पापन कुल की तरह नोँचा । प्रेमा उगी हटना में बोनी—“मैं उमसे घारी कसेँगा उबर कसेँगी । तू मुझे रोनेनी तो मैं पुनिस की मदद सूँधी । तू मुझे घारी न नहीं रोव मारती कधी नहीं रोक मारती ।”

फिर तू बाँह में घारी कर से । तयी तमज्जा पूरी हो जाएगी घोर बह क्या भी नहीं करेगा । घनना दगाव है, कबक हनापी ही करेगा !”

“नोँका नहीं हो सवना ।”

“नहीं वह नामों का मालिक है । समाचार तो इस बरती पर बहुत है । तुमने किसी गरीब कलाकार को क्यों नहीं चुना ?”

“प्यार जिससे हुआ उसी को चुन लिया रमेग बाबू । मैं आपके नाँव पड़ती हूँ । मुझे इस बकाचीप से निबलने बीजिए । मुझे किसी की वह किसी के घर की साज धौर लक्ष्मी बनने बीजिए ।” प्रमा ने सच मुच रमेग के नाँव पकड़ लिए । उसकी धाँसे भर घायी थी ।

“तुम लक्ष्मी बेस्या धौर बाजाक धौरतों क्यों किसी के घर की साज नहीं बन सजती । तुम्हारा काम है—घर उजाड़ना धौर उबाह करना । बड़ी तुम करोगी । तुम बिप्र के जीवन से नहीं उसके बाप के सपनों के मेक रही हो उनके माई के घरमानों से बेन रही हो । धाज मैं उसका सपा भाई नहीं फिर भी उसके जीवन के लिए बड़े से बड़ा बलिदान है सकया है । यदि तुम चाहती हो कि हमारे घापन में किसी तरह की सारी न पड़े तो बिप्र का प्यान छोड़ बा । मुझे तुम जैसी धौरतों से लच्छ नकरत है नकरत ।”

“मेकिन”

“बचन हो कि तुम धाज से उमस नहीं मिलोपी । तुममें स्वाप की दित्तबी समता है मैं बेगना चाहता हूँ । प्रेम स्वाप से ही महान् बनता है कमपी ?

“मैं धाजको बचन देती हूँ कि मैं धाज से बिप्र से नहीं मिलूँगी पर धाजको भी मुझे एक बचन देना पड़ेगा कि धाज मुझसे बराबर मिलने रखे ।”

“मेकिन मैं ।

नीच बीजिए ।”

“सक्या मिलता रहूँगा ।

वह बना घापा । प्रमा बिस्तरे पर घोषों पदकर बुट-बुटकर रो पड़ी । बहुत देर तक रोती रही । उस उद गतती नीं घा लपी तो उस की माँ धाने होगे पर बुटित बग्यान बिनोनी हूँ बड़ी देर तक लसी

कोई हमें नारकीय जीवन स निकालने की भी चेष्टा करता है तो य बकी
 कोई बीमारों खड़ी कर देते हैं । कहते हैं तेरी बीसी चीजों प्यार को केवल
 बड़ी नाटक मममती है क्यों रमेघबी क्या मैं भूट कहती हूँ ? मैंने सच्चे
 हृदय न रमेघबी क भाई को प्यार किया था । मैं उनकी दुम्हम बनकर
 पूइस्वी बसाना चाहती थी । मैंने उनके साथ जीवन की स्वाभाविकता के
 कई तुनहर सपने देखे थे । इन्होंने उन सब पर तुपागपाठ कर दिया ।
 तब मैंने भी निरवय किया था कि इन्हें ऐसा सबक दूया कि ये तो क्या
 इनके जैसे हजारों मुपाएकों की चीजें लुप्त जाएंगी । मैंने इनसे केवल
 प्यार का नाटक मेना था । इन्हें जिन तरह चाहा उँगलियों पर मकाया ।
 इन्होंने मेरे पीछे जिजी की कुछ नहीं मममम । अपनी मारी जायदाद
 भी धीरे-धीरे मेरे नाम करत गये । परी मानकी मौ भी मेरे इस नाटक
 स युग थी । घायिर जोत मेरी ही हुई । मैं इनसे पूइती हूँ कि किस व्यक्ति
 से मैंने मक्का प्यार किया उनकी हासत क्या हो सकती है ? रमेघबी से
 मैंने केवल प्रेम का बोग किया है । मोह मैंने एक कप-तक कितनी मर्म-
 म्बक बेचनाएँ नहीं है । बिना मेरे प्यार में पामल से हा गये हैं । वह मेरे
 नाम पर दूबता है । मैंने सब कुछ सहा । यह कहकर वह रो पड़ी । उसने
 धींघुधों को पौइसे हुए रमेघ से कहा "जीबिए, अपनी जायदादके तारे
 नामकाग घोर खने जाइए । मुझे केवल घायक बोंग को मिटाना या ठाकि
 घाय यह जान में कि प्रइति के सहइ व व्यवस्थित जीवन जीने का
 लदी इम्मान को बराबर का हइ है ।"

रमेघ परपर हो गया । बिना की यमीना था गया । उसने दुबारा बिह
 पर हाय नहीं रगा । वह धंवरत प्रमा के लम्बुन बना गया । प्रमा ने
 उगे देगा और अपने प्रमा को । दोनों की धींकों में धींनु समये नहीं ।
 द्विती व पीछे में घायक अपनाी बिना की घायी प्रेमा में कर दी जाए ।
 बेर-मंत्र धूंरने मम । रमेघ का कही बता नहीं का ।

बा दृष्टा बिना दुःखत रण भिन्ना बा । उमकी इच्छा थी कि वह टीक
 बंगे ही गतने रहनेकी बंगे ही धर-धर करेगी । गब बुद्ध कर बुद्धने कर
 वह कदम को घोर बनी । रमेण धानी जोकाक में बहुत र्थक रहा बा ।
 सिद्ध धीरे धीरे धाने बढ़ा । उमने मन-नी-मन दोहराया 'नीबना घोर
 कमीवादन ताका भी धम्याय होना है । उमने धानी धर कर हाव रगा ।

लोभ प्रेमा के धरिणीय रूप को देखने में बन्ध दे । सिद्ध को धाने
 भी बुद्ध धर उग बुद्धधर को देखने के लिये टहर दयी । मन बा धाकोय
 मिट गया एक मन के लिए । फिर वह माध्याम दृष्टा धीरे धाने बढ़ा ।

प्रेमा केरी के ममीन पहुँच गयी थी । रमेण ने उमकी धार गृष्टा
 व दया । एक धीमी ली धावाक धायी—'बुद्ध भी हो मारी प्रजिहा को
 पून में विमाधर भी रमेण ने बढ़ा धीमी हीट पाया है ।

सिद्ध ने गोवा 'मैं धिन राग कर बुँगा । वह भीड़ को धीरगा दृष्टा
 बढ़ रहा बा । गाधर की तरह धनेक लहरें उठके कल्पिक को मय रही
 थी । अभी धरनाक प्रेमा ने पोचला की 'यह धारो नहीं होगी ।'

'क्या बहनी हो प्रेमा ? मुग्धाट दिमाध टीक है ?' रमेण ने काने
 म्बर में बुद्ध ।

विस्तृत"—प्रेमा ने प्रभु के मत्त की तरह धपने दोनों हाव उग
 कर कहा । 'मैं यह धारो नहीं बर्हनी बराधियो ! यह सब माटक का
 एक रोम बा । वह रमियाकी जो धात्र ही एक क्षण रहने बद्धधर्य धादनी
 धीर धारिक जीवन के हाकी के धीर हम धेँधी लरधियो को बासक
 कहकर उनसे दूर तक रहने के नारे मपाते के धात्र बुद्ध हम कीबद्ध के
 लिए धपना धर्षस्व विगर्जन कर बुके है । मैं इनसे बुद्धनी हूँ कि धर
 मेरे माध्याम धीर पून में कौन सा धन्धर धा मया है ? मैं बही हूँ जो
 धात्र से एक क्षण पहले थी । मैं इनसे बुद्धनी हूँ कि जो धीरत बनी भी
 किसी के धर की मात्र नहीं बन सकती वह धात्र इनकी बुद्धन पानी धीर
 धर्षाधिनी कैसे बन सकती है ? ये समात्र के धेँधेधर धीर मुधारक हम
 र्थनी विद्या माधियों के जीवन के उदार की बनी नहीं मोचते । मंयोपध

कोई हमें मारकीय जीवन से निकालने की भी चेष्टा करता है तो वे बड़ी कोई बीमारें बड़ी कर देते हैं। कहते हैं तेरी बीसों घोरतें प्यार को केवल बड़ी नाटक समझती हैं क्यों रमेराजी क्या मैं मूठ कइती हूँ ? मैंने सच्चे हृदय में रमेराजी के भाई को प्यार किया था। मैं उनकी दुःस्थता बनकर पृथ्वी बसाना चाहती थी। मैंने उनका साथ जीवन की स्वाभाविकता के कई मुनहरे सपने देते थे। इन्होंने उन्मत्त सव पर हुपारपात कर दिया। ठह मैंने भी निरक्षय किया था कि इन्हें ऐसा सबक दूँ कि ये तो क्या इनके जैसे हजारों मुबारकों की झालें तुल जाएँगी। मैंने इनसे केवल प्यार का नाटक खेला था। इन्हें जिस तरह चाहा उपासियों पर नवाया। इन्होंने मेरे पीछे किसी को कुछ नहीं समझा। अपनी सारी आयदाद भी धीरे-धीरे मेरे नाम करते गये। मेरी सानसी माँ भी मेरे इस नाटक से गुप्त थी। धामिर जीत मेरी ही हुई। मैं इनसे पूछती हूँ कि जिस व्यक्ति से मैंने सच्चा प्यार किया उसकी हालत क्या हो सकती है ? रमेराजी से मैंने केवल प्रेम का रोंग किया है। छोड़, मैंने एक बर्ष-एक मित्रनी समी-स्तक बेदनाएँ सही हैं। बिप्र मेरे प्यार में पागल हो गये हैं। वह मेरे नाम पर मूकता है। मैंने सब मूक सहा।" यह कहकर वह रो पड़ी। उसने धीमे-धीमे बोली कि रमेराजी सच्चा "श्रीगुरु, अपनी आयदादके सारे बाबजाव घोर करते आएँ। मुझे केवल आपके रोंग को मिटाना था ठाकि धार यह जान लें कि प्रकृति के सहज में व्यवस्थित जीवन जीने का सभी इच्छान्त को बराबर का हक है।"

रमेराजी पत्पर हो गया। बिप्र की पसीना धा गया। उसने बुधारा देव पर हाथ नहीं लगा। वह संभरत प्रेमा के सम्मुख खला गया। प्रेमा के उमे देगा और अपने प्रेमा को। दोनों की धालों में धीमे-धीमे समाये नहीं। इन्हीं में पीछ से धाराज समायी बिप्र की घाटी प्रेमा में कर दी जाए। वेर संभ मूकन गने। रमेराजी का कहीं बटा नहीं था।

एक मुस्कान एक जिन्दगी

तिजारत

मैं तिजारत हूँ। घाटि काब से मोय मेरा इयोग कर रहे हैं। घाटान प्रदान के रूप में, निवर्तों घोर वस्तुओं के रूप में घनेक तरीकों से घनेक रूप में। घोर कोई घने नहीं कोई संक्षिप्तता नहीं घोर कोई काब बर्बाद नहीं। हरएक में मुझे घपनी गुण-गुणिबा के लिए हर क्षण में आता। लेकिन घाट में दुगो हूँ। इस घर में घेरी एक बन्धी का निजारत निमा का रहा है। यह बारह साल की घबोध घोर घनौतिक बम्मा जिसके घेदने घर गुणिबों का सतन्द्र नहरा रहा है। जिसकी बड़ी-बड़ी घांतों में घीबन की लाज के घनुर घूटने लगे हैं। जिसकी बने-बने लीनों में घनामल उम्माद की गुणधू है। बल बम्मा की घनवी माँ घोर उनके बाव जिसकर बेचना चाहते हैं घाने निजारत करना चाहते हैं। बिलनी बड़ी बेरम्भायी है बिलना बड़ा दुनाह है, घर हमारें बेघ में लगे घोर-जुम्म व्वापतिमाँ लरेघान घनली घापी है।

यह घापवा नया महमान है। यह बारह साल की बम्मा की घपनी घर्षागिनी बनायेमा। सलली जम ४ के सयबब है। जमकी घांतों की बनरुती हुई बासला के सारे शीत बिर मये हैं। यह एक बिउप-ला लपठा है। उनके लीनों की घर्षी बुम्ब बयी है। इगका घीबन इससे घनब होकर इसकी मुतक परनी की उबाब संतान में बना गया है।

यह इस कन्या को बरेमा ।

तिजाराठ बुक । मेरी घालें मर घाटी है । तीन हजार में एक कन्या का तिजाराठ हो जाता है । मैं बोर से बीसती हूँ पिस्ताठी हूँ कि येस ऐसा दुखपयोप मत करो ऐ समाज घौर घम के ठेकेदारो । देखो इस तिजाराठ को देखो यह मामूम फूल फिस अस्ताद को खीपा या रहा है । घरे देखो न इसटे पंखुरियों से मुसाबी होंठों को जो घपनी मामूपियत की बबह से तुम लोपों से प्रापना भी नहीं कर सकते हैं । उसका माग आनुम के दरवाजे भी नहीं खटघटा सक्ता क्योंकि यह एक माटी की सबसे पबिन घौर घामोघ तस्बीर है । हम बहर घौर घाम्ये हैं ।

हृदन की अग्नि

मनों पावन ऋचाओं से सिग्दिन्त मुञ्जित है प्राहृतिषो सी वा । रही है । मेरे समस्त बुझापा घौर बचपन दुस्हा-जुदिन बने रहे हैं । घौरतें रंग-रबीले बटकरार घौर दमकते भ्रसगें बाल घौर मसये सिवारों बाने घोड़ने घोड़े ममल-गीत या रही है । मेरी इच्छा है गही है कि मैं बमककर इन सबको लीम जाऊ जो बुझ के माप एक तिलोरी को घौर रहे है । " मेदिन व पनुर-वतिष्ठ सोग मुझे बड़ी गुर्बा से मर्पादा में रक्त रहे है । मैं हवन की पबिन अग्नि घात्र पार को अभाव में घलमर्ष हूँ । सोता को घरने घलन-घांचल में मेबर उमकी मर्पादा को रथा पर घात्र में एतनी गतिहीन हो बयी हूँ कि एर घयोप बलिदा को नहीं बचा सकती । लो घेर भी पड़ ग्ये । बहकती हूँ मुनमुन परायी हो बयी । कोई मा रहा है—बाहुम घोड़ बनी ठेरा देग । मक यह घोड़ बयी । घपना घंदना घरनी घतिषो घौर घपना बचरन । दीया के फूल

यह बुझा बम तिलोरी की घौर घा रहा है । तिलोरी उम सिग्दिन्त भी देखनी है । हम बून मुहाप राठ के बाहर घौर गुनू शिारने बाने बून घात्र बिना एपरे के ही मुर्मा मये है । घरनी गुनू की हक कल्ले

करके उन्हें घसा कर बैठा है ।

दिपोरी का माथ छरीर मुझ में अब क्या था । जब वह बुरा सौमने भी गया था और जब किंगारी घासण म खान्नी दरमाकर उसे भियो बेटी सब बहु मादक प्रगङ्गायों क साथ न जान गया सोबती कि उमरु नदन प्रभुओं से भर घात घोर बहु बूटे की घार निरद्वन्द्व की बेटा करली । बुरा घाटियों में लोई हुई चम्पों में टकराती जमी बर्बादी करने लपटा घोर बहु लड़कर बहता "अम नहीं घाती बेगमी को हर है पति बीमार है और तुम्हें घटभिमिदा मून् रही है ।"

बहु संसार की घमरा की तरह मादक स्वर में बोली देखो घाटाघ में क्या मुस्कुरा रहा है उसकी खान्नी मरे प्रम घम में घनि जता रही है । हवा भी नम-नम म प्यार रग रही है ।"

ऐसी घाय है वो विह्वली म बैठ जा । पर दुम्पी को घोरसे सोवन का मेकर इन तरह हाव-भाव नहीं मखाती । खान्नी मबको घाती है बहुत क पति भी बूटे होते हैं पर तेरा नगरा तो 'फारा' पहार से ही प्रथम है ।"

उपमा साथ प्यार दुग के छोटे में मधार म दिमर लम्बा । बागता घोर सतवना बर्क की तरह टगो पड़ जाती । वह घदन माग्य को कोमनी हुई सो जाती ।

पर मैं जन्मार हूँ ।

मैं तिस पर मधार हो गया घोर घम उने घानि नहीं दिपोरी तो बहु मटक पादेरी । बहु राउ भर मो मगी पातो दिन को चैन नहीं पड़ता । उमरा हृदय रात-दिन भीम दरंभा बनता रहता है घोर सवरी घातों में उनके पर का बातावरण घानमय रहता है । उन बार-बार भ्रम होता है कि इन पर मैं घाय माने बानी है । उमरा घोर उनके बति का मयका छोटी-छोटी बाज हर हो जाता था ।

मैं उन्मार हूँ एक तरह का पान्दान !

दिनात्म वा प्रवेग

यै दिनात्म हँ ईते मेरे कई पर्यायवाची छम्ह हँ । मै तभी जित्ती घोरत के निर बर गुणोभित्त होली हँ अब बह घपने बरि के होये हए हूते से प्यार करे ।

प्यार !

थी पाणिब के लम्बों में यह बह घाप हँ कि ओ मा लदाये मा लये घोर न बुझाये न बुझे । यह घाप ठेज लट्ठों की तरह हमारी नग-नग में दौड़ने लगी हँ । इनके बग में होने के बार प्रेमी घोर प्रेमिका कृतपत्रनी बन जाते हैं । निरद, निर्भीक बन जाते हैं स्वतन्त्र हो जाते हैं । घापद घाप जानते होवे नजारा की गोनी नही बार बरके जानी की घोर राजरदान की बनगा घापी राग को "रामु का द्वार लटगटाती की घोर बह छिछोरी ।

"यह दबा सो ।" एक मीनी घाँसों घाने मुक्क पड़ोती में बड़ी विनम्रता से छिछोरी के हाथ में सीपी दे बी ।

"कुछ कम थी लाने हँ ।

"बोपहर को मा रूँवा ।" मुक्क बजा गया ।

छिछोरी का बनि कुछ घपिक्र बीमार हँ । लट्ठ कट्टेमा पाठ जाने मोहम्मै में जान की मुकाम करवा हँ बीड़ी बेचवा हँ । बेहूषा रंग हँ बर घाने जैसे राटि का सारा प्यार चुप ब लामोच होकर उठकी घाँसों में सो गया हँ । डूँगे की बन्दूवा बरघ भी बलन्द नहीं हँ बर बह घभी निरद हँ । दबा घोर पस नहीं घाये सो बह नर धरवा हँ घोर उसकी बुड़ी लमघाएँ मृत्यु का बड़ा भय खाती हँ । बह नरला नहीं चाहवा । उसकी सिखफटी हँ घान हए पकी बीने की कामला घोर प्रभु से विरायु की शार्बता करवा हँ ।

बोपहर हो गयी ।

कट्टेमा जल मेकर घा गया । उसने कम देने के लिए हाथ बढ़ाया । घाँसों के हाथ छु गये । रोमांच हो गया—छिछोरी के सारे बदन में ।

बसने भरपूर दृष्टि से कन्हैया की धीर देखा। तबसे टकरावीं।

“माफ़ करना।

क्यों ?

“आपके हाथ को मेरे हाथ में छू लिया न ?”

“कोई बात नहीं।”

बुढ़ा भीतर से बड़बड़ा उठा। उसका बड़बड़ाना कम धीर लौड़ी केन की। उसने क्या कहा वे दोनों नहीं सुन सक। कन्हैया ने तबभीतर स्वर में कहा “वे नाराज हो रहे हैं। शायद उन्हें मेरा यही धाला अच्छा नहीं लगता है।

‘न लगता है तो न लये मुझे अच्छा लगता है। आप धाम को बकर धाला। मैं आपको गीर बनाकर खिलाऊँगी। आज मेरे विवाह की सात नौ वर्षमाँठ है।’

बकर धालेगा।

यै उसम प्रवेद कर गयी। बुढ़ा भीतर से चीखा, “दिवसे इतक लडा रही है दिनाम ?”

मै हूँम पड़ी।

दिवोरी कन्हैया को बिदा करके भीतर गयी। खोर से पाँव पटक कर कहा “क्यों पोर मचा रता है। मेरा भी तो कूहे की तरह मुठर कूटर कर शा मये। क्या धय हय तन को भी शायोगे।

“धय की बार मुझे अच्छा होने दे। उम कन्हैया क बच्चे को शिन्दा बना पाऊँगा।”

दिवोरी ने पूणा न बुड़े को देता धीर बहु बाहर बसी गयी।

विद्रोह

मै विद्रोह हूँ। जब योगल धानी चरमसीमा पर पहुँच जाता है तब मेरा धारिर्भाव होता है।

दिवोरी में मेरा धारिर्भाव हो गया। बहु धय बुधेधाम धपने त्रेनी कन्हैया को धयने पर बुनाठी है धीर बहु धय के कूहे बहुरों में उमने

भाबुलगागुर्ल बापों बरनी है । उमरा बनि जगे रट्टना है कीटने की बमरी देना है बरोमी गोनी बो उबमाता है बर बा सिगी की बरबाह नी बरनी । उमने साह-साह बर टिया घागरा बगा एगी मे है कि घाग बुनबाग दो बूत रोटियां गा निया बर । घागरो बरि बोई जोड़ी नहीं बार्न मे घाग बरा मे लमकीउ बो निम वा ताह बना देने ।

बुहा उमरी बाग बो नी गुनता है । बर घोरेगुन मबागा है । टिगोपी तय घापर बहनी है मे बरहेवा बो नी लोड़ मबानी बह मेरा बमरी बीवन है । घोर घाग घो बाग गोनगर बुन भासिए कि बात्री निर तरु न घाने पावे यदि घा घरा तो मे यद्दी मे मरा के लिए बनी पाऊंवी ।

“कग जायेवी ? मे तेरा भीडा बरुड़कर बरु नहीं बर बुंवा ।

बहु रिबनिउ स्वर मे बराब देनी है “घाग मे इतनी ताबत घा जानी तो मुझे यह सब बरो करना पड़ता । बरो मे घागमे लमकीउा बरनी घायी है । घब नहीं महा जाना । यदि तेमा ही बीडन है तो ऐसे बीडन को मुरख छोड़ देना चाहिए । मेरिब मूळ घाबके बुझाये बर तरस घाता है । मे घागगे प्राप्तेना करनी है कि घाग मुझे मुग मे जीने बीडिए घोर घाने को भी । कम-मे-कम मे घापरनी देना तो करतो है ।”

“तेना नहीं करेमी तो जायेवी कहाँ ? बरर कतरार दिए है ।”

‘मुझे नहीं बरे घाग को ।’

ईनी तरह पर्या-पर्या ।

एक रात

“तू अब मरने को छोड़ेगी या नहीं ।”

“नहीं ।”

“मच्छी तरह लोब लिया ।”

“लोब लिया ।” किओपी के स्वर में हड़ता ।

“मे तेरी जान मे लुंवा ।”

"मेरी सीज़िए मगर रतना कम हो तो ? उसने सापरबाही में कहा और अपने काम में लग गयी ।

बुड़ा ठीक हो गया । सबसुब एक दिन उसने किगोरी के गिर पर लकड़ी का प्रहार कर दिया ।

मैने किगोरी की हृदय के समस्त शक्तियों को मजबूत । अपने मुझे धपता किया । माँसों से माँसू मरकर बह रसे स्वर में बोली "गुमने मुझे पीटा मेरी सेबाओं का यह बरसा दिया । का कम मैं तुम्हें छोड़कर उसके साथ बसी बाईसी तुम्हें जो करता है सो कर लो ।"

छुरी ने साथ न दिया

मैं छुरी हूँ । सोपहर की घुप में मेरी लपलपाठी धीम बहुत ही ममानक लपटी है । मैं बूड़े के हाथ में हूँ और बुड़ा अपने बाँध हाथों में किसी का बून करने के लिए उठावता हो रहा है ।

किगोरी घर से बाहर है । कम्बूया भी नहीं है । एकएक एक घाटमी यह लहर साकर बुड़ को देता है कि किगोरी और कम्बूया बाजार ल जा रहे हैं । बुड़ा वहाँ से लुखन की मति से भागता है । उसके गिर पर मून लबार है । उनके हाथ में मैं लपी हूँ । मोय बिमूड़ से भावते हुए बूड़े को देख रहे हैं । वह यकबड़ा रहा है । "मैं दितास की पान से मूपा मैंने बमबार दिर हूँ मैं मैं ।"

बह उन दोनों का साथ गया । किगोरी कम्बूया से बिपट गयी । बूड़े के मुझे संभामा । मैने अपनी माँसे बन्द कर लीं । उन माकूम पर चलने की मेरी इच्छा नहीं हूँ ।

बुड़ ने घुणा से हाँठ काटते हुए कहा "मैं मेरा लून की पाईगा रंसी ।"

ममानक किगोरी संभली । उसने बुड़ को बेठावनी दी "होगा की बाउ लपो ।"

पर उनल प्रहार किया । किगोरी ने गुस्से में एक पकवा दिया । बुड़ा लुखन बुड़क गया । मैं उसके पैर में इन लख बुल बनी जिन लख

मन्त्र का गरी हूँ । उमने उमें हाव बोले । शीघ्र बचाया । शायदा
 मोरे स्वर न बोली "ये प्रभु मेरे गारव को मोरणी उमर लदा
 देना । मैं तीन पाद तक तेरा बन लूँगी ।" वह थकाविलान्त हा लगी ।
 उमर हा । तदनमे मगे । धामिने गजग हो गयी । वह बुका पूर्ववत् बगह पर
 धारर गड़ी हो गयी । दटे की प्रतीला म ।

आगिर ब उमना दयी । आगर बिछी हुई बारी पर बेट दयी ।
 सभी उमे बगमा की घाट बुकायो बरो । वह मुग्ध लगी । उमके
 निराध भेहरे वह भासा की बमक जाग उठी । होठों पर बुकाव । उमने
 देगा । उमका सादका घा रग है । उमका साध भेदरा पकाने की
 बुंदो से विविध लव रग है । बग्ये बनीं मे तर हो गये हैं । बेदरा यमीं
 से सात घोर घागे दना-बकी-नी है ।

मां को देगठे ही तिसन में मयी ग्युति घा गयी । वह आगकर
 घाया घोर मां का बरल-नपमें बरद बाबा 'मां-मां' मेरी मोरणी लप
 बई है ।"

"लव मयी ।" मां बौद्ध-मी पड़ी घोर उमने घपने डेटे को घातियन
 मे भर मिया । वह बिबालित स्वर में बाली "घात्र देरा ननात्य घोर
 जीवन दोनों गधन हो पडे । डेटे ! मैंने इन तिन के लिए जपीरधी ठगरवा
 की थी । ताप में बमी घोर घाम बर बमी । क्या-नया बहू नहीं उठाये ?
 पर घात्र सब टीक हो पडा । सब बुध भिन गया । सब तो मैं तेरा
 ब्याह रबाऊँगी । एक सोरगुली-बोवली बहू साऊँगी । दो रितने घाये
 मी है ।

"अब देतो ब्याह-ब्याह-ब्याह ! घरी मां बहू तो बाद में ले
 घाना पहने पेट-पूजा तो करा दे ।"

"तू हाव-मुँह पो मैं बनी रागा बरोठठी हूँ ।

किन्तु रागा घाने लना । दूगरा कीर मेने के साप ही उमने बहा
 'मां यह ले तेरा रूपया । बुरा तो बड़ी लपी थी पर मुझ से बँठा खर्च
 नहीं हुमा ।"

“क्यों?”

“इसलिए कि तू एक-एक पैसा बड़ी मेहनत-मजदूरी में कमाती है। माँ आज तेरे सब कुछ दूर हो सके। आज से मैं तुझे कुछ भी करने नहीं दूँगा। पर”

“पर क्या? तू कुछ क्यों हो गया?”

“पर माँ मेरी बौद्धि यहाँ बही लगी है। हमें बीकानेर में बन्दपुर बनाना पड़ेगा।”

“बन्दपुर! नहीं बेग नहीं। हम इस गहर को छोड़कर नहीं नहीं जायेंगे। यह अपना गहर है। यहाँ हमारे दुख-दर्द को भोग घरनों की तरह बैठे बैठे हैं। बहाँ पराये लोग होंगे। पराये हमारी पीर को नहीं जान पायेंगे। सब दुकाएँ समाता पड़ेगा।”

“जब बौद्धि बरती है तब यह सब करना ही पड़ेगा।”

कपली एकदम उदास हो गयी। वह इस गहर को कैसे छोड़ सकती है? इस गहर में अपना आरिभूत घरान है। छट्ट मोह है। नहीं-नहीं वह इस गहर को नहीं छोड़ सकती। वह किमन को पगा मरती हुई बोनी “हम इस गहर को नहीं छोड़ सकते। बेटे! इस गहर के घरान पीर सब लोपों में तेरी माँ को सब आश्रय दिया या जब तेरी माँ एकदम समझाय थी उसका कोई नहीं था। कम-से-कम मैं तो इस गहर को नहीं छोड़ सकती।”

“अरे, धमी इस बात को छोड़। उतने बन्दुर कर दिया। समझे में हाथ पोंदना हुआ वह बोना “माँ धमी के कारण तेरे भिर में दर्द होने लगा है इसलिए मैं गोना हूँ।”

देतने-देतने किमन लरटि मरने लगा। लेकिन कपली को एक भी मरती नहीं आया। इस गहर को छोड़ने की चिन्ता उसे हजारों बिबूषों के दर्पण की बाड़ा देन मदी।

सभी बानी को धमी में फिर बदलों का घाट नुनार्ई बनी।

घाट के नाव गारी की टक-टक।

“बौन घाया होया इस कूर में ।” उगने घाने घान मे पुछा ।

घाट घोर मखरीक घा मयी नाप में नाटी की भी टक-टक ।

बहु उठी । घाट घोर पाव घा मयी । उगने बाहर बाँधकर देता ।

अप्रत्यागित कोई दीवार पकपड़ाट के बाब फिर बही हो ऐसा
बमारा हुआ बरनी के मन में । उगने एक बार उन दोनों घाण्डुर्षों को
द्विरे से देगा घोर बमक आरने उगने मड़ाक के गाब दरबाजा बन्द
कर दिया । उगनी साँव ठेक हो मयी घोर हृदय में मूझन-ना मच गया ।

बाहर मे टूटनी-भौंती घाबाज घामी “किनाक घोमो बहु घियाक
गोमो ।”

रूपी को महकूप हुआ कि उगना गुन बटन ठेक चलने गया है ।
बदि बट बुछ देर घोर राड़ी र्ही लो फिर बड़ेबी । घपेन हो बायेमी ।

गद्-गद्-गद् कूरी की घाराज ।

कचली पवन पेप-सी भीतर बली मयी । बाकर बहु इग लखू बीटी
मानो बहु कोई घोर हो घोर उठे बकड़ने के लिए बुक्तिग घा गनो हो ।
धल भर का लपटा बहुउ बुमह हो गया घोर इस बीच कपसी के यही
गोषा “ये शोनों यहाँ कती पहुँच मये ?”

“बहु दरबाजा घोमो ।” बहने बामी घाबाज घोर बही कती की
गद्-गद् । गद्-गद् बकूरी मयी । बहरी मीर में मस्त कितन घबकचा
कर उठ्य । बहु बलीने से धीम गया घा । उठनी साँघें साव भी घोर
बाल अस्त-म्यस्त । बहु लखकर दरबाजा घालने गया । तभी रूपी
माबती हुई लखी “दरबाजा मत घोमो दरबाजा मत गोमो ।” घोर
उठने कितन के “भोयम” लोमते हुए हाथों वर घपने हाब रत दिये ।
बहु बहुत बबवाई हुई भी घोर एक घबीब मय उठक भेदरे वट, उठनी
कैलती घौली में झा गया घा ।

“क्यों — कितन के कितन से पुछा ।

“बस तुम अटक मत घोमो ।”

“भेकित बसो” उगने मारारी के ताब घपने घन्टों पर जोर दिया ।

कपली निरंतर हो गई। कुछ नहीं बोली वह। उड़ हो गयी।

“बोवती क्यों नहीं। मैं क्यों नहीं बरबाबा खोम् ? क्या तुने कोई चोरी की या किसी का पता काटा है ?”

कपली संवसत वहीं से हट गयी। विमान में विचार जोत दिये। वो अनरक्षित व्यक्ति लड़े दे। एक मार्ग के सहारे खड़ा हुआ और हुआ प्रौढ़ जिसका मार बाल मन की तरह मथर दे। उनको पहली भुटियां जो कमी बहुत ही गहरी हो गयी थी। वह हुआ उम दस्त ही बोला ‘बेटा क्या हम भीतर या मकाने है ? बाहर बड़ी धूप है। उठ। आकाश धाय बरसा रहा है।”

“आइए।” वह दम्बाजे में हटा गया। उमन लपक कर वो बीरियां प्रलय प्रलय बिछायीं। उन्हें बैठने का अनुरोध किया। बपड़े में विनाई की हुई अनरदार वो पंथियां की जो तार की बनी हुई थी। वे दोनों घुमने लगे।

“यह मकान किसका है ?” बुड़े ने बड़े संयम स्वर में पूछा। उसकी बूझ अनुभवों की किमत बर कमी हुई थी।

विमान में सुरण मोबा कि हो न हो या दोनों कोई महती बाने है। ऐसे सहकी बाने जिसकी सहकी मां को लाग परमद मरी है बनी ऐसे प्रत्येक में भोग नहीं घुमते।

उमने राड़ राड़े ही कहा मेठ बध्नुत्पन्नी जी बा।

बुला फिर पंगु मानने लगा। प्रौढ़ व्यक्ति जिसकुम मामोउ वा। जैसे परपर की प्रतिमा। कभी कभी वह बन्धियों में उमने देग मना का उमके उमने की संनिमा में स्वयं जान पड़ जान पड़ रहा था कि ये न हो यह महकी का बाव है और यह हुआ गादर उगवा दाद। पर मां इन दोनों को देगाकर जना पहल बनों लगीं दो ? उमने इन बन्धुनों का हार बं बरके प्रमाद बनों दिया ? उम बर उम उमर लक्ष्मण से पाठे मने। कुछ एक विचारों की हलचल में गुजर गये।

“पानी पिनाघोने ?” बुड़े फिर बोल बर विवा।

“बन्दर बन्द ।” संकोच में सीधी शब्द करते विगन स्टडी में पानी धरने गया । वो विगन पानी पीने के बाद कुछ बहुत घायल दिगार्ड बड़ा । बोला “ठेरी माँ बर्ता है ?”

“भीतर ।”

“उसे बाहर बुला दो नो ।”

विगन माँ के पास गया । बायस था कर होता “माँ घाबरे कोई बात करना नहीं चाहती । बाँ बर्ता है कि बाहर गोप सूझ कर दया करके माँ में जाने जायें । पुराने माने रिशों को भूत घायल । सब कुछ अभी का नाम हो गया था ।

बुझा लक्ष्मण रूप विमावर बोला “नो माँ बुझा भी नाम नहीं हुआ । कुछ भी नहीं हुआ । सब दूट गवने है पर गूग का रिशता नहीं दूट सकता । पर अब जगमगर रहता है । पीड़ी दर पीड़ी रहता है ।

माँ लक्ष्मण उनके पास था गदी । विगन उसे देगकर घोषणा रह गया । दग बार बग बहुत उदासिन रूप रही थी । बोले विगन दू रहें बहू के कि हमारा घर में कोई रिशता नहीं है ।”

“बहू ! बुझा तड़प माँ गया ।

घर बन्दरी नाम सर्व हटाकर दूड़े क विमदुल नामने थी । बुझा उसे देगकर विदितिका उठा “येमा न बगो बहू क्या तु हमें माफ नहीं कर सकती । हमसे बड़ी भूल हो गयी थी ।”

“भूम । भूम नहीं घायली हुआ थी । भोग था । घायल बागध से कि इस बहू को छोड़कर हम एक धीर बहू से बाबेये धीर बबबी बार लय को दुर्द बहूज की सारी लयम पहले से लेंगे । धीर घायल बहू पाय सा सीधा साधा बेटा जो आज एक जाबिक इन्सान मा सपठा है उस दिन विदना ल्वाधी धीर भीच बन गया था विगन दिन उदमे घायल सामने मुझ पर यह आरोप सनाया था कि बहू पितात है । बहू बरिबरीन है ।”

विगन साठी रिशति सुरम्भ लयम्भ गया । ये दोनो घायलनुक दोन

बार इस तरह पूर कर देगा मानों वे दोनों बँट-जंटे बदल गये हों ।

बूढ़े ने जिसल को सम्बोधित करके कहा - "मैं तब दादा हूँ बेटा और यह तेरा बाप है ? क्या एक समझी को भी सुधार न जाय ?

जिसल विमुक्त हो गया । उस लगा कि उसका अलग ही उमरता हूँ भावनाओं के समझा गया पकड़ लिया है । वह कुछ कहना चाहता है पर कह नहीं सकता । क्या मधुसूक्त यह समझा दादा और यह इसका बाप है ? प्रश्न पर प्रश्न उसके मन को मकमोरने लगे ।

रूपनी बीच में ही बोल पड़ी - "यह मादान घाघरो इतनी भारी बात का उत्तर नहीं दे सकता । मैं उत्तर देती हूँ कि कुछ भूमें लगी होती हैं । जो पथम होती हैं । घाघरी इस घत्रम भूम का कोई प्रायश्चित्त नहीं । यह भूम त्रिमने मेरे विद्यने बीग बरसों की बेदरी से निग्मा है । त्रिमने मेरे सोने के तन और त्रमसों मेरे मन को दीमक का तरह पिजर करके मोम की तरह पलाया है उस भूम को मैं किस घाघार पर काफ़ कर सकती हूँ । जब मैं भूम को एक ही रातें पर सुधार लक्ष्मी हूँ अगर घाघ मेरे विद्यने बीग बरल मुझे बापम लौटा दें । क्या लौटा सकते हैं घाघ ? रूपनी की धारें चटका कर भर आयी ।

बूढ़ा बूढ़ा हो गया । शीघ्र ब्यक्ति घाघराओ को तरह निर मुधार निरलद बँटा रहा । जिसल के मन में केवल प्रश्न बुरा ठरक दा रह प ।

रूपनी ने घाघना मह घाघनी के पल्प में छुगा लिया । अभीम घटोर बेचना से उसकी लक्ष्मी पट पना । वह रोभी रही । मिगरी रही ।

दूरी हूँ मौन हवा घप रूपनी की निरुसियों पर संरम मनी थी । गूँटी पर रना हमा समझा पीरे पागे हिना ।

बूढ़े ने शिनीउ शिगतिन ररर में कहा - "हम बड़ पाया है । पर बी मन्नी को निराम कर हमने कभी भी मरवा गुन नहींपाया । गदा कोई न कोई बिगति हम पर मंदराओ रही । और घाघ हमारे पाप क्या ल्टी है ? सभी कुछ है । पर इस हरे बरे पर मे एक चुच ल्टी है । पुन दिना र्ध कम निरपम होना है । बसके दिना घाघकी वा मोच-रनावा रोभी रिबड

काठे हैं। विगत भी माँ ! जानूँ कि दुन्दुभी बटू लम्बी बीमारी के बाद एक बरस पढ़ाई बन बगी है। बटू पर चल हम तेरे नाँव पढ़ने हैं। तू जो हमें दण्ड देगी हम उसे भोगेंगे।”

मैं धानके साप नहीं बनूँगी। मेरा घोर घातना सम्बन्ध तुगी दिन पास हो गया जब पाप एक हठार दावों के बोले घेरे गुणक में धान समाकर जो धाने से घोर बाद में धानके क्षेत्र में मेरी बोग को बलवित्त बता कर दीप सम्बन्धों को भी गाय कर दिया था।”

“जो हो गया उनके तिल तू हमें जो बाँधे बटू है के कर सब तुम्हें पर बनना ही बड़गा।” घोर बूझा बरबासाण से पत्रिका लिखाकर बोला “होमदार सबसे बड़ी होती है। होनी के गामने बच्चे को नहीं बगती। बच्चा उसके नामसे निर्वास-निराणय है। बटू बुद्ध नहीं कर गबना। हागो राखा राम को बलबासभजा घोर नरयवादी हृदितकान को बाण्डान बनाया घोड़ी देर को नहीं बोगा।

एक धर्मस्य मीन धाया रहा।

रूपनी धाने धानको पूर्ण बरख करने को बण्डा कर रही थी। क्रिष्ण भी कुछ कहने के लिए धाने धानको प्ररित कर रहा था लेकिन वह कुछ कह नहीं पाया। वह मान रहा था कि माँ ने उग कभी भी कह सब नहीं बताया। वह सब यह बगानी धामी है कि घतवा पति कही परदेस बसा गया था घोर बहों उ वह पागल कभी नहीं लीटा। उसने यह भी बतलाया था कि उसरा सगुणम में कोई भी नहीं है। यह सब माँ ने क्यों छुराया ? धान उनके धानने का एक भूत बनकर राड़ी है। उसने माँ की घोर देखा। माँ का मुग दुख की बगनाघों से पिरा था। ऐसी बवनीय माँ को वह कुछ भी नहीं कह पायेगा।

पहली बार रूपनी के पति सामू ने धपना मीन बंध दिया। उसने कनधी से एक बार रूपनी को देखा घोर बाद में वह नजर धुनाए हुए बंधवत बोला ‘मैं भी लखे धना माँबता हूँ। बमक छेके लख पर

करो। धर्म तुम पर बसो। मेरे बाप के बुझापे पर क्या करो। यह तुम्हारे द्वारे आया है।

कपती के मानस-गठन पर अतीव ठौर क्या।

उठे पाप आया—

समय भीस बरस पहले।

वह बुझित बनी है। उसके हाथ मुझमें की मेंहरी से रहे हैं। वह अपने बुझे का जिज्ञासा अभी नजर से मुझ-मुझ कर देख रही है। वह सोचती है—'बिरा बुरहा चाक्याव ईसर है। गबर (गखपीर) माँ के बरठार (पति) ईसर भेसा।' वह बहुत प्रसन्न है। उसके पाँव खुली क मारे जमीन पर नहीं पड़ रहे हैं। उसे बार-बार महसूस होता है जैसे उसके पंख अथवा पंखे हैं और वह नीले-नीले आकाश में चीन-बिरिया की तरह घूम-घूम कर उड़ रही है। रात में सोचते हैं। इससे का साल कुरब निमान बुझन के मन को मोहन समता है। बुझन बवान है मतः मुझलाबा (मीना) भी साथ होने का निश्चय हो गया है। टीके की रात—मुझ परात। पूरा चाँद आकाश के बीचों-बीच अपनी सम्पूर्ण आभा में बसक रहा था। वह सहजे थोड़े और कीचसी में पड़ी बनी बंदी है। समझा सगीना निया लामू आता है। कितनी लाल उस दिन उनके दिन में एक साथ पाग पड़ती है और जब लामू उबर उबर की बातों के बाप उसे पूना है वह पत्थर की बन जाती है।

मुझ ही रंग बदलन हो जाता है।

उठते समूर और बाप में 'टीक' के दापने (खेन) की रकम को लेकर अगड़ा हो जाता है।

गदुर बलैजापय कइता है "कपती जो धारको एक हवार अपने देने ही बहने। पर धार अपने बाबदे म मुझ रहे हैं।"

"मैंने धारके को" बापदा नहीं किया।" उनका बाप निमाना मुझ आता है।

"दरना सहेर भूठ?"

जाते हैं। जिसकी भी माँ! जानूँ की दुखी बटू लम्बी बीवारी के बाद एक बरग बहूँ बल बगो है। बटू पर बल हम लो पाँच बड़ने है। गु जो हमें रण्य देवी हम उमे भोगये।”

मैं धारके साथ नहीं जानूँ। मेरा घोर धारका गन्धाय उगी निन नरम हो गया जब धार एक हजार रण्यों के पीछे घेर गूलाय में धार बगारर बगे धारके से धीर बाँ में धारके बैठे मे मंत्री बोग को बलदिल बला कर रण्य सम्बन्धों को भी नरम कर दिया था।”

“जो हो गया धारके लिए गु हम जो बने बटू दे दे पर धार मुझे बर बलना ही पड़ना। धीर बूझा परबालाय से परेन लिपारर बीमा “होमदार सबसे बड़ी होती है। होनी के नामने बन्दे की नहीं जाती। बन्दा उसके नामने निर्दम-निरणाय है। बटू गुल नहीं बर गबना। होनी राधा राम को बलबा बभवा धीर मायवारी हरिबन्धन को बाण्डाय बनाया घोड़ी देर को नहीं बासा।

एक घल्लय भीन छाया रहा।

रुपनी धारने धारको पूर्ण रबरप करने की बिरटा बर रही थी। जिसकी भी गुल बहने के लिए धारने धारको प्रेरित कर रहा था लेकिन बह गुल बटू नहीं पाया। बटू लोब रहा था कि जो मे उता कधी भी यह सब नहीं बलाया। बटू मया बह बगानी धावी है कि उताका बलि बही परदेय बना गया था धीर बहूँ से वह पाणम बनी नहीं लौटा। उतने यह भी बतलाया था कि उतारा उमुरान में कोर्द भी नहीं है। यह सब माँ मे क्यों छुताया? धार उनके धामने माँ एक बूट बनकर राड़ी है। उतने माँ की धोर देया। माँ का मुख बुल की घटनाओं से धिरा था। ऐसी दमनीय माँ की बह गुल भी नहीं बह पायेया।

पहली बार रुपनी के पति सानू ने धारना भीन भंग किया। उतने कमली के एक बार बलली को देता धीर बाद में बह नबर बुबाए हुए संभवत बोना में भी गुमसे धमा मानता हूँ। बसक धीने गुम पर लनाया था इतलिए गुम बटू भी मुझे बी। पर मेरे बाप को निराय मठ

“अब घात बोमो है ।”

बागावरण देगन के जहाँ जहाँ जा जाता है । गाँवों निरन घानो है—बोना घोर है । यमभीत दिरलो की तरह हो जाती है यमभी । ईश्वर में धारणासना करती है । प्रनाम बोमो है यमम गुण व मित ।

उगता समुर गाँव जमीन पर जोर में टोड़ कर बढ़ता है । बाराग जिना गाये-वीये हो सोन धायेरी ।”

“ब दम तरह कभी जा मानी ।”

बह बहन-बहन रो वानी है । बह बहन निरभायी है । घब क्या भेगा । हवा बढ़ो जो गन गाना घापा है । बाराग बागम जिना मुकगावा दिये सीट जाती है । इजार गाब मन में बलाए हुए कपनी घायम मोरनी की तरह जाती है । बाराग की घूम को देगने मयनी है । पोरी देर में बहाँ बीरानवी छा पानी है । घन बिना स्पृतिकों के गन जहाँ-जहाँ बड़े रहने है ।

कपनी भीतर के कपरे में घावर रोनी है । भाँ उगे टाँटो है । गिगनो रोनी है पूनी भागिन । बँगे पूरे भाग तेरर मेरे वेर ग जग्गी है । ठेरे बाराग उननी मूँग बा-बाबन बना मया । इज्जत भुम में मित पमी ।”

बुध रिज बीत घाने है ।

गङ्गागङ्ग करती बरकर राकर निर जाती है । उगे घन की बाग घाने लपती है । एक क्या घावर उगके घन घन में गया जाता है ।

पर में एक मयी हगपम उगान हो जाती है ।

बाप मजदूर हो जाता है । उसकी गगुराम उभावार भजता है । घाने घमधी की वीरित करने की घनसा रघनेबामा उगता समुर साध रनकार कर जाता है । बाप घपनी कुलना बेटी की बीरता है । बेबाटी बाप कपनी कसाईयो के हाथों पड़ जाती है । “साँब उसकी हँसी उगाता है । घाने देता है । हरिये हरिये करता है । घाबिर कपनी तम घा

पाती है। क्या करे ? मौन में न डाक पर घोर न वह पड़ी मिली ।
 पत्रि स मित्त का कोई साधन नहीं । तंग घा जाती है जिनगी में ।
 मरने कम पड़ती है ।

दूबा ! नीरव घोर घात । एक मारे कम दिनकर की कठोर महाम
 क बाद सोये पड़े है । वह उन्हें देखती है । इच्छा होती है—मर जाऊँ ।
 मर जाऊँ ? लेकिन सहसा वह मरने का विचार छोड़ बंती है । वह
 नहीं मरेगी । वह पापिन नहीं फिर वह क्यों करे मरे ? घोर वह
 निरहंश्य यात्री की तरह चल पड़ती है—अनजान रास्ते के अपरिचित
 सफर पर ।

घर घा जाती है । अपने नारीत्व-मतीत्व की रक्षा करती हुई वह
 जमी की जानि की एक बुनिया 'धम्मा' के पास परब्रिय पाती है । उस
 भी वह सही बात नहीं बताती है । केवल विपत्ता की मापी बताती है ।
 धाम पद्मा हम संसार में नहीं है पर अपनी जगती बड़ी इच्छा है । उसे
 देवी की तरह मानती घोर पूजती है । घर में वह घाटा वीमनी है
 मित्र-मन्त्राण पोमनी है । बूटे बर्तन ममनी है । हृदयियों में जात्र-पुत्राणे
 करती है घोर इन सबके बावजूद वह मदा अपने प्रीतम व लिए गोनी
 है । घोर एक दिन यह यह मनटूम सबर पाती है कि उनके प्राण-प्यारे
 ने इमरा ध्याह कर लिया है ।

धामा धम्मीम प्याम की तरह हो जाती है ।
 समय मूगे पत्तों की तरह उड़ता रहता है ।
 वह विमन की बग्ग देती है । पालनी-पोमनी है । पदात्री है घोर
 धाम वह मरवारी शौचरी में भी लय गया है ।
 इन बरसों में उमने न धरणा पढ़ता है घोर न इच्छा धामा है ।
 परदेती गिया की गोरही (बत्ती) की तरह वह मुर मुर तिकर हो गई
 है । उमरा मन विरह की घाम से जल गया है ।
 घोर धाम उमरा नमुर घोर पनि उने लेने धामे है ।
 नमुर के ध्यावमल बगनी को बिबोड़ा "मेरे पुत्रों की त

रगोषी बहू ! बच्चीग बीया जयीन है । मवान है । घोर कितन बहू घन्य प्रकृतिग घा छे है । एक घायनी बीग हमार बाने देने तैयार है । बहू बनो घाने पर ।" बूड़े की घायो में मोम माथ पर
"ये नहीं बर्नुषी ।"

इस बार बूड़ा बूछ बनोर ही दबा उसकी घायो बुझीनी बि को तरहू बनक पडी । बहू स्वर को मन्वा करणा हुआ बोला " कय हँकारि घण्टि नहीं होकी । भुन का प्रार्थित्य होजा ही है ।" बूड़ा बड़ी नाटकीयता से घायो में घायु तावर बोला "बनूर छेरे का है । बहू ही भू भोगा बा । यदि बहू बुझे बहू ही बजा देना घाय दतनी मजसया ही नहीं नहीं होती ?"

बनानी घाने सीभी घोर बूछ बनुर को जातबाबी समझ गई । प्रकृति तरहू मानून बा कि उगवा बनुर बहू जब नाटक मैल रहा । घब जब उसके घाने बरपे की राठ-दिन मैदुनत्र करके बनो बीगत मुली रहुकर उग बहा क्रिया घोर बजाया तिगाया तो बहू घाना जाने मना । कितना बूछ है । पूछा की तहूरे उसके मरिठप्य में त केम से घाने मनी घोर बसने स्पष्ट घन्तो में बहा मैने बजा कि घायो मेरा को दिदना नहीं है । घाय बीग हमार घायो का संघायको यहाँ तक नीब साया है ।

कि दि. घायो का मोम ! बहू दतनी घौछी बाण क्यों का हो ?

"घोषी का मन्वी ? बनुरनी घाने मुना होपा कि कितन बड़ा मया है । बी० ए० पड़ गया है । नीकरी भी मन्ने बाधी है, संकहते होंके कि सड़का बहा होनहार, तनी घाय नहीं-नहीं ऐ नहीं हो सक्या । ये घायके साथ नहीं बर्नुषी घोर न मेरा बेटा जावेना ।"

बूड़े ने बड़ी घायो से घाने पोने की मोर देखा । कितन से उठ बनुरे बार हुई घोर बसने घपनी दृष्टि इठ तरहू मुझानी बिघ व

उसकी समझ में कुछ भी न था रहा हो। लेकिन उसे यह जरा भी
 प्रशंसा न लय रहा था कि ये लोग उसकी माँ पर दबाव दें। वह चुपचाप
 बैठा हुआ इन दोनों की बातचीत सुनता रहा। देखते देखते उसकी माँ
 गम हो गयी और जलका बावा भी चुंघा-चुंघा हाँ चला। बात बहुत ही
 बहरीने बातचरण की चर्चना के साथ समाप्त हुई।

×

×

×

शाम को ही कपली ने कहा "किशन हम यह घर छोड़ेंगे।"
 'क्यों माँ ?'

"इसलिए कि तुम्हारा धारा बहुत लोभी है। बुट्ट भी है। दया का
 नाम भी नहीं है। हासाकि मुझे उसके बुझापे पर एहम घाता है लेकिन
 बेठा मैं सोचती हूँ कि इस पर क्या करना प्रभु की नाराज करना है।
 प्रायः बीसपट्टी बंदीपर का धन उन्हें फिर हमारी घोर शीश साया है।
 इससे पहले वे लोभी तुम्हें एक कुमटा की घोलाय कहते थे। ऐसे घाबरी
 की घपने पाशों का बण्ड मिलना ही चाहिए। माँ उत्साह से बोली
 "घोर हाँ जब वे यह भी इन्कार नहीं कर सकते कि तू उनका पोता
 नहीं है। घीर मैं तुम्हें एक ऐसे लच्छे घीर बड़े भाबरी के रूप में देखना
 चाहती हूँ जो इन बिरे हुए लोगों के सामने एक घारण है। इसलिए
 घाघो हम यहाँ से चलें। जब हम यहाँ नहीं रहेंगे। जहाँ रोटी बरी
 घपना पर। हमादी हर बीज नई घीर घपनी होगी।"

किशन ने देखा "माँ का येहण एक पबिच घामोड म दीण्ट ही
 क्या है उन घामोड में एक नादी का घोब घोर महम रोनों है।

रमोभी बह । एकबीग बीमा जमीन है । बरान है । धीर किबर के बट्ट प्रका प्रका तित । घा रहे है । एक घादभी बीग हवार राते हेने की तैवार है । बट्ट बनो घाने कर ।" बुं की घांती धे मोख नाथ उा ।

"धे मही चर्मुंभी ।"

इय बार बुं बुं बठोर हो गया उगनी घांते बुंभीनी बिन्नी की तरह बजक उठी । बह खर को मन्वा करना हुमा बोना, "बट्ट पय हूँतार् घण्टी मही होनी । भूज का प्रार्थिबन होगा ही है ।" धीर बुं बड़ी बाटहीरना से घांती में घांती सावर बोना "चमूर ठेरे बनि ना है । यह ही मूा बोना ना । यदि बह मुंभे बट्ट ही बना देगा तो घाक इनकी नमरवा ही मही मही होनी ?

गानी मान मोभी धीर बुं घनुर की बालबाभी ममक बई । उगे घण्टी तरह मातुम वा कि उनका मनुव यह गब नाक गेन रहा है । घब जब उतर घान बरभ को राज-रिन मेहनत करने बरनी बीमकट, भूनी रहकर उग बहा क्रिया धीर बड़ाया निखाया तो यह घनमापन जानने लवा । किठना बुं है । घण्टा की तहरे उनके बरिठक में तीव्र बेम गे ताने लकी धीर उतने रण्ट घण्टों म बड़ा "मैने बटा न कि घाने देरा को" रिना मही है । घाक बीग हवार रापी ना मोख घारको मही एक गीब साया है ।

"बि. बि. एवों का मोख । बट्ट इनकी घोठी बात क्यों करती हो ?"

"घोठी या लण्ठी ? घनुरकी घाने मुना होमा कि रिठग बड़ा हो गया है । बी ए० पड़ गया है । लीकरी भी सपने वाली है मोख कट्टे होंके कि सड़का बड़ा होनहार लकी घाप "मही-मही ऐमा मही हो सक्या । धे घाकके साब मही चर्मुंभी धीर न देरा बेटा ही बायेया ।

बुं ने बड़ी घाया से घपने बोले की घोर देया । किमन से उतरी मकटे बार हूँ धीर उतने घण्टी दृष्टि इय तरह बुंभीनी बिब तरह

उसकी समझ में कुछ भी न था रहा हो। लेकिन उसे यह ज्ञान भी पच्छा न लग रहा था कि य जोग उसकी माँ पर बकाब रहे। वह चुपचाप बठा हुआ इन दोनों की बातचीत सुनता रहा। देखते-देखते उसकी माँ बर्न हो बपी घोर उसका बाबा भी बुंधा-बुंधा हा उठा। बात बहुत ही बहूरीमे बाबाबरण की सर्वना के सामे समाप्त हुई।

×

×

×

साम को हो बपसो ने कहा "किसन हम यह बाहर छोड़ेंगे।" क्यों माँ ?"

"इसलिए कि तुम्हारा बाबा बहुत सोबी है। कुछ भी है। पपा का पाब भी नहीं है। हालांकि मुझे उसके बुबाप पर खूब धाता है लेकिन बेटा मैं सोचती हूँ कि इस पर क्या करना प्रमु को नापक करना है। पाब बीबरी बंतीपर का बन उन्हें फिर हमारी घोर बीब लाया है। इनमे पहले मे सोबी तुम्हें एक कुलटा की बीनाद कहते थे। ऐसे भारभी का धपने पापों का बण्ड मिलता ही चाहिए। माँ उसाहूँ छ सोबी "घोर ही सब के यह भी इन्कार नहीं कर सकते कि तु उनका पोता नहीं है। घोर मैं तुम्हें एक ऐसे घण्डे घोर बड़े घादमी क रूप मे देना चाहती हूँ जो इन दिने हुए लोगों के सामने एक घादता हो। इसलिए पापो हय यहाँ से बर्न। सब हय यहाँ बरो रहेंगे। बहाँ रोटी बहा घपना पर। हमारी हर बीब नई घोर घपनी होयो।"

किसन ने देगा "माँ का बहूय एक पबित्र घादोड म बीप्य हो गया है उन बाबोड में एक नाटी वा घोर घोर घहम् सोबी है।

- व समाप्त ॥